उपन्यास-रत्नमाला संख्या ३

समाधि

[संसार के सर्वश्रेष्ठ बारह उपन्यासों में से
एक—लार्ड लिटन के "लास्ट डेज़ आव
पाम्पियाई"—का मर्म्मानुवाद]

अनुवादक
श्रीयुत पं० गणेश पांडेय

प्रकाशक
साहित्य-मन्दिर, दारागंज, प्रयाग ।

प्रथम संस्करण } सं. १९८७ वि० { साधारण प्रति १)
विशेष संस्करण २)

प्रकाशक—
भगवतीप्रसाद बाजपेयी
संचालक, साहित्य-मन्दिर,
दारागंज, प्रयाग।

मुद्रक—
काव्यतीर्थ पं० विश्वम्भरनाथ बाजपेयी
ओंकार प्रेस, प्रयाग।

दो शब्द

प्रस्तुत उपन्यास संसार के प्रसिद्ध उपन्यासों में से एक है। इसके लेखक लार्डलिटन हैं, जो आंग्ल भाषा के एक बड़े औपन्यासिक माने जाते हैं। इस उपन्यास का प्लाट प्राचीन रोम के प्रसिद्ध पम्पियाई शहर की ध्वंस-लीला पर अवलम्बित है। आज पम्पियाई शहर का ध्वंसावशेष संसार के यात्रियों के लिए एक दर्शनीय वस्तु है। उसको देखकर दर्शक चकित हो जाते हैं और सैकड़ों वर्ष पहले लोग कितने सभ्य, कितने कलाविद कितने विलास-प्रिय थे, ये सभी बातें उन इमारतों और वस्तुओं से ज्ञात होती हैं, जो खोदकर निकाली गयी हैं। परन्तु सभी लोग न तो उन वस्तुओं को देख ही सकते हैं, न उनको यही ज्ञात है कि सभ्यता-भिमानी रोमनों का क्योंकर नाश हुआ। इस अमर लेखक ने उस संसार-प्रसिद्ध घटना का ऐसा सजीव, रमणीय चित्र खींचा है कि पढ़ते ही बनता है।

इसी संसार-प्रसिद्ध उपन्यास का मर्म्मानुवाद आज मैं हिन्दी-भाषा-भाषी जनता के समक्ष रखने की धृष्टता कर रहा हूँ। न तो मैं अँगरेज़ी भाषा का विद्वान हूँ, और न हिन्दी-लेखक ही। फिर भी जिन टूटे-फूटे शब्दों में यह ग्रंथ रक्खा गया है, उन्हें पढ़कर पाठक यह सहज ही अनुमान लगा लेंगे कि मूल पुस्तक कितनी सुन्दर होगी।

दारागंज
दीपावली, संवत् १९८७ वि०

—अनुवादक

समाप्ति

[१]

पम्पियाई नगर के दो भद्रपुरुष

"डायोमेड ! अच्छे हो न ? ग्लकास के घरपर तो आज ख़ूब चहल-पहल है। निमंत्रण तो मिला ही होगा"।

पम्पियाई नगर के लोगों की भीड़ से भरी हुई सड़क पर एक युवक ने दूसरे युवक से कहा। वह युवक ठिगने क़द का है। उसकी पोशाक बड़े आदमियों की सी है; उसमें तड़क-भड़क अधिक है।

डायोमेड ने उत्तर दिया,—नहीं क्लडियास ! आज की दावत में ग्लकास मुझे भूल गया है। मेरा निमंत्रण नहीं है। उसकी दावत सर्वत्र प्रसिद्ध है। उसने मुझे उस आनन्द से वञ्चित करके अच्छा नहीं किया।

डायोमेड की अवस्था ने यौवन की सीमा को पार करके भी प्रौढ़ता की सीमा में क़दम नहीं रक्खा है। उसकी देह स्थूल है।

"हाँ, यह तो ठीक है। ग्लकास की दावत में जितनी शराब खर्च होती है, वह मेरे हिसाब से कम जान पड़ती है। ग्लकास कहा करता है कि रात में अधिक चढ़ा लेने से सबेरे सिर घूमने लगता है। क्यों भाई, क्या यह युक्ति-संगत है!"

"नहीं भाई, तुमने उसका अभिप्राय नहीं समझा है। इसका कारण दूसरा ही है। मुझे तो ऐसा जान पड़ता है कि बाहर जितना ठाट-बाट है, भीतर वैसा नहीं है। बर्तन में कपूर न रहने पर भी उससे महक आती है।"

"इसी से तो उसके मत्थे हूँ। भाई, हम तो लक्ष्मी के बराती ठहरे। जब तक दो गिलास शराब की आशा रहेगी, तभी तक आत्मीयता रहेगी। फिर, इसके बाद, कौन किसको पूछता है?"

"मैंने सुना है कि ग्लकास जुवा खेलने में भी पक्का उस्ताद है।"

"सभी कामों में उस्ताद है।"

"क्लडियास, तुमने तो हमारे यहाँ अपने चरणों की धूल तक नहीं गिराई! मेरे गोदाम में नयी-पुरानी, बहुत तरह की, मूल्यवान चीजें हैं।"

"भाई, इसके लिए दुखी क्यों हो ? जिस दिन के लिए कहो, उसी दिन हाज़िर हो जाऊँ। यह तो घर की बात है।"

"निश्चय ही। तुम्हें इसी बीच में एक दिन हमारे घर में भोजन करना पड़ेगा। उस दिन अपने तालाब से मछलियाँ पकड़वा मँगाऊँगा। हाकिम पैनसा को भी उसी दिन निमंत्रित करूँगा।"

"नहीं भाई, हाकिम-हुक्काम की ज़रूरत नहीं; योंही अच्छा रहेगा। देर हो रही है; मैं हम्माम की तरफ़ जाता हूँ। तुम किस तरफ़ जाओगे ?"

"मैं हाकिम बहादुर से एक सरकारी काम से भेंट करूँगा। इसके बाद आइसिस के मन्दिर में जाऊँगा। वहाँ से लौटकर फिर यहाँ पर आऊँगा।"

डायोमेड चला गया। अलस भाव से जाते हुए क्लडियास एक बार डायोमेड की ओर फिरकर, देखकर, धीमेस्वर में कहने लगा—पाखण्डी !—धन के घमण्ड में चूर बहशी ! तुम निमंत्रण का लोभ दिखाकर अपने नीच वंश की बात को भुला देना चाहते हो। हम लोगों को तुम जैसा मूर्ख समझते हो, हम उतने मूर्ख नहीं है।

क्लडियास अपने मन में इस प्रकार कहता हुआ जाने लगा। सहसा गठे हुए शरीरवाले चार घोड़ों से संयोजित, एक सजी-सजाई गाड़ी की ओर नज़र पड़ने पर, क्लडियास

ठहर गया। उसे देखते ही उस गाड़ी का आरोही,कोच-वान को गाड़ी ठहराने के लिए आदेश देकर, गाड़ी के भीतर से मुँह बढ़ाकर, बोला—क्यों क्लुडियास, बाज़ी जीतने से रात में अच्छी तरह से नींद नहीं आई क्या?

आरोही युवक है। उसका कण्ठ-स्वर मीठा है। चेहरा खिला हुआ है, हाथ-पैर गठे हुए और सुन्दरियों के मनको मोहनेवाले हैं। उसके सुन्दर मुखड़े और सुगठित अवयव को देखते ही जान पड़ता है कि वह ग्रीक देश के किसी अच्छे ख़ानदान में पैदा हुआ है। उसकी पोशाक भी रोम की नहीं है; वह ग्रीक लोगों की तरह है। उसके शरीर में एक मूल्यवान, लालरंग का, अँगरखा है। उसके ऊपर, गले से लगी हुई, एक सुन्दर रेशमी चादर है। कन्धे के नीचे एक हीरा,मरकत-खचित सोने के बकलस् से, आबद्ध है। गले में एक सोने का हार है।

गाड़ी से उतरकर वह हँसते-हँसते जाकर क्लुडियास के गले से लिपट गया!

क्लुडियास बोला—भाई ग्लकास! कल रात को तुम इतना रुपया बाज़ी में हार गये; किन्तु तुम्हारे मुँह को देखने पर कुछ भी जान नहीं पड़ता। तुमको और मुझे, एक साथ खड़ा देखने पर, कोई नहीं कह सकेगा कि तुम हार गये हो और मैं जीता हूँ!

"भाई क्लुडियास ! रुपया तो हाथ का मैल है। उसके हानि-लाभ से मन को उदास करना बिलकुल मूर्खता है। भगवान ने जितने दिन तक भोग करने की शक्ति दी है, उतने दिन तक जीभरके आनन्द कर लो। उसके बाद, उम्र के साथ ही साथ, वह शक्ति भी जाती रहेगी। तब धर्म में चित्त लगाना होगा, और संयमी और जितेन्द्रिय होकर चलना होगा। अच्छा, आज रात को मेरे यहाँ भोजन करने आना। भूल न जाना।"

"ग्लकास का निमंत्रण क्या भूलने योग्य है ?"

"तुम इस समय कहाँ जाओगे ?"

"हम्माम की तरफ़ जाने के लिए घर से निकला हूँ। किन्तु हम्माम का दरवाज़ा खुलने में अब भी एक घण्टे की देर है।"

"अच्छा, तो गाड़ी को विदाकर मैं भी तुम्हारे साथ थोड़ी दूर तक टहल आता हूँ।"

ग्लकास, अपने प्यारे घोड़ों के शरीर को पुचकारता हुआ, कोचवान से बोला—गाड़ी घर ले जाओ। मैं ज़रा टहलने जाता हूँ।

कोचवान गाड़ी लेकर चला गया। दोनों मित्र, एक-दूसरे के गले में बाहें डालकर, हम्माम की ओर चल पड़े।

---

[२]

अन्धी मालिन

अनेक विषयों पर गप्प करते हुए दोनों मित्र सड़क से होकर चलने लगे। चलते-चलते वे लोग शहर के उस भाग में पहुँचे, जहाँ लोगों की भीड़-भाड़ अधिक थी। सड़क के दोनों बग़ल में, अनेक वस्तुओं से भरी हुई, दूकानों की क़तारें हैं। बीच-बीच में सुन्दर हवेलियाँ हैं, जो शिल्पकारों की रचना-चातुरी और चित्र-कुशलता का परिचय देती हैं। सड़क अनेक देश-देशान्तर से आये हुए विचित्र लोगों के हास-परिहास और कलरव से मुखरित है। उस के चौराहे पर फूली हुई हरी-भरी लता-कुञ्जें हैं। कहीं विचित्र, कारु-कार्य-खचित, अविरल गति से सलिल छिड़कनेवाले, सुन्दर फव्वारे हैं। स्थल-स्थल पर फूल बेंचनेवाली स्त्रियों के लिए संगमरमर की बनी वेदिकायें हैं। उनके ऊपर, तह के तह, नाना प्रकार के फूलों के गुच्छे और मालाएँ सज्जित हैं। सारांश यह कि विलासी लोगों के चित्त-विनोदार्थ जिन सामग्रियों की आवश्यकता होती है, उन्हें ढूँढ़ने के लिए पम्पियाई नगर की सड़क को छोड़कर अन्यत्र जाने की आवश्यकता नहीं।

ग्लकास एथेनियन है। वह ग्रीक-सभ्यता की कोमल गोदी में लड़कपन ही से लालित-पालित हुआ है। उसक

रग-रग, में ग्रीक रक्त प्रवाहित हो रहा है। जो असली वस्तु को पहन्चानता है, उसे नक़ली चीज़ क्योंकर लुभा सकती है? रोम की सभ्यता, रोम का शिल्प, रोम का साहित्य ग्लकास को बहुत नगण्य और तुच्छ जँचता है।

ग्लकास बोला—भाई क्लुडियास ! रोम की बात न चलाओ। रोम की मज़बूत पत्थर की दीवारों के बीच में पड़कर आमोद-प्रमोद की वस्तुएँ भी मानो अपनी कोमलता से हाथ धो बैठी हैं।

क्लुडियास बोला—जान पड़ता है, इसी से तुम बीच-बीच में रोम से भगकर सुन्दरी पम्पियाई के अंचल की ओट में आश्रय लेते हो।

ग्लकास बोला—दिल्लगी नहीं, सच्ची बात यही है।

इस प्रकार बातचीत करते हुए दोनों सखा एक फूल बेंचनेवाली की दूकान के पास पहुँचे। इस दूकान के पास बहुत लोग इकट्ठे हो गये थे। इस भीड़ में, एक षोड़शी, बाजे के स्वर में स्वर मिलाकर, गा रही थी और बीच-बीच में गाना बन्द कर, अपने हाथ के बनाये हुए पुष्प-गुच्छ अथवा फूलों की माला लेने के लिए ख़रीदारों का आह्वान कर रही थी। दर्शकों में भी, जिसकी जैसी ख़ुशी होती थी, वह पैसा-दुअन्नी अपने पाकेट से निकाल, अपने पसंद के मुताबिक़ चीज़ ख़रीद रहा था। कोई उसे योंही दान-

स्वरूप कुछ दे रहा था। बात यह थी कि वह वस्तुतः दया की पात्री थी। वह दोनों आँखों से अन्धी थी।

ग्लकास बोला—यह वही अन्धी मालिन है। इस बार जब से मैं पम्पियाई आया हूँ, तबसे इसे देखा तक नहीं था। आओ, ज़रा खड़े होकर इसका गाना तो सुन लिया जाय।

ग्लकास बोला—निडिया, मैं तुम्हारा यह वायलेट* का गुच्छा लेता हूँ।

मूठीभर एकन्नी-दुअन्नी उसकी झोली में डालकर ग्लकास फिर बोला—निडिया! तुम्हारा सुन्दर स्वर और भी मधुर हो गया है।

ग्लकास के गले की आवाज़ पाकर निडिया मानो कुछ चौंक उठी! सहसा उसके कपोल और ललाट में उसके हाथ में लिये हुए गुलाब की आभा फूट उठी। वह और भी मृदु स्वर में बोली—तो क्या तुम फिर पम्पियाई को आये हो?—फिर अपने मन ही मन कहने लगी—ग्लकास फिर वापस आगया!

ग्लकास बोला—हाँ निडिया, मैं आज कई दिन हुए, आया हूँ। निडिया, तुम हमारी ओर क्यों नहीं आती हो? मेरी फुलवारी निडिया के बिना श्रीहीन है।

* अँगरेज़ी पुष्प-विशेष।

निडिया ने हँस भर दिया, कुछ कहा नहीं। ग्लकास ने उस पुष्प-गुच्छ को अपने बटन के छेद में पिन्हाकर वहाँ से प्रस्थान किया।

जाते-जाते क्लडियास ने पूछा—तो यह मालिन तुम्हारी स्नेह-संगिनी है ?

"हाँ, यह अच्छा गाती है। इसे पसन्द करने का एक और भी कारण है। इसकी जन्म-भूमि थेसाली है, जो हम लोगों के पूज्य देवता की आवास-भूमि है।

"डाकिनी का देश !"

"सत्य है ! मेरी तो राय है कि रमणी-मात्र ही डाकिनी हैं। विशेषतः पम्पियाई के प्रत्येक दृश्य से मानो प्रेम फूटा पड़ता है ! न जाने क्यों, पम्पियाई की युवैतियों को देखते ही मेरा हृदय पुलकित हो जाता है।"

ठीक उसी समय, एक अवगुण्ठनवती सुन्दरी, उसी रास्ते से, आ रही थी। क्लडियास बोला—यह देखो, मेघ के बिना चाहे ही जल ! क्या तुम इस सुन्दरी को पहचानते हो ग्लकास, यह डायोमेड की कन्या—सुन्दरी जुलिया—है।

कुछ और पास आने पर क्लडियास उस रमणी का अभिवादन करके बोला—सुन्दरी जुलिया ! अच्छी तरह से हो न ?

जुलिया घूँघट को कुछ हटाकर, हँसती हुई, बोली—हाँ, एक तरह से अच्छी ही हूँ !

फिर ग्लकास की ओर एक अर्थपूर्ण तिर्छी दृष्टि डालकर जुलिया बोली—ग्लकास क्या आप एकबारगी अपने पुराने मित्रों को भूल गये हैं ?

ग्लकास बोला—सुन्दरी ! तुम्हारा यह मुखड़ा क्या भूलने योग्य है ?

"ग्लकास के साथ, बात-चीत में, भला कौन पार पा सकता है ?"

"पर जुलिया के समान सुन्दरी से बातचीत करने से तो गूँगे की भी ज़ुबान खुल सकती है।"

क्लडियास की ओर फिरकर जुलिया बोली—तो हुज़ूर का कब मेरे घर पर आना होगा ?

क्लडियास—मैं तो अभी से हाथ धोकर बैठा हुआ हूँ।

जुलिया ईषत् हास्य करके बोली—अच्छा तो कल ही।

क्लडियास हँसते-हँसते बोला—बहुत अच्छा।

ग्लकास ने भी अपनी मौन स्वीकृति दे दी। जुलिया फिर घूँघट से मुँह ढककर चल पड़ी। किन्तु उसकी तिर्छी दृष्टि अन्त तक ग्लकास के मुँह की ओर लगी ही रही।

जुलिया के चले जाने पर दोनों मित्र बातचीत करते हुए चले।

ग्लकास बोला—जुलिया बहुत सुन्दरी है, क्यों क्लडियास ?

"पिछले साल तुम लोगों में जैसा भाव देखा था, उससे तो मेरी यह धारणा बन गई थी कि बहुत जल्द तुमलोगों के विवाह में एक बड़ी दावत का निमंत्रण मिलेगा। किन्तु सच बात तो यह है कि इस साल तुममें कुछ परिवर्तन हो आया है।"

"सचमुच क्लडियास! पिछले वर्ष, प्रथम साक्षात् में, मैंने उसे एक अमूल्य रत्न समझ लिया था। किन्तु अब मैंने अपनी भूल समझ ली है। अब मैं स्पष्ट रूप से देख रहा हूँ कि मैंने जो सच्चा समझा था, वह बिल्कुल झूठा है।"

क्लडियास ने उत्तर दिया—सभी स्त्रियाँ हृदय-शून्य और झूठी होती हैं। फिर ब्याह के समय यदि कुछ ज्यादा रक़म हाथ लगे और सुन्दर स्त्री भी मिले, तो वास्तव में यही लाभ है।

दोनों मित्रों ने हम्माम के पास पहुँचकर देखा, दरवाज़ा खुलने में अब भी देरी है। वे रास्ते के बग़ल में, एक लता-मण्डप में जाकर, बैठ गये और बातचीत करने लगे।

ग्लकास बोला—क्लडियास, अच्छा सच-सच कहना, क्या तुमने कभी किसी सुन्दरी को प्यार किया है?

"बहुत सी—दो सौ—पाँच सौ।"

"इसका अर्थ यह है कि तुमने कभी किसी को प्यार

नहीं किया। वास्तव में प्रेम एक से होता है। हाँ, नक़ली प्रेम बहुतों से हो सकता है।"

क्लडियास ने उत्तर दिया—दिखाऊ प्रेम भी बिलकुल बुरा नहीं है।

ग्लकास—ठीक कहा। मैं तो प्रेम की छाया तक की पूजा करता हूँ।

"तो क्या सचमुच तुम किसी के प्रेम-पाश में नहीं पड़े हो? नहीं, क्या यह सब तुम्हारी चालाकी नहीं है? कवियों ने प्रेमियों के जो लक्षण कहे हैं, वे सब क्या तुम में घटित नहीं होते? अच्छा बोलो तो, तुम्हारी ख़ुराक पहले से कम हो गई या नहीं? थियेटर, गाना-बजाना, आमोद-प्रमोद सब अच्छा लगता है या नहीं? किसी प्रणयिनी का लक्ष्य करके दो-चार कविताएँ लिखी हैं या नहीं?"

"मैंने किसी को प्यार किया है या नहीं, यह मैं स्वयं ठीक-ठीक नहीं समझ सका हूँ। फिर मैं तुम्हें किस तरह समझाऊँ, क्लडियास?"

"मैं क्या कहूँ, तुम्हें किसने पागल बना दिया है? डायोमेड की कन्या—श्रीमती जुलिया........। सच बात तो यह है ग्लकास कि जुलिया भी तुम्हारे प्रेम में पागल हो रही है। जुलिया तुम्हारे अयोग्य नहीं है। वह अद्वितीय सुन्दरी है। इसके अतिरिक्त वह अपने पिता की अगाध सम्पत्ति की एक मात्र अधिकारिणी भी तो है।

"तुमने समझने में ग़लती की है क्लडियास ! डायोमेड की लड़की के यहाँ, दाम पर बिकने की, मेरी ज़रा भी अभिलाषा नहीं। जुलिया सुन्दरी है, यह मैं जानता हूँ। वह अच्छे कुल में पैदा नहीं हुई है, यह बात न जानने पर भी, पिछले वर्ष मैं उससे ब्याह करता या नहीं, कह नहीं सकता। किन्तु अब मेरा विचार बिलकुल बदल गया है। जुलिया सुन्दरी है, इसमें सन्देह नहीं। किन्तु शारीरिक सुन्दरता से बढ़कर स्त्रियों में एक और लुभाने वाला सौन्दर्य्य होता है। वह मानसिक सौन्दर्य्य है, सीधी-सादी भाषा में जिसे प्राण कहते हैं। जुलिया में सौन्दर्य्य है, किन्तु प्राण नहीं है।"

"तुम्हारे जैसा अकृतज्ञ पृथ्वी में और कोई नहीं है। जुलिया तुम्हारे प्रेम में पागल हो रही है। और क्या तुम्हारी वही दशा नहीं है ? ज़रा खुलकर बोलो तो, क्या वह वही सौभाग्यवती है, जिस पर ग्लकास की दृष्टि पड़ी है ?"

"प्यारे क्लडियास ! तुम्हें बतलाऊँगा। बतलाने ही के इरादे से मैंने आज उसका ज़िक्र छेड़ा है। क्लडियास ! आज से कई महीने पहले मैं नियापलिस घूमने गया था। वहाँ रहते समय, मैं प्रातःकाल और सायंकाल अपने गृह-देवता मिनर्वा के मन्दिर में, उपासना करने के लिए, जाया करता था। एक दिन, सन्ध्या समय, मैंने मन्दिर में प्रवेश करके देखा कि वह बिलकुल सूना है। उसके

पुरोहित तब भी नहीं आये थे। मैं एकान्त में बैठकर उपासना करने लगा। मुझे विश्वास था कि मुझे छोड़कर और दूसरा उपासक वा उपासिका उस समय मन्दिर में नहीं हैं। सहसा एक दीर्घनिश्वास के शब्द से मैंने चौंककर, पीछे फिरकर, देखा कि मेरे पीछे थोड़ी दूर पर बैठकर अकेली एक रमणी पूजा कर रही है। रमणी के मुँह पर घूँघट नहीं है। हम लोगों की चार आँखें मिलते ही, न जाने क्यों, मेरी रग-रग में बिजली सी दौड़ गई। मैं नही कह सकता कि किस प्रकार के आनन्द-रस से मेरा हृदय गद्-गद् हो गया!

क्लडियास! और कहाँ तक कहूँ, वैसा सुन्दर मुखड़ा मैंने जन्म भर में और कभी नहीं देखा था। विश्व में जहाँ भी सौन्दर्य्य के कण छिपे हुए थे, उन सबको बटोरकर विधाता ने इस अभूतपूर्व सुन्दरी को बनाया है। वह रमणी बर्फ जैसी उज्ज्वल थी। उसके नेत्रों के कोने में, मोती के समान, दो बूँद आँसू थे। न जाने कौनसी एक अज्ञात ईश्वरी शक्ति ने मुझ से कह दिया कि उस रमणी की तंत्री मेरे साथ, एक सुर में, बँधी हुई है। उद्दाम आशा के जादू में पड़कर, आत्म-विभोर हो, मैं, उन्मत्त की नाईं, रमणी के मुँह की ओर टकटकी लगाकर देखने लगा। मैंने शील-संकोच सभी छोड़कर उस रमणी से पूछा—भद्रे! क्या आप एथेनियन हैं?

एक अपरिचित के मुँह से यह प्रश्न सुनकर वह स्त्री कुछ चौंक पड़ी। उसके लज्जा-आरक्त कपोल पर खिले हुए गुलाब की आभा फूट उठी। घूँघट का एक कोना सरकाकर, मुँह को आधा ढककर, वह स्त्री बोली—हाँ, मेरे परलोकगत पुरुखों का चिताभस्म देव-नदी इलिसस के तट पर गड़ा हुआ है। मेरा जन्म नियापलिस में हुआ है। किन्तु एथेन्स के साथ मेरे पुरुखों की मोहिनी स्मृति ओत-प्रोत भाव से विजड़ित रही है।

मैं बोला—सुन्दरी! मैं भी एथेनियन हूँ। आओ, हम लोग एक ही साथ देवी मिनर्वा के चरणों में अपने हृदय की भक्ति-पुष्पाञ्जलि अर्पण करें।

इतने में पुरोहित आकर वेदीपर बैठ गया। उपासना आरम्भ हुई। क्लडियास, हम लोग पास ही खड़े होकर पुरोहित के उच्चारित मंत्र को एक स्वर से पढ़ने लगे। एक ही साथ जाकर हम लोगों ने भक्ति-पूर्वक देवी के जानू को स्पर्श किया, फिर देवी के चारों ओर परिक्रमा की। एकही साथ जाकर माता के रजत-धवल चरण में प्रणाम करके भक्ति-पूर्वक निर्म्माल्य की डाली को सिर पर धारण किया। न जाने किस अलङ्घनीय बन्धन से, एक ही प्राचीन सभ्यतावाले प्रदेश में जन्म लेकर, आज, नवीन सभ्यता के आलोक से दैदीप्यमान नियापलिस में आकर, दो स्त्री-पुरुष एक अज्ञात आकर्षण से मिलकर, एकीभूत हो जाने की

चेष्टा करने लगे! मेरे मन में ऐसा होने लगा कि वह रमणी मेरे जन्म-जन्मान्तर की परिचित है, वह मेरी बिलकुल आत्मीय है।

उपासना समाप्त होने पर हम लोग एक साथ धीरे-धीरे मन्दिर से बाहर हुए। रमणी का परिचय और उसका पता-ठिकाना पूछने की इच्छा हुई, किन्तु लज्जा ने बाधा डाली; मेरी आशा-लता के मूल मे कुठाराघात किया। मन्दिर की सीढ़ी पर एक युवक उसकी प्रतीक्षा कर रहा था। रमणी ने मन्दिर से बाहर हो, उस युवक के साथ, सड़क पर जनता के बीच प्रवेश किया। विदा होने के समय की उसकी प्रेम-पूर्ण तिर्छी दृष्टि, खिले हुए गुलाब की तरह उसका वह सुन्दर मुखड़ा, इन्द्र-धनुष के समान उसकी दोनों वंकिम भ्रूकुटि, पके हुए दाख के समान उसका सरस अधर, हंसों को लजानेवाला उसका सुवलित शुभ्र कण्ठ, ये सब, मानो उस दिन से सदा मेरी आँखों के सामने नाचा करते हैं। मैं जाग्रते हुए भी उस अक्षय अनन्त शोभा-वाली के ध्यान में विह्वल और विभोर होकर रहता हूँ। क्लडियास, क्या मेरी आशा सफल न होगी? मैं अपने हृदय-धन उस रमणी-रत्न को क्या अपने हृदय से न लगा सकूँगा?

"तुम बिलकुल गँवार हो। तुम उस रमणी के पीछे-पीछे क्यों नहीं गये?"

"क्लडियास! मैं सचमुच गँवार हूँ—मैं क्या करता

क्लडियास ! मैं तो उस समय हतबुद्ध—हिताहित-ज्ञान-शून्य-सा—हो रहा था।"

"अच्छा यह तो हुआ। किन्तु बाद में एक बार नगर में अच्छी तरह से ढूँढ़ा क्यों नहीं? अगर ढूँढ़ते तो उसका अवश्य ही पता चल जाता।"

"क्या मैंने ऐसा करके कोई अपराध किया? मैं उसे एक बार देखने के लिए अनन्यकर्मा होकर भी, उसे ढूँढ़ सकता हूँ! किन्तु, मित्र, मेरी सारी चेष्टाएँ व्यर्थ हो गईं। उस सुन्दरी का कुछ भी पता न चला।"

दोनों मित्रों में इस प्रकार बातचीत हो रही थी। इतने में एक लम्बा डीलडौलवाला पुरुष वहाँ पर आकर उपस्थित हुआ। उसकी अवस्था चालीस वर्ष के लगभग थी, अवयव दृढ़ और बलिष्ठ था। उसके शरीर का रंग कपिश, नासिका उठी हुई, ओठ पतला, ललाट प्रशस्त था। उसकी मुखाकृति और शरीर का गठन बहुत कुछ ग्रीक के समान होने पर भी प्राच्य देश में उसका जन्म लेना सहज ही जान पड़ता था। पूर्ण अवस्था का होने पर भी यौवन-सुलभ कमनीयता अब भी उसके शरीर से बिलकुल दूर नहीं हुई थी। उसके सारे अंग-प्रत्यंग में उसकी काली-काली चमकती हुई दोनों आँखें खास विशेषता दर्शा रही थीं। उसकी दृष्टि चिन्ताशील, विषाद-पूर्ण एवं स्थिर, गम्भीरता-पूर्ण एवं तीक्ष्ण बुद्धिमत्ता की परिचायक थी। उसका चेहरा-

मोहरा, चाल-चलन, उसकी भाव-भंगी, सभी कुछ, मानो एक असाधारण, अस्वाभाविक और असामाजिक ढंग का था। उसके शरीर में एक लम्बा, ढीला, अँगरखा था। उसकी भी काट-छाँट मिश्री ढंग की थी।

आगन्तुक को देखते ही क्लडियास और ग्लकास मानो कुछ चौंक उठे। बात यह थी कि इजिप्शियन आरबेसेस को पम्पियाई नगर के सभी लोग कुछ घृणा और भय की दृष्टि से देखा करते थे। सभी यह समझते थे कि आरबेसेस पिशाच-सिद्ध है, उसकी दृष्टि बहुत ख़राब है।

शिष्टता के अनुरोध से भावविहीन हँसी हँसकर आरबेसेस बोला—फुर्तीले क्लडियास और सर्व-प्रशंसित ग्लकास, शहर की चहलपहल और आमोद के झरने को छोड़कर निर्जन उपवन में क्या कर रहे हो?

ग्लकास बोला—प्राकृतिक सौन्दर्य्य क्या इतना उन्माद-रहित और नीरस होता है कि उसके बीच में कुछ भी उपभोग करने योग्य नहीं होता?

"कामिनी-कञ्चन की मोहिनी माया में पड़ा हुआ, अनेक व्यसनों के जाल में आबद्ध भोगी, भला प्राकृतिक सौन्दर्य्य को क्या समझेगा?"

"विरह के बिना प्रेम को कभी स्फूर्ति नहीं मिलती—अभाव में पड़े बिना प्रचुरता की उपलब्धि नहीं होती।

विलास-प्लावन में पड़े बिना शान्ति का स्निग्ध सुख अच्छी तरह से उपभोग नहीं किया जाता।"

आरबेसेस बोला—किसी-किसी भावुक के मत से यह बात ठीक तो है, किन्तु मेरी विवेचना में बिलकुल भ्रान्त जान पड़ती है। जो नियत वासना की उपासना में लगे रहते हैं, क्रमागत कामना के जलते हुए अग्निकुण्ड में जो ईंधन डाला करते हैं, वे शान्तिमयी प्रकृति के स्वरूप को उपलब्ध करने में कदापि सक्षम नहीं हो सकते। युवक! विचार करके देखलो, इसी से दिन के कोलाहल में, शान्ति के आधार चन्द्रदेव नहीं निकलते—इसीसे निशाकालीन प्रकृति के सुमोहन स्पर्श के बिना फूल नहीं खिलते।

ग्लकास बोला—आपकी युक्ति का मर्म मैं नहीं समझ सका। फिर भी मेरा यह विश्वास है कि ईश्वर ने भोग के लिए एक समय ठीक कर दिया है। युवावस्था में जी भर कर भोगकर लेना और बुढ़ापे में त्याग का मार्ग पकड़ना, जान पड़ता है, ईश्वर की अभिप्रेत नीति है।

ग्लकास की बात सुनकर आरबेसेस एक कुटिल मर्मपूर्ण हँसी हँसकर बोला—हो सकता है, तुम जो कहते हो, वही ठीक हो। जब तक समय है, भोग कर लो। गुलाब शीघ्र ही सूख जायगा। उसकी गंध भी हवा में मिल जायगी। ग्लकास! स्वदेश, स्वाधीनता और स्वजन द्वारा

परित्यक्त मेरे अभागे जीवन में उपभोग्य क्या है? दो ही मार्ग हैं, भोग अथवा योग। युवक, तुम भोग के मार्ग में हो और मैं योग के पथ में हूँ।

आरबेसेस की बात से स्वदेश की स्मृति ग्लकास के मन में जग उठी। उसके दोनों नेत्र आँसुओं से भर आये। आवेग-रुद्ध स्वर से वह बोला—आरबेसेस, स्वदेश की बात न चलाओ। रोमीय सभ्यता, रोमीय गौरव, रोमीय वैभव के अतिरिक्त और कोई ऐश्वर्य्य संसार में एक दिन था, यह भी भूल जाओ। विस्मृति के कुहरे में ढके हुए मैरथन और थर्मापोली के समर-प्रांगण से उस पुरातन सभ्यता की प्रेतमूर्ति को अब नहीं निकाल सकते।

"युवक, तुममें हृदय है। बातचीत में रात अधिक चली गई। मैं अब विदा होता हूँ। तुम लोग आनन्द करो।"

आरबेसेस के चले जाने पर क्लडियास बोला—बाबा, किसी तरह पिण्ड तो छूटा। मानो कलि का अवतार है! ऐसा खट्टा चेहरा, जिसे देखते ही विशुद्ध दूध भी दही हो जाय!

ग्लकास बोला—यह भी अपने ढंग का एक ही है। मेरी धारणा तो यह है कि इसके वैराग्य और त्याग की बातें बिलकुल झूठी है।

क्लडियास बोला—तुम जो कहते हो, वही ठीक है।

जो उसकी भीतरी बातें जानते हैं, उनके मुँह से सुना है कि कि उसके घर पर असिरिस और आइसिस के अतिरिक्त और देवता की भी पूजा होती है। मैंने यह भी सुना है कि इसके धन की थाह नहीं है। मैं एक बार इसे जुआ खेलने का चस्का लगादूँ, तो मैं उसे काहिल बना डालूँ। क्या ही अच्छा नशा है! अभी आशा की ऊँची चोटी पर हैं, तो दूसरे ही क्षण निराशा के अगाध समुद्र में; अभी जीता जीता—फिर हार गया! अभी हारता हूँ, हारता हूँ—फिर जीत गया! इससे बढ़कर हम लोगों के लिए और कोई दूसरी चीज़ नहीं।

ग्लकास हँसते हुए बोला—वाह यार! तुम तो कवि भी हो! कौन कह सकता है, तुम्हारा हृदय कवित्वमय नहीं है?

---

[३]

ग्लकास के भोज में—

शाम हो गई है। ग्लकास के मकान पर आज ख़ूब चहल-पहल है। निमंत्रित लोग उसके बैठकख़ाने में एकत्रित हैं। उन लोगों की संख्या छः होने पर भी ठाठ-बाट की कोई कमी नहीं है। अनेक स्फटिक-दीपों में बाती जलाकर कमरा आलोकित किया गया है। खुले हुए

जँगले से सान्ध्य समीरण, नाना जाति के उद्यान-कुसुमों का सौरभ-संभार लहराकर, आमंत्रित लोगों को पुलकित कर रहा है। कमरे के चारों ओर, दीवारों पर, इटली के शिल्पियों के बनाये हुए सुन्दर-सुन्दर तैल-चित्र लटके हुए हैं। बीच-बीच में संगमरमर-निर्मित खम्भों पर चतुर भास्करों द्वारा खोदी हुई नग्न वा अर्द्ध-नग्न रमणी-मूर्तियाँ देखने में चेतन जान पड़ती हैं, साथ ही शारीरिक सौन्दर्य्य और कला-विज्ञान में शिल्पी की कल्पना कितने ऊँचे तक उठ सकती है, इसका भी उत्कृष्ट परिचय देती हैं। कमरे का साज-सामान सभी गृहस्वामी की परिमार्ज्जित रुचि का परिचय देता हुआ उसकी उच्चकोटि की विलासिता प्रतिपादित करता है। मित्रगण आमने सामने बैठकर बात-चीत और राग-रंग में व्यस्त हैं।

जज पैनसा बोला—ग्लकास! तुम्हारे घर के कमरे छोटे होने पर भी बहुत साफ़-सुथरे और सजे हुए हैं। ऐसी सुन्दर-सुन्दर तसवीरें यहाँ पर और किसी के यहाँ नहीं हैं।

क्लडियास गम्भीरता-पूर्वक पैनसा के मत का समर्थन करता हुआ बोला—चित्रों के सम्बन्ध में पैनसा की सुरुचि सबको मान्य है। उसके बैठकखाने में जो चित्र हैं, वे भी अत्यन्त सुन्दर हैं।

वास्तव में चित्र-कला के विषय में पैनसा की असा-र्जित रुचि पम्पियाई के सब लोगों पर विदित थी। क्रुडि-यास भी इस बात को जानता था। पर वह पक्के मुसाहिबी ढंग से पैनसा की रुचि की प्रशंसा कर रहा था। पैनसा मन ही मन .खूब सन्तुष्ट हुआ; किन्तु मुँह से बोला—यार! तुम मेरी .खुशामद कर रहे हो। फिर भी मेरे बैठकख़ाने के चित्र बिलकुल ख़राब नहीं हैं। भोजनागार में जो एक तसवीर है, उसकी कल्पना भी अत्यन्त सुन्दर है।

ग्लकास बोला— चित्र की कल्पना कैसी है? मैंने कई बार तुम्हारे भोजनागार में तैयार किये हुए भोज्य पदार्थों का स्वाद तो ग्रहण किया है,किन्तु उसमें प्रवेश करने का सौभाग्य मुझे कभी नहीं प्राप्त हुआ।

पैनसा बोला—चित्र एक सुन्दर रूपक है। एक याचक सतीकुल सम्पूजिता-देवी 'भेष्टा' की वेदी पर समयोपयोगी पूजोपचार लेकर दण्डायमान है। पास ही बड़े भारी तेल से भरे हुए कड़ाह में जीभ को तृप्त करनेवाली मछलियाँ भूँजी जा रही हैं! क्यों क्रुडियास! रूपक मज़ेदार है न?

इसी समय कई नौकर चाँदी के बर्तनों में खाद्य वस्तुएँ लिये हुए कमरे में आ पहुँचे। भोज का आदिपर्व आरम्भ हुआ। विचित्र कारचोबी के काम किये हुए चाँदी के

पात्रों में सज्जित पके हुए अंजीर, शाक, भुनी हुई 'एन-चोवी' मछली थी। इनके साथ आधे पके हुए अंडे थे। छोटे-छोटे स्फटिक-पात्रों में सुगन्धित, सुन्दर, कुछ मधु मिली हुई, अनेक प्रकार की शराब थी। खाद्य तथा पेय वस्तुओं को मेज़ के ऊपर परोसकर अनुचरगण प्रत्येक आमंत्रित व्यक्ति के बग़ल में सुगन्धित जल से भरे हुए करवे और सफ़ेद रूमाल लेकर खड़े थे। निमंत्रित लोग भी और अधिक काल विलम्ब न कर, हाथ-मुँह धोकर, भोजन करने को बैठ गये।

अभ्यागत लोग चर्व्य, चोष्य, लेह्य, पेय से क्षुधा-तृष्णा की शान्ति करने लगे। क्रमशः भोज का मध्य-पर्व्व आया। मेज़ के ठीक बीच में आइभि-मुकुट-शोभित एक संगमरमर की मदन-देव की मूर्ति थी। विलासियों के भोज में कामदेव ही अधिष्ठातृ देवता हैं। गृहस्वामी ग्लकास ने मदिरा से भरी हुई बोतल का मुँह खोलकर, उससे कुछ मदिरा ढाल-कर, मदन-देव की वेदी पर छिड़क दी और निष्ठावान उपासक की तरह मस्तक नवाकर प्रार्थना की—संसार के सर्वश्रेष्ठ मंगल करनेवाले देव-देव मदन! आप इस प्रीति-भोज में अधिष्ठित होइये और हम लोगों की पूजा ग्रहण कीजिये।

आमंत्रित लोगों ने भी भक्ति से सिर नवाकर इस प्रार्थना में योग-दान किया।

प्रार्थना के अन्त होने पर मित्रगण ने अपने-अपने पात्र को सुवासित मदिरा से भर लिया। आनन्द का स्रोत, मदिरा के स्रोत में मिलकर, कमरे में आमोद का तूफ़ान उठाने लगा। मदिरा-रस से आकण्ठ-पूर्ण सलास्ट विजड़ित स्वर में बोला—यह—यह—यही मेरा अन्तिम प्याला है कि—कि—किन्तु भाई! ऐसी चीज़ पम्पियाई में—औ—औ - और कहीं खाने को नहीं मिली।

ग्लकास ने एक अनुचर को आदेश किया—उस बोतल को इधर ले आओ और उसका इतिहास पढ़ो।

बोतल के काग के साथ एक कागज़ लगा हुआ था। नौकर ने उसे पढ़कर अभ्यागतों को सुनाया—इस शराब का जन्म सियरु नगर में हुआ और इसकी उम्र पचास वर्ष से भी अधिक है।

पैनसा गम्भीर भाव से बोला—बर्फ़ में रखकर इसे कैसा स्निग्ध किया गया है। ठीक जितना ठंढा रखना आवश्यक है, उतना ही ठंढा है; न कुछ ज़्यादा, न कुछ कम।

सलास्ट ने कुछ मज़ाक के तौर पर कहा—हाँ, किशोरी का तरल-जल-मिश्रित प्रेम, जिस प्रकार अवस्था के साथ अभिज्ञता के कड़ाह में फूटकर, क्रमशः गाढ़े दूध की तरह होता है, और उस समय, जिस प्रकार वह स्निग्ध प्रेम विशेष उपभोग्य होता है, ठीक वैसे ही!

ग्लकास बोला—नहीं मित्र! तुम्हारी उपमा ठीक नहीं। मेरी विवेचना में यह स्निग्धता, खंडिता नायिका के नायक के प्रति 'ना' उक्ति-प्रयोग के समान है। आग में जल मिला घी डालने पर पहले क्षण में कुछ बुझने का भाव दिखाकर दूसरे ही क्षण दुगने तेज से जल उठता है। नायिका के मुँह से यह छोटा शब्द 'ना' सुनकर नायक की आशा भी ठीक वैसी होती है।

क्लडियास पैनसा से बोला—इन सब व्यर्थ बातों में क्या धरा है? इस समय यह तो बतलाइये, इस बार जानवरों की लड़ाई की तैयारी कैसी हो रही है?

पैनसा बोला—तैयारी तो अच्छी हो रही है। उस दिन एक अच्छा सिंह लाया गया।

क्लडियास बोला—सिंह लाया तो गया है, किन्तु सिंह द्वारा खिलाओगे किसे? आदमी ही का तो अभाव है।

पैनसा ने गम्भीर भाव से उत्तर दिया—ठीक कहा यार! यहाँ का क़ानून कैसा बेढंगा होगया है! कुछ मत पूछो, अपने गाढ़े पसीने की कमाई से प्राप्त धन से दास-दासी खरीदकर उनके प्रति हम लोग मन-माना व्यवहार तक नहीं कर सकते! इसमें भी क़ानून आकर बाधक हो जाता है। क्या ऐसा क़ानून सभ्यसमाज के उपयुक्त है?

सलास्ट एक दीर्घ निश्वास छोड़कर बोला—पहले

हमारे देश में ऐसे बेहूदे क़ानून न थे।

पैनसा बोला—क़ानून जिस प्रकार क्रीतदासों के ऊपर यह कृत्रिम दया का भाव दिखलाता है, वैसे ही दूसरी ओर प्रजा को एक नेत्ररंजक दृश्य से वञ्चित करके एक महापाप कर रहा है।

इसी समय अथितियों की दृष्टि यकायक दरवाज़े की ओर आ पड़ी। सुसज्जित बालक-दासों का एकदल एक बड़े भारी रौप्याधार में एक अखंडित भुने हुए भेड़े को लेकर आ पहुँचा।

उस दृश्य को देखकर पेटू सलास्ट की जीभ से पानी चूने लगा। वह बोला—ग्लकास, इस प्रकार के खाद्य की कुछ और तैयारी है या नहीं ?

सलास्ट चौबीस वर्ष का युवक है। वह अपने जीवन भर केवल अपनी जीभ की तृप्ति करता आया है। किन्तु उसका अन्तःकरण क्रूर नहीं, इसके सिवा उसमें कोई-कोई सद्गुण भी हैं।

पैनसा बोला—यह भुना हुआ भेड़ा ही आज के हमारे भोज का राजा है। आइये मित्रो ! हम लोग इस नवागत अतिथि की अभ्यर्थना करने के लिए शराब के बर्तन को खाली कर डालें।

सब लोगों ने एक ही साँस में सुवासित मदिरा-पूर्ण स्फटिक-पात्र खाली कर दिया।

सलास्ट बोला—ओ—बहुत अच्छा ! उस दिन मिश्र की देवी आइसिस के मन्दिर में एक सुन्दर गाना गाया गया था। ग्लकास ! वह गाना क्या तुमने सुना था ?

ग्लकास बोला—नहीं सलास्ट, मैंने नहीं सुना था। पम्पियाई शहर में, आजकल, मैं देखता हूँ, देवी आइसिस की .खूब प्रसिद्धि है।

पैनसा बोला—हाँ, आजकल यहाँ पर बहुत से लोग आइसिस को .खूब मानते हैं। मैं उनके धर्म्म में विश्वास तो नहीं करता; किन्तु आइसिस की कही हुई भविष्यत् वाणी से मुझे दो-एक कठिन मुक़दमों में अच्छी सहायता मिली है।

सलास्ट बोला—हाँ, मैंने सुना है कि आइसिस का पुजारी आरबेसेस एक बड़ा भारी गुणी आदमी है।

ग्लकास बोला—मैंने सुना है कि उस आदमी के रुपये की थाह नहीं है। यदि वह आदमी ग़रीब होता, तो इसके साथ इडाइली चाल चलता।

क्लडियास बोला—यदि मेरे साथ एक बार पाँसा खेलने के लिए आता, तो उसे अच्छी तरह समझा देता कि जुएँ की चाल कैसी होती है !

जितनी .ज्यादा रात बीतने लगी, उतने ही अधिक प्रबल वेग से मदिरा का स्रोत प्रवाहित होने लगा। इसके साथ ही अतिथियों का मस्तिष्क विकृत होने लगा और

वे अण्ट-सण्ट बकने लगे। इसी समय ग्लकास के आदेश से नर्त्तकियों के एकदल ने ग्लकास के बनाये हुए एक गीत को गाते हुए कमरे में प्रवेश किया।

गीत की रचना अत्यन्त सुन्दर थी। वह कला-कोविद ग्लकास द्वारा सुरलय से गठित था। उसे सुनकर सभी प्रसन्न हुए और एक स्वर से उसकी रचना-चातुरी की प्रशंसा करने लगे।

लिपिडास बोला—इस गीत के अक्षर-अक्षर पर ग्रीक-कला की छाप है। वही उच्छ्वास ! वही तेज ! वही शब्द-विन्यास ! ग्रीक-कविता का अनुकरण वास्तव में नहीं होता।

क्लडियास ग्रीक-सभ्यता और शिल्प से ख़ूब घृणा करता था। किन्तु वह आज ग्रीक ग्लकास के मकान पर निमंत्रित है। उस पर ग्लकास बड़ा धनी, बहुत ख़र्चीला, व्यसनी और सरल प्रकृति का ठहरा। उसी के धन की बदौलत क्लडियास दो पैसे का रोज़गार करके अपना पेट पालता है। इसलिए वह ग्रीक ग्लकास-रचित कविता सुनकर अत्यन्त भावाविष्ट का भाव दिखाकर बोला—क़विता की रचना वास्तव में सुन्दर और सुसंगत है। इसका छन्द बिलकुल आइयोनिक है। इस गान को सुनकर हठात् मुझे सुन्दरी-कुल-शिरोमणि आइयोन की बात याद आ गई। आइये मित्रो ! सुन्दरी आइयोन की प्रीति-कामना के लिए

इस गले हुए सोने के समान, सुवासित मदिरा-पूर्ण पात्र को ख़ाली कर डालें।

ग्लकास ने बड़े ही कोमल स्वर में पूछा—क्या यही सुन्दरी आइयोन है ? इनका नाम सुनने पर तो जान पड़ता है कि ये ग्रीक रमणी हैं।

ईषत् व्यंग-जड़ित स्वर में लिपिडास बोला—क्या तुमने आइयोन को नहीं पहचाना ? तुम थोड़े ही दिन से पम्पियाई नगर में आये हो। इसीसे तुम्हें माफ़ कर दिया गया। यदि यह बात न होती, तो तुम्हें हम लोगों के समाज से निकाल दिया जाता। आइयोन आजकल हम लोगों की नगरी की सर्वश्रेष्ठ शोभा और गौरव की वस्तु हैं।

पैनसा ने गम्भीरता के साथ कहा—आइयोन वास्तव में सुन्दरी है। उसकी आवाज़ भी बहुत मीठी है।

क्लडियास बोला—क्या कहना है ! जान पड़ता है, रोज़ सबेरे उठकर ख़ाली पेट एक छटाक कोयल की बुकनी खाती है !

ग्लकास बोला—क्लडियास ! मज़ाक़ दूर रक्खो, मुझसे यह तो कहो कि यह रमणी कहाँ से आई हैं।

लिपिडास बोला—क्या तुम ज़रूर सुनोगे ?

क्लडियास बोला—अच्छा रहो, तुम्हें नहीं कहना पड़ेगा—मैं ही कहता हूँ। सुनो ग्लकास ! आइयोन पहले

कभी पम्पियाई नहीं आई थी। अभी पहली ही बार आई हैं। सैफों की तरह सुन्दरी और गानेवाली है। उसके सभी गाने उसी के बनाये हुए हैं। इसराज, वीणा, सितार, बेला आदि सब तरह के बाजों पर उसके हाथ चलते हैं। सुन्दरता में उसकी बराबरी का कोई नहीं। घर-द्वार, असबाब, जवाहिरात आदि जिन चीजों को वह व्यवहार में लाती है, उन्हें देखकर अनुमान होता है, धन का भी उसे अभाव नहीं है। और क्या जानना चाहते हो, बोलो ?

ग्लकास बोला—सब कुछ तो कहा, किन्तु असली बात को तो छोड़ ही दिया। ऐसी सर्व्वगुणशालिनी रूप-लावण्यमयी युवती के प्रणयियों की संख्या का गिनना भी असंभव ही होगा ?

क्लाडियास ने दाँतों से जीभ काटकर कहा—नहीं ग्लकास, यह बात बिलकुल उल्टी है। संख्या का अधिक होना तो दूर रहा, मैं जहाँ तक जानता हूँ, पम्पियाई के सभी लोग उसके रूप-गुण पर लट्टू तो हैं; किन्तु उसका प्रणयी बनने का किसी का साहस नहीं होता। सुनने में आया है कि विवाह के सम्बन्ध में वह बिलकुल उदासीन है। कहीं जीवन-पर्य्यन्त कुमारी रहने का उसका व्रत तो नहीं है ?

ग्लकास बोला—यह आश्चर्य की बात अवश्य है।

तुम्हारी बात सुनकर मेरी इच्छा होती है कि अभी उससे बात करूँ।

क्लुडियास बोला—बहुत अच्छा; चलो, अभी उसके साथ तुम्हारी बातचीत करा देता हूँ।

ग्लकास आइयोन के साथ बातचीत करने के लिए कुछ अधीर हो उठा है, अतिथि लोग यह समझकर, भोज के समाप्त होते ही, ग्लकास को मीठी बातों से तृप्तकर, चलते बने। ग्लकास क्लुडियास को साथ लेकर आइयोन के मकान की ओर चला। दोनों मित्र उसके घर में क़दम रखने ही को थे कि इतने में ग्लकास ने मीठे स्वर में क्लुडियास से पूछा—क्या तुमने यह नहीं कहा था कि आइयोन एथेनियन हैं?

क्लुडियास बोला—एथेनियन नहीं है, उसका मकान नियापलिस में है।

ग्लकास ने अन्यमनस्क भाव से कहा—नियापलिस में!

न जाने किस अज्ञात आनन्द ने ग्लकास की स्मृति-तंत्री पर आघात किया। वह सिहरकर उठ खड़ा हुआ। उसने सामने ही देखा, आइयोन खड़ी है।

क्या यही उसकी चिर आकांक्षिता, चिर सम्पूजिता और उसके निरन्तर उपासना की विषयीभूता देवी-प्रतिमा है!

---

[४]

भिक्षुक आरबेसेस

नगर की एक चौड़ी सड़क के बग़ल में देवी आइसिस का मन्दिर है। सूर्य अस्त होगये हैं, मन्दिर में सन्ध्या की आरती आरम्भ हो गयी है। जलते हुए धूप,अगर और नाना प्रकार के सुगंधित द्रव्यों की सुगंधि से दिग्मण्डल सुरभित हो रहा है। भिक्षुक आरबेसेस मन्दिर की, संगमरमर की बनी,सीढ़ी के एक ओर खड़ा होकर, चुपचाप एक दृष्टि से, अविराम जल-स्रोत की ओर देखकर, मीठे स्वर में कहने लगा—

"मूर्ख पाखंडी बर्ब्बर-दल! कर्म जीवन में हो, अथवा आमोद-उपभोग के समय हो, कारबार के समय हो, अथवा धर्म-काज करने के समय हो, सभी समय, सभी अवस्थाओं में, उद्दाम, उच्छृङ्खल भोग-लिप्सा ही तुम लोगों का परिचालक है। उसे दमन करने की तुम लोगों में शक्ति नहीं। मैं तुम्हें हृदय से घृणा करता हूँ। तुम लोग सभ्यता का अभिमान करते हो। किन्तु तुम लोगों ने वह सभ्यता कहाँ से पाई है? चाहे ग्रीक सभ्यता हो, अथवा रोमन सभ्यता; पर प्राचीन मिश्र की सभ्यता ही तुम्हारी सभ्यता की माता के समान है। ग्रीसवालों ने चोरों की तरह जाकर हमारी मिश्री सभ्यता, मिश्री विज्ञान, मिश्री चित्र, स्थापत्य, साहित्य, भास्कर्य-कला रुपी बड़े भारी वृक्ष को, नील नदी के तट से,

उखाड़ लाकर इलिसस के तट पर आरोपित किया। तुम रोमन लोग उसी वृक्ष के दो-चार सूखे पत्तों को संग्रहकर अपने को बड़ा भाग्यशाली समझते हो! आज रोम विजयी है, और मिश्र पराजित—तुम लोग स्वामी, हम लोग दास हैं। पिरामिड की अभ्रभेदी चोटी, आज, गृद्ध-लाञ्छित रोमन पताका के भार से लज्जामयी होकर नतमुख हो रही है! तुम लोग आज हमारे स्वामी हो, हम लोगों के भले ही हो, किन्तु मेरे नहीं। मेरा अलौकिक योगबल, विशाल ज्ञान, मेरी अप्रमेय इच्छाशक्ति ने एक दुच्छेद्य शृङ्खला में, तुम लोगों को पैरों के तले, बाँध रक्खा है। जितने दिन तक कूट-नीति पशु-शक्ति के ऊपर राज करने में समर्थ होगी, जितने दिन तक बनावटी चेहरे की आड़ से मूर्ख की दृष्टि न चलेगी, जितने दिन तक पृथ्वी में विज्ञान का आदर रहेगा, उतने दिन तक तुम लोग मेरे आज्ञापालक दास रहोगे। चाहे थिब्स हो, चाहे मिट्टी में मिला हुआ मिश्र सारी पृथ्वी आरबेसेस का क्रीड़ाक्षेत्र है।''

आशा के आलोक से आरबेसेस का मुखमण्डल खिल उठा।

जागरूक देवता के नाम से आइसिस की खूब प्रसिद्ध थी। जो जिस कामना को लेकर उनकी पूजा करता है, उसे अवश्य ही सिद्धि प्राप्त होती है। इसी से सन्ध्याकाल की आरती में लोगों की श्रेणी, हाथ जोड़कर, देवी के

आदेश की प्रतीक्षा में, सिर नवाकर, कान उठाये, खड़ी है। भिक्षुक आरबेसेस ने धीरे-धीरे उस जनता की भीड़ को चीरते हुए मन्दिर के भीतर प्रवेश किया। एकत्रित उपासक-उपासिका-मण्डली में सभी ने सिर नवाकर यथोचित अभि-भाषण से भिक्षुक आरबेसेस की आव-भगत की।

---

[५]

षडयंत्र का आयोजन

देवी आइसिस का सन्ध्या-काल का हवन और बलि-कार्य समाप्त हुआ। एकत्रित उपासक और उपासिकाएँ चली गईं। मन्दिर जन-शून्य होगया। आरबेसेस चिन्तित भाव से कमरे में इधर-उधर टहलने लगा। मानों किसी की प्रतीक्षा में हो। थोड़ी ही देर में मंदिर के पुरोहित ने धीरे-धीरे कमरे में प्रवेश करके आरबेसेस को प्रणाम किया।

आरबेसेस आगन्तुक की ओर देखकर मुस्कुराते हुए बोला—कैलनस! मंदिर के सारे कार्यों के सम्पादित करने तथा माता आइसिस के रहस्यमय मायाबल से पतित रोमन को धोखा देने में तुमने काफ़ी कार्य-कुशलता का परिचय दिया है। मेरी इच्छा है कि एपिसाइडिस तुम्हारे अधीन रहकर अच्छी तरह से ज्ञान प्राप्त करे। हाँ, अच्छा, मेरे नव-दीक्षित शिष्य एपिसाइडिस के सम्बन्ध में तथा अन्यान्य

कई विषयों में, मुझे, तुम्हारे साथ, कुछ गुप्त वार्तालाप करनी है। इसीसे मैंने तुम्हें एकान्त में बुलाया है।

कैलनस बोला—प्रभु की आज्ञा शिरोधार्य है।

आरबेसेस बोला—कैलनस, तुम जानते ही हो कि युवक-युवतियों की कोमल चित्तवृत्ति ही मेरी परितृप्ति के स्वर्ग की सोपान-रचना का सर्व्वश्रेष्ठ साधन है। इसी से मैं युवकों को मन्त्र देकर शिष्य कर लेता हूँ और युवतियों को………।

विद्रूप-व्यंजक हास्य से अपना टेढ़ा मुँह कुछ और विकृत करके कैलनस ने आरबेसेस के वाक्य को पूरा करते हुए कहा—"अपनी लीला-सहचरी बना लेते हैं।"

आरबेसेस बोला—सचमुच कैलनस ! मैं यह बात तुमसे नहीं छिपाता। रमणी ही मेरे जीवन का सर्वोच्च लक्ष्य, सर्वश्रेष्ठ स्वप्न और मेरी आत्मा की उत्कट पिपासा है। तुम लोग बलिपशु को जिस प्रकार बहुत पहले से बहुत यत्न-पूर्वक, पालते-पोसते हो, मैं भी उसी तरह अपने वृत्ति-देवता को सन्तुष्ट करने के लिए बलि की तैयारी बहुत पहले ही से करता हूँ। शाम के समय का वायु, जिस प्रकार, चुपके से आकर, अपने कोमल कर-स्पर्श से, कुसुमबधू के हृदय के कोने में छिपी हुई आकांक्षाओं को स्फुटित कर देता है, स्निग्धोज्ज्वल प्रभात की सौरभ-राशि जिस प्रकार कमलिनी के मुँह पर हँसी का फव्वारा छुटाती है तथा वसन्त के

समागम से धीरे-धीरे प्रकृति के मुंह से निरानन्द का घूँघट हटा देती है, वैसे ही मैं भी बहुत सावधानी से रमणी के हृदय में छिपे हुए, युग-युगान्तर से संचित, प्रेम-बीज को सोहाग-वारि से सींचकर अंकुरित करता हूँ। धन का लोभ देकर लायी हुई युवती के आकांक्षानल-दीप्त ज्वालामय प्रेम को मैं बिल्कुल पसन्द नहीं करता। मैं पसन्द करता हूँ शिशु की सरलता के बीच से किशोरी के व्रीड़ा-संकुचित प्राण का अपूर्ण विकास। मैं चाहता हूँ कि छाया और प्रकाश के विचित्र सम्मिलन के बीचसे युवती सौन्दर्यकला की प्रतिमूर्ति होकर प्रकटित हो। तुम जानते हो कि अनेक वर्ष पूर्व नियापलिस में आइयोन और एपिसाइडिस के साथ मेरी पहली देखा-देखी हुई। ये उस समय नियापलिस में निवास कर रहे थे। उनके पिता मरने के समय मुझे ही मातृहीन दोनों बच्चों का संरक्षक बना गये थे।

कैलनस विद्रूपात्मक स्वर में बोला—अच्छा, आप इस समय उनके भक्षक हैं!

आरबेसेस बोला—कैलनस! आइयोन को मुझे अपनी मुट्ठी में करना ही पड़ेगा। उसको प्राप्त करने में उसका भाई बाधा-स्वरूप न हो, इसी लिये मैंने एपिसाइडिस के चित्त पर प्रबल धर्म-पिपासा का भाव जाग्रत् कर दिया है। इसी से मैंने उसे सत्य-धर्म्म में दीक्षित किया है।

कैलनस बोला—मेरी समझ में आपने यही अच्छा

नहीं किया ; क्योंकि अगर वह इस समय हमारे मन्दिर की भीतरी बातों को जान लेगा, तो सत्य-धर्म्म से उसका विश्वास हट जायगा।

कुछ चिन्तित होकर आरबेसेस ने उत्तर दिया—मैंने बिना कुछ सोचे-समझे ही यह चाल चली है, यह न समझना कैलनस। मेरी इच्छा है कि उसे अन्ध-विश्वास के मार्ग से ले जाकर ज्ञान के मार्ग पर ले जाऊँ। ईश्वर-प्राप्ति का सबसे सीधा और सरल मार्ग विश्वास है। ज्ञान का मार्ग तो बहुत ही कठिन है।

कैलनस बोला—मैंने तो कोई मार्ग नहीं देखा। जान पड़ता है, आपकी भी वही दशा है।

आरबेसेस ने बहुत गम्भीर भाव से उत्तर दिया—तुम भ्रान्त हो। प्रकृति की चिरन्तन-अलंघनीय सत्नीति के ऊपर मेरी अटल आस्था है। हृदय के तत्वज्ञान के ऊपर मेरा विश्वास अटूट है। ख़ैर, इन बातों से क्या मतलब ! एपिसाइडिस के सम्बन्ध में मेरा जो कर्त्तव्य था, उसका पालन मैंने किया है। इस समय आइयोन मेरी रानी—मेरी जीवन-संगिनी—है, आइयोन ही मेरी शक्ति, मेरी चिर उपास्य देवी, मेरी हृदयेश्वरी है। जब तक मैंने आइयोन को देखा नहीं था, तब तक मुझे स्वयं नहीं मालूम था कि मेरे हृदय में इतना प्रेम छिपा हुआ है।

कैलनस बोला—मैंने सुना है, आइयोन बहुत सुन्दरी है—अद्वितीय सुन्दरी है।

आरबेसेस—बिलकुल ठीक। सुन्दरियों से भरे हुए ग्रीस तक में उसके मुक़ाबिले की सुन्दरता ढूँढ़ने से भी न मिलेगी। उसका मानसिक सौन्दर्य भी कल्पनातीत है। इसी से वह आरबेसेस की अर्द्धांगिनी होने योग्य है। आइयोन असाधारण प्रतिभावाले की अधीश्वरी होगी। आइयोन की बातों में कविता, उसकी दृष्टि में मादकता, हँसी में स्वर्गीय सुधा, देह-वल्ली में कुसुम-गुच्छ का सौन्दर्य्य-सम्भार है। आइयोन सुन्दरता की स्थायी मूर्ति, शारीरिक और मानसिक सुषमा का पूर्ण विकास है। और एक शब्द में वह मेरे हृदय की उत्सव-स्वरूपिणी है। मैं माता आइसिस की सौगंद खाकर कहता हूँ कि मैं उसे अपनी जीवन-संगिनी अवश्य ही बनाऊँगा।

केलनस—क्या वह अब भी आपकी नहीं हुई?

एक दीर्घ निश्वास छोड़कर आरबेसेस बोला—अभी अच्छी तरह से नहीं हुई! इसीसे मैं तुम्हारी सहायता चाहता हूँ।

कैलनस—मैं आपकी क्या सहायता कर सकता हूँ?

आरबेसेस—सुनो केलनस! इसी बीच में, एक दिन रात में, मैं, आइयोन को, अपने घर पर, सन्ध्या समय, भोजन करने के लिए बुलाऊँगा। वहाँ ऐसी तैयारी की जायगी कि

जिसे देख और सुनकर वह दंग रहजायगी। इसके बाद धर्म्म के रहस्यमय गुप्त मार्ग से ले जाकर क्रमशः उसे दिव्य प्रेमालोकित कमरे में ले जाऊँगा।

कैलनस—मैंने समझ लिया, धीरे-धीरे थोड़ी-थोड़ी शराब पिलाकर उसे बेहोश करके······।

आरबेसेस—नहीं, तुम कुछ नहीं समझ सके। ऐसा करने पर तो एकबारगी सब चौपट हो जायगा। मैं कह चुका हूँ कि धर्म्म की मोहिनी शक्ति की सहायता से उसके भाई को अपने वश में करूँगा। उसके बाद आइयोन के सम्बन्ध में जो करना होगा, करूँगा।

ज्योत्स्ना के समान निर्मल, तुषार के समान धवल, शिशु की हँसी के समान सरल, दोनों हृदयों को आकांक्षा-दानवी के मन्दिर में वलिदेने के लिए मिश्र का नर-पिशाच आरबेसेस और उसका सहचर, दोनों,अपनी-अपनी तलवार तेज़ करने लगे!

---

[६]

निडिया की आशा

ग्लकास के सोने के कमरे के नाना वर्ण के स्फटिक-रचित वातायन-मार्ग से नवोदित सूर्य की किरणें प्रवेशकर कमरे के संगमरमर के फ़र्श पर एक अपूर्व सुन्दरता को

रचना कर रही हैं। ग्लकास अभी-अभी शय्या छोड़, उठ-कर, वातायन के पास एक कोमल कम्खाब के आसन पर बैठकर वाह्य प्रकृति की अलौकिक सुषमा का संदर्शन करने लगा। ऊपर स्वच्छ सुनील आकाश था, नीचे, उद्यान में, नाना वर्ण के पत्र-पुष्प सुशोभित हो रहे थे। प्रातःकाल के स्निग्ध स्पर्श से ग्लकास का मन अधिकार से अवश हो रहा था। उसके हृदय-मुकुर में वाह्य प्रकृति की वह अनन्त सुषमा प्रतिबिम्बित हो उसकी हृदयहारिणी आइ-योन की प्रतिमा में मानो जान डाल रही थी।

एक दीर्घ निश्वास छोड़कर ग्लकास मन्द स्वर में कहने लगा—आह ! इतने दिन बाद, अब, मेरी हृदये-श्वरी का पता चला है। ठीक ही कहा है—प्रेम की पूजा कभी व्यर्थ नहीं जाती। पूर्ण भक्ति से देवता का आवाहन करने पर प्राण-देवता का दिव्य आसन डोलेगा ही। उस करुण आह्वान का प्रत्याख्यान करना देवता के लिए भी असम्भव है।

ग्लकास का चिन्ता-स्रोत सहसा रुक गया। उसकी अलस दृष्टि, सहसा कमरे के द्वार-पथ पर, छाया के समान स्निग्ध, एक मौन किशोरी पर, जा पड़ी। किशोरी की देह-यष्टि उसी के हृदय के समान निर्मल शुभ्र अँगरखे से ढकी थी। उसके हाथ में नाना जाति के फूलों से भरी फूलों की डलिया थी।

वह, वही अन्धी मालिन—निडिया—है।

उसको देखकर ग्लकास बोला—निडिया, तुम आ गईं! आओ! मैंने भी जान लिया था कि तुम मेरे निमंत्रण को न भूलोगी।

निडिया के गाल पर मानो एक गुलाब की लालिमा फूट उठी। वह धीरे-धीरे बोली—ग्लकास की करुणा असीम ठहरी, उसका आदर क्या भूलने योग्य है?

करुणा-विजड़ित स्वर में ग्लकास बोला—भोली निडिया को समादर न दे, ऐसा कौन है?

निडिया ने उसकी बात का उत्तर नहीं दिया; केवल एक दीर्घ-निश्वास ने, मूक भाषा में, मानो सब कुछ कह दिया।

निडिया ने पूछा—ग्लकास! जान पड़ता है, आप थोड़े ही दिन से पम्पियाई में आये हैं।

ग्लकास—मुझे यहाँ आये छः दिन हुए।

निडिया बोली—ग्लकास! आप अच्छे तो थे न! अच्छी तरह से क्यों न होंगे! लोगों के मुँह से सुना है, पृथ्वी बहुत ही सुन्दर है। जो ऐसी सुन्दर वस्तु देखते हैं, उन्हें और कौन सा दुःख हो सकता है? ग्लकास! मैं आपके लिए डाली भरकर कुछ ताजे फूल लाई हूँ। ये फूल आपके उपभोग के लिए उपयोगी हैं, और अच्छी जाति के न होने पर भी हाल ही के चुने हुए हैं।

ग्लकास—यह क्यों निडिया ! फूलों को देखकर मुझे तो ऐसा जान पड़ता है कि वनदेवी ने मानो मुझ पर प्रसन्न हो इन्हें मुझे उपहार-स्वरूप भेजा है ।

निडिया—ग्लकास ! आपके बग़ीचे के सब पेड़ तो अच्छी तरह हैं न ! कहीं आपकी अनुपस्थित से वे ख़राब तो नहीं हो गये ?

ग्लकास—निडिया ! मैं सचमुच आश्चर्य-चकित हो रहा था कि मेरी अनुपस्थिति के समय, कौन आकर, बहुत सावधानी से, उनकी देख-भाल किया करता है ।

निडिया—मैं यह सुनकर सचमुच बहुत आनन्दित हुई । मैं ही, समय पाकर, उन पेड़ों की सेवा करती थी । पेड़ों और पौधों के प्रति प्रेम, फूलों के साथ स्नेह और अनुरक्ति मेरे हृदय की प्रवृत्ति है ।

ग्लकास—सुन्दरी, मैं तुम्हें हृदय से धन्यवाद देता हूँ । मैं नहीं जानता था कि पम्पियाई में अपने प्यारे पौधों की देख-भाल के लिए एक जाग्रत स्मृति रख आया हूँ ।

ग्लकास की बात सुनकर किशोरी निडिया की देह में मानो बिजली दौड़ गयी । उसका वक्षस्थल आवेग से फूल उठा । उसके हृदय में एक विषम समस्या उठ खड़ी हुई । उसने कुछ अप्रतिभ होकर कहा—आज बहुत तेज़ धूप है । फूलों के लिए आज की धूप अच्छी नहीं । कई दिन

से मैं आपके बग़ीचे नहीं गई हूँ। मेरी तबीयत कुछ ख़राब हो गयी थी।

ग्लकास—तुम्हारे चेहरे को देखने से तो नहीं जान पड़ता कि तुम्हारी तबीयत ख़राब रही है। तुम्हें कौन बीमारी हो गई थी?

बालिका ने कातर होकर कहा—इन दिनों प्रायः मेरी तबीयत ख़राब रहती है। मैं जितनी बड़ी हुई जाती हूँ, उतना ही यह दृष्टिशक्ति का अभाव-जनित कष्ट अधिक अनुभव करती हूँ। चलूँ, एक बार आपके फूलों के पौधों को देख आऊँ।

निडिया चली गई।

ग्लकास ने बालिका की ओर एकटक निहारकर सोचते हुए कहा—निडिया, सचमुच तुम्हारा भाग्य बहुत ख़राब है। तुम पृथ्वी को नहीं देख पाती हो। सूर्य, चंद्रमा, नक्षत्र, तारा, पर्वत, समुद्र, और आकाश—ये सब कैसे सुन्दर हैं, तुम यह सब कुछ भी नहीं जानती हो! और इन सभी चीज़ों से सुन्दर आइयोन को भी नहीं देख पाती हो।

आइयोन की याद आते ही ग्लकास का मन पिछली रात के उस सुख-स्वप्न में विभोर हो उठा। वह प्रथम साक्षात्!—उसके बाद कितने दिन बीत गये! उसके बाद यह दूसरी मुलाक़ात है। क्या भोली भाली आइयोन में कोई परिवर्तन नहीं हुआ है? पम्पियाई की विलासिता-

दलदल में रहते हुए भी, आईयोन मानो बर्फीले पहाड़ की चोटी के समान स्थित है। आइयोन इस समय वह अधखिली किशोरी नहीं। वह तो इस समय पूर्ण विकसित है और मेरे प्रेम की साक्षात् मूर्ति है।

इसी समय क्लडियास ने कमरे में प्रवेशकर उसके चिन्ता-स्रोत में बाधा डाल दी। वह कमरे में बैठते ही आइयोन का प्रसंग छेड़कर उसकी सुन्दरता की प्रशंसा का पुल बाँधने लगा। उस अर्थ-पिशाच क्लडियास के मुँह से प्रशंसा सुनना मानो आइयोन के धवल यश में कालिख पोतने का-सा जान पड़ा। दो-चार बातों में धीरे से उसे टरकाकर ग्लकास ने आइयोन से भेंट करने के लिए प्रस्थान किया।

---

[७]

पुनर्मिलन

आइयोन के साथ पुनः भेंट होने के बाद से ही ग्लकास के जीवन की गति मानो परिवर्तित हो गई। सूर्योदय के साथ ही जिस प्रकार तारागण एक-एक करके विलीन होने लगते हैं, वैसे ही ग्लकास के हृदय में आइयोन के स्थान पाते ही उसके मित्रों का प्रभाव उस पर कम होने लगा।

अब ग्लकास अधिकतर आइयोन के साथ बातचीत करने में ही अपना समय काटने लगा।

एक दिन सन्ध्या होने के कुछ पहले ग्लकास और आइयोन कुछ अन्तरंग मित्रों के साथ नौका पर भ्रमण करने के लिए निकले। डूबते हुए सूर्य की लाल किरणों के पड़ने से समुद्र लाल हो रहा था। स्निग्ध जल-कण-वाही सान्ध्य समीरण, आइयोन के खण्ड-चन्द्रमा के समान ललाट पर लटकते हुए कुण्डलों को कँपाता हुआ बह रहा था। प्रणयी युगल एकान्त में बैठकर सुखपूर्वक बातें करने लगे।

एक दीर्घ निश्वास छोड़कर आइयोन बोली—ऐसे आनन्द के समय यदि मेरा भाई आकर हम लोगों का साथ देता, तो कितना अच्छा होता!

ग्लकास कुछ विस्मित होकर बोला—तुम्हारा भाई! मैंने तो उसे नहीं देखा है। आइयोन! न जाने क्यों, तुम्हारे चेहरे को देखते ही मैं और सभी बातें मानों भूल जाता हूँ। अब मुझे याद आई, उस दिन नियापलिस में, मिनर्वामन्दिर में, तुम्हारे साथ मेरे साक्षात् होने के दिन, जो युवक तुम्हारी प्रतीक्षा कर रहा था, जान पड़ता है, वही तुम्हारा भाई है।"

"हाँ।"

"वह क्या यहीं पर है?"

"हाँ।"

"पम्पियाई में ही वे हैं और एक दिन भी मैंने उन्हें नहीं देखा !" .

"वे एक दूसरे ही काम में हैं। वे आइसिस के मन्दिर के मंत्र-शिष्य हैं। इसी से वह मेरे पास ज्यादा नहीं आ सकते।"

"इतनी थोड़ी अवस्था में वे आइसिस के मंत्र-शिष्य हो गये हैं। मैंने सुना है, इस धर्म की नियमावली अत्यन्त कठोर है। उनकी ऐसी मति क्योंकर हुई ?"

"लड़कपन से ही उनकी धर्म के प्रति श्रद्धा रही है। इस समय हम लोगों के संरक्षक, मिश्र-देश के भिक्षुक, ज्ञानी आरबेसेस के इच्छानुसार उन्होंने इस मन्दिर में प्रवेश किया है। आरबेसेस के साथ तुम्हारी बातचीत करा दूँगी। वह गुणियों का बहुत आदर करते हैं।"

"आरबेसेस !—उनके साथ मेरी थोड़ी-बहुत जान-पहचान है। तो भी जब वे तुम लोगों के इतने आत्मीय हैं, तो मुझे भी उनके साथ कुछ विशेष रूप से बातचीत करनी होगी। मैं आदमियों के साथ बातचीत करना बहुत कम पसन्द करता हूँ। किन्तु सच बात तो यह है आइयोन !—कि इस मिश्री भिक्षुक आरबेसेस के गम्भीर मुख और क्रूर दृष्टि के देखने पर, मन में, जान पड़ता है, मानो सम्पूर्ण आलोक के आधार सूर्य्य का मुँह भी उनका मुँह देखने पर निष्प्रभ और अन्धकारमय हो जायगा।"

"ग्लकास ! भिक्षुक आरबेसेस की यह गम्भीरता और वैराग्य-भाव उसका स्वाभाविक गुण नहीं है । जान पड़ता है, यह उनके अतीत जीवन में प्राप्त अभिज्ञता और नैराश्य का अवसाद-मात्र है ।"

उन प्रणयी-युगल की दृष्टि उस समय विसूवियस की गगनचुम्बी चोटी पर लगी हुई थी। डूबते हुए सूर्य की अन्तिम किरणों के पड़ने से सारा आकाशमण्डल उद्भासित हो रहा था। केवल पर्वत के शिखर पर लटकती हुई बादल-परियाँ प्रकृति के स्निग्ध, मधुर, हँसते हुए, चेहरे पर भृकुटि-रेखा के समान जान पड़ती थीं। न जाने क्यों, वह दृश्य ज्योंही दोनों की दृष्टि में आया, त्योंही उनका हृदय कुछ काँप उठा !

---

[८]

चालबाज़ी

आरबेसेस अबतक नहीं समझ सका था कि ग्लकास आइयोन के हृदय पर दिन-दिन किस प्रकार अधिकार करता जाता है। तो भी आइयोन का भाई एपिसाइडिस अब आरबेसेस के पास उससे भेंट करने अथवा उनका परामर्श लेने प्रायः नहीं आता था। और वही आरबेसेस

की चिन्ता का कारण होरहा था। एपिसाइडिस में सहसा यह परिवर्तन क्यों हो गया! उसने मनही मन प्रतिज्ञा की कि एपिसाइडिस को किसी तरह अपनी मुट्ठी से बाहर नहीं जाने दूँगा।

एक दिन, सायंकाल होने के कुछ ही देर बाद, रास्ते के बगल के,एक लता-कुञ्ज के पार्श्व में, एक आसन पर बैठकर वह न जाने क्या सोच-विचार रहा था कि इतने में आरबेसेस, चुपके से, सहसा वहाँ पर आकर खड़ा होगया। आरबेसेस को देखते ही एपिसाइडिस कुछ झिझक गया और वहाँ से चले जाने का अवसर ढूँढ़ने लगा। आरबेसेस उसके मन की बात जानकर, एकबारगी उसके सामने जाकर खड़ा हो गया और एपिसाइडिस के अनिच्छुक हाथ को अपने हाथ में लेकर, उसे सम्बोधन करके, बोला—पुत्र एपिसाइडिस! तुम्हें क्या हो गया है? आजकल तुम मुझे देखते ही नजर बचाने की क्यों कोशिश करते हो? पुत्र! तुम मेरे संरक्षण में हो, मैं तुम्हारा अभिभावक हूँ। धर्म और न्याय के अनुसार, ईश्वर के निकट, तुम्हारे दुख और सुख के लिए मैं उत्तरदायी हूँ। वत्स! तुम्हारी इस मानसिक चिन्ता का कारण क्या है, बोलो।

"आपसे मुझे कुछ कहना नहीं है।"

"क्यों वत्स?"

"कारण यह है कि आप मेरे शत्रु हैं।"

"पुत्र ! मैंने समझ लिया, तुम किस वजह से मुझ से बिगड़े हो। मैंने तुम्हें देवी आइसिस के पुण्यमंत्र से दीक्षित किया है। तुमने मन्दिर के भीतरी क्रिया-कलाप को देखकर समझ लिया है कि यह प्रकृत धर्म नहीं है। केवल धर्म्म का आवरण देकर लोगों को धोखा देने का एक उपाय है।

"आप आइसिस की उपासना की इन सभी धोखा-धड़ी की बातों को जानते हैं, तो आपने, जानते हुए भी, मेरा सर्व्वनाश क्यों किया ? मुझे इस कपट-धर्म में क्यों दीक्षित किया ? मुझे दीक्षित करने के समय आपने कहा था कि आइसिस के सभी पुरोहितगण बड़े ही आत्म-त्यागी, संसार से विरक्त, ज्ञान-पिपासु धर्म्मात्मा योगी हैं। मैं देख रहा हूँ कि वे सियार से भी बढ़कर लोभी, सुअर से भी बढ़कर कामी, सर्प की भी अपेक्षा दुष्ट-प्रकृति हैं ! तो आपने क्यों जान-बूझकर भी मुझे इस पंक-कूप में ढकेल दिया ? जो ज्ञान मुझे देने के लिए कहा था, उसे दिया क्यों नहीं ?"

"वत्स ! क्षोभ त्याग दो। मैं ने तुम्हें जो देने के लिए कहा है, वह तुम्हें अवश्य दूँगा। आज तक जो कुछ देखा, वह केवल तुम्हारे आत्मिक बल की परीक्षा के लिए किया गया है। तुम परीक्षा में उत्तीर्ण हो गये हो। अब तुमने अपने को सत्य-धर्म्म के गूढ़तम रहस्य के रसास्वादन के लिए उपयोगी प्रमाणित कर दिया है।"

एपिसाइडिस आरबेसेस की ओर टकटकी लगाकर ताकने लगा। उसके मस्तिष्क के बीच एक भीषण तूफ़ान उठ खड़ा हुआ!

आरबेसेस पुनः गम्भीर स्वर में बोला—सुनो एपिसाइडिस! प्राचीन मिश्र ही सर्व प्रकार के ज्ञान-विज्ञान का जन्मदाता है। नाना प्रकार की कलावाली ग्रीक सभ्यता उसी की बड़ी लड़की है। जिस सभ्यता का अमृतोपम रसास्वादनकर ग्रीक ने अमरता प्राप्त की है, जिसका कण मात्र पाकर रोम आज सभ्यसमाज का सिरमौर हो रहा है; तुम क्या यह समझते हो, उस हज़ार सभ्यताओं की आदिभूता मिश्री सभ्यता की छिपी हुई नीति झूठी और सार-रहित है? वत्स! एपिसाइडियस! यह कभी नहीं हो सकता। आधुनिक सभ्य समाज अपने गौरव के लिए मिश्र का ऋणी है। मिश्र का गौरव विश्व-माता आइसिस का पुरोहित-सम्प्रदाय है। आइसिस कौन है?—वत्स! आश्चर्य्य-चकित न होओ, आइसिस इस मनस्वी पुरोहित-सम्प्रदाय द्वारा कल्पित, रचित, एकरूपक मात्र है। किन्तु इस रूपक की अन्तर्निहित सत्ता एक शाश्वत सत्य है। वत्स! विचार कर देखो, आइसिस की पुरोहित-मण्डली एक ओर जिस प्रकार समाज को सर्व्वश्रेष्ठ सभ्यता के मार्ग में परिचालित करती है, दूसरी ओर उन्हें, पुनः, जादूगर की नाईं, प्रवञ्चना-बल से, जनसाधारण को प्रताड़ित करना होता है। अन्धी

जनता कभी जगन्माता, जगत्प्रसविनी प्रकृति, के विशाल रहस्यमय अवगुण्ठन को उन्मोचन करने का प्रयत्न नहीं करती। इसी से उसे सत्य-धर्म की ओर जाने के लिए इस आइसिस रूपी रूपक की अवतारणा की गई है।

एपिसाइडिस सिर नीचाकर भिक्षुक आरबेसेस की बात सुनने लगा। औषध ने ठीक काम किया है, यह देख कर आरबेसेस पुनः कहने लगा—

"वत्स! दार्शनिक पिथागोरस कह गये हैं कि आध्यात्मिक बातें सभी जगह नहीं कहनी चाहिये। जो आध्यात्मिक बातें समझता है, वही मनुष्यों में ईश्वर के समान है। वत्स! ईश्वर की बातें समझने की तुममें योग्यता है। इसी से मैंने तुम्हें सत्य-धर्म्म में दीक्षित किया है, इसीसे तुम्हें दीक्षित करते ही, मैंने, सत्यधर्म के असार और मिथ्या अंश को तुम्हारी आँखों के सामने उपस्थित करके तुम्हारे मन की परीक्षा ली है। अब तुम्हें इस धोखे में न रहना पड़ेगा। सत्य-धर्म के सूक्ष्म मार्ग से तुम्हें लेजाना होगा। वत्स एपिसाइडिस! आज से मैं तुम्हारे धार्मिक जीवन में पथ-प्रदर्शक हुआ। जगज्जननी आइसिस के सुप्रतिष्ठित धर्म के युग-युग संचित सूक्ष्म तत्व का रसास्वादन एक बार करते ही, तुम नाशवान संसार में अमरत्व लाभ करोगे।"

एपिसाइडिस बोला—फिर मुझे कौनसी शिक्षा दोगे? कुछ नया मिथ्यातत्व, कुछ नयी प्रवञ्चना!

गम्भीर भाव से आरबेसेस बोला—ना, एपिसाइडिस! मैंने तुम्हें पहले अविश्वास के कूप में फेंक दिया था। अब तुम्हें विश्वास की ऊँची से ऊँची चोटी पर ले जाऊँगा। तुम इतने दिन तक सत्यधर्म के वाह्य रूप का ही दर्शन करते रहे हो। इस समय तुम्हें यथार्थ वस्तु दिखाऊँगा। वत्स! विचारकर देख लो, यथार्थ की कल्पना के बिना प्रतिरूप की कल्पना असम्भव है। यदि जड़ का अस्तित्व न होता, तो छाया का अस्तित्व भी नहीं हो सकता। इसीसे कहता हूँ कि इतने दिन तक नक़ल देखी है, अब तुम्हें यथार्थतत्व दिखाऊँगा। आज रात को ही एक बार मुझसे भेंट करना भूल न जाना।

यह कहकर आरबेसेस ने हाथ पसार दिया। एपिसाइडिस ने भी मंत्र-परिचालित की तरह उसे पकड़ लिया।

एपिसाइडिस ने कुछ देर तक हतबुद्धि की भाँति खड़े रहकर वहाँ से प्रस्थान किया। आरबेसेस धीरे-धीरे क़दम रखता हुआ चला। उसका गन्तव्यस्थान आइयोन की उद्यान-वाटिका थी।

---

[६]

अमृत और विष

आइयोन-भवन का तोरण ज्योंही पार किया, त्योंही एक मीठी हँसी ने आरबेसेस के कानों में प्रवेश किया। वह हँसी ग्लकास के कंठ की थी। उस हँसी ने, ईर्ष्या-विदग्ध शल्य की भाँति, आरबेसेस के हृदय को बेध दिया। कमरे में प्रवेश करके आरबेसेस ने जो दृश्य देखा, उसे देखकर, क्षण भर के लिए, उसके चेहरे पर स्याही दौड़ गयी। चतुर आरबेसेस ने भी, उसे समझकर, शीघ्र ही, बड़ी सावधानी से, उसके मुँह के भाव को बदलने की चेष्टा की।

प्रणयीयुगल के प्रेम-पूर्ण सम्भाषण के बीच आर-बेसेस के यकायक आ जाने से, ग्लकास और आइयोन, दोनों ही, कुछ चौंक उठे।

आसन छोड़, खड़े होकर, अपने स्वाभाविक मधुर स्वर में ग्लकास बोला—आइये महोदय! आप सहसा कहाँ से, चुपके से, यहाँ टपक पड़े?

आरबेसेस एक ख़ाली आसन पर बैठ गया और ग्लकास को बैठने का इशारा करके बोला—अपने आद-मियों से भेंट करने के लिए क्या ख़बर देकर आना होता है?

आइयोन बोली—आप आ गये, बहुत अच्छी बात है। मैं भी अवसर देख रही थी कि आपके साथ ग्लकास की बातचीत करा दूँ। मेरा ऐसा विश्वास है, आप लोग परस्पर ख़ूब प्रेम-भाव रखेंगे।

आरबेसेस बोला—आइयोन ! ग्लकास के साथ मित्रता करने के लिए मुझे अपनी अवस्था कम से कम पन्द्रह-बीस वर्ष कम करनी पड़ेगी। वह युवा है, मैं प्रौढ़ हूँ। सुन्दरियों के चंचल कटाक्ष, स्वच्छ स्फटिक-पात्र में भरा हुआ उज्ज्वल फेनवाला, गले हुए सोने के समान मूल्यवान फैलरनियन मदिरा, नाना प्रकार के चर्व्य, चोष्य, लेह्य, पेय आदि भोजनों से परिपूर्ण नैश भोज, द्यूत क्रीड़ा आदि व्यसन की बातें क्या मुझे शोभा दे सकती है ?

एक दीर्घ निश्वास छोड़कर आरबेसेस ने एक बार आइयोन के मुख पर तृष्णापूर्ण दृष्टि फेंक दी। उसने देखा कि आइयोन का मुँह गम्भीर है। इस गम्भीरता का कारण क्या है, इसे स्थिरकर आरबेसेस ने कहा—आइ-योन ! आज कई दिन से सायंकाल तुमसे मुलाक़ात करने आता हूँ, लेकिन लौट जाता हूँ। कभी तुम्हें मकान पर नहीं देखता।

"आज कई दिन से मैं सन्ध्या-समय, नाव पर, समुद्र-भ्रमण के लिए जाया करती हूँ।"

आइयोन का कंठ-स्वर मानो कुछ विजड़ित था।

आरबेसेस की अन्तर्दृष्टि से उसका कारण न छिपा रह सका। वह बोला—आइयोन ! एक प्रसिद्ध प्रवीण कवि ने कहा है कि अविवाहिता युवती के लिए अन्य पुरुष के साथ ज़्यादा देर तक बाहर रहना अनुचित है।

ग्लकास बोला—वह कवि स्त्रियों से अवश्य घृणा करता होगा। उसकी बात का कोई मूल्य नहीं।

आरबेसेस अवज्ञा-सूचक दृष्टि से ग्लकास की ओर ताककर बोला—वे नारी जाति की पूजा करते थे।

बातों-बातों में ग्लकास और आरबेसेस के बीच वितण्डाबाद बढ़ते देखकर, बहुत ही नम्रता से, आरबेसेस को लक्ष्य करके, आइयोन ने कहा—आज ज्ञानी आरबेसेस मुझ पर इतने नाराज़ क्यों हैं ? बाल्यावस्था से ही, पिता-माता के मर जाने पर, आपकी देख-रेख में रहते हुए, आज हम लोग पिता-माता के शोक को भूल से गये हैं। सम्बन्ध-हीन अभिभावक होने पर भी जो मेरे निजी आत्मीय की तरह स्नेह करनेवाले हैं, वे आज क्यों मुझसे कुपित हैं, इसका कारण मुझे नहीं मालूम हो रहा है। इसके पहले तो उन्होंने मेरे साथ क्रीतदासी के समान व्यवहार नहीं किया था !

ग्लकास को भी अवस्था समझने में देरी नहीं हुई। आरबेसेस के ऊपर उसकी आन्तरिक अवज्ञा और भी

अधिक हो गई। उसने आइयोन से विदा लेकर तुरन्त प्रस्थान किया।

ग्लकास के प्रस्थान करने पर, आरबेसेस एकटक दृष्टि से, कुछ देर तक आइयोन के मुँह की ओर निहारते रहकर, गम्भीर भाव से बोला—आइयोन ! मैं तुम्हारी स्वाधीनता को संयत करना नहीं चाहता, पर मैं तुम्हारे स्वेच्छाचार में बाधा डालना चाहता हूँ। समझ रक्खो कि तुम युवती, रूपवती एवं कुमारी हो। तुम लोगों के सम्बन्ध में सामाजिक विधान और शासन अत्यन्त कठोर है। कठोर होने पर भी वह युगयुगान्तर से चला आता है और सब लोग उसे मानते आ रहे हैं। तुम लोगों को बहुत सावधानी से इस संसार-क्षेत्र में विचरण कर चाहिये।

आइयोन बोली—आपकी बात का अभिप्राय मैं अच्छी तरह से नहीं समझ सकी। आप मेरे हितैषी हैं। हम लोगों को उचित शिक्षा दीजिये।

"आइयोन ! तुम मुझे अपना सच्चा हितैषी समझ कर मुझपर विश्वास रक्खो। यदि ऐसा है, तो मैं उस दीवाल के ऊपर खड़ा हो, मुक्त कंठ से, तुम लोगों को सदुपदेश दे सकता हूँ।

"अवश्य।"

"तो सुनो, इस युवक ग्लकास का चरित्र अत्यन्त कलंकित और भद्र समाज के लिए गर्हित है। उसके साथ

इस प्रकार बेखटके घूमना-फिरना, बातचीत हँसी-मज़ाक करना, इस प्रकार हिलना-डुलना, तुम्हारे लिए क्या बहुत ही निन्दित और दोषप्रद नहीं कहा जा सकता ?"

"ग्लकास मेरे पिता-पितामह के देश का आदमी है। इसी सूत्र से मेरे साथ उसकी बातचीत है। वह भी बहुत थोड़े दिन से—केवल पिछले सप्ताह से।"

"ख़ैर, मैंने समझा था कि तुम लोगों का परिचय बहुत दिनों का है। उसके चरित्र के सम्बन्ध में मैंने जो कठोर मन्तव्य प्रकट किया था, वह तुम्हारे कान में अच्छा लगा या नहीं,यह नहीं जानता। किन्तु वह है सच। तुम्हारे सम्बन्ध में वह जो बातें कहता फिरता है, उन्हें सुनकर तुम्हारे हितैषी और प्रेमी लोगों के मनमें दुःख होना क्या आश्चर्य की बात है ?

"क्यों ? वह मेरे विरुद्ध क्या कहता फिरता है ?

"आइयोन ! मुझसे नाराज़ न होना ! वह जो-जो बातें कहता फिरता है, वे बातें स्त्रीजनोचित शीलता के सम्बन्ध में विशेष हानिप्रद हैं और तुम्हारे भविष्यत्-जीवनार्थ सुख के मार्ग में कण्टक-स्वरूप हैं। आइयोन, क्या तुमने इतने पर भी नहीं समझा ! ऐसे आवारा, चंचल चित्तवाले, युवक क्या तुम्हारे प्रेम के योग्य पात्र हैं ?

ग्लकास के प्रेम में उन्मादिनी आइयोन आरबेसेस

की बात का भावार्थ समझकर, पागल की तरह, खिल खिलाती हुई बोली—प्रेम ! हाँ, ठीक है !

आरबेसेस ने समझ लिया कि आइयोन की व्याधि-सांघातक है। जो विष उसकी नस-नस, मज्जा-मज्जा, में प्रवेश कर चुका है, उसको शान्त करने के लिए उग्र विष की आवश्यकता है। उसकी व्यवस्था करने लिए उसने निश्चय कर लिया।

---

[१०]

बुद्धिमान की कुशलता

शिकार को हाथ से जाते देखकर आरबेसेस का मन व्यग्र हो उठा। आइयोन अपने भाई को बहुत प्यार करती थी। उसकी बात भी मानती थी। जिस किसी उपाय से हो, एपिसाइडिस को हाथ में करके, उसकी सहायता से, उसकी बहन का सर्व्वनाश करना ही आरबेसेस का मुख्य लक्ष्य था। जब उसने देखा कि एपिसाइडिस के मन में यह धारणा बद्धमूल हो गई है कि आइसिस देवी की उपासना केवल धोखे की टट्टी है, तो उसने उसे अन्य उपायों से अपने वश में करने का निश्चय किया। गर्म मिजाज़वाले भोले-भाले युवक के चरित्र को नष्टकर उसे फँसाने के दो

मुख्य साधन थे—सुरा और रमणी। आरबेसेस के घर में से किसी चीज़ की कमी न थी। उस दुष्ट में इसके सिवा एक और भी गुण था, जो बड़ा ही दुर्लभ है। वह उसकी वाक्पटुता थी। चिकनी-चुपड़ी बातों से लोगों को मुग्ध कर लेने में उसके जैसा कोई चतुर न था।

एक दिन सायंकाल आरबेसेस ने अपने घर पर एपिसाइडिस को निमंत्रण देकर बुलाया। अनेक प्रकार के स्वादिष्ट पदार्थों और बहुमूल्य पेय द्रव्यों से उसे तृप्त कर एक चौड़े और सजे-सजाये कमरे में ले गया। वहाँ फूल का बिछौना, फूल ही का आसन था। घर भर फूल की सुगंधि से सुरभित रमणी-कण्ठ की मधुर संगीत-ध्वनि से मुखरित था। चन्द्रमा की स्निग्ध चाँदनी छिटक रही थी। उस समय एपिसाइडिस का मस्तिष्क, ख़ूब शराब पी लेने से, उत्तेजित हो रहा था। विलासिनियों के रूप-पाश में फँसाने में उसे अधिक विलम्ब न लगा। अप्सरा के समान एक सुन्दरी ने उसे अपनी ओर आकृष्ट कर लिया। उस रमणी के रूप से वह कमरा आलोकित हो रहा था। उस के कण्ठ-स्वर से एपिसाइडिस के शरीर के रोयें खड़े हो रहे थे।

विजड़ित स्वर में एपिसाइडिस ने कहा—भिक्षुक आरबेसेस! आप मुझे कहाँ पर लाये हैं? क्या यही स्वर्ग है?

आरबेसेस बोला—खाओ, पियो, मौज करो। तुम अभी नौजवान हो, तुम्हारे हृदय है। तुम्हारी रगों का रक्त इस समय, तरल अग्नि के समान,जैसा लाल है, वैसा ही गर्म भी है। उसे ठंढा करने का एक मात्र साधन विलासिनी का स्निग्ध वक्षस्थल है। शिष्य ! मेरी राय सुनो। सु-अवसर को हाथ से न जाने दो; क्योंकि वह फिर लौट कर नहीं आता। समय रहते जितना चाहो, सांसारिक सुख लूट लो। उधर ध्यान देकर देखो, मरने के बाद क्या रह जायगा ?

भिक्षुक आरबेसेस यह कहकर खड़ा हो गया। उसका लम्बा डीलडौल, उसके अंग-प्रत्यंग के सञ्चालन से और लम्बा जान पड़ने लगा। उसके मुँह पर शुभ्र चन्द्रालोक ने प्रतिफलित होकर एक भयंकर और अस्वाभाविक वर्ण की सृष्टि की। अपने दक्षिण हस्त में लिये हुए, मोटे, विचित्र, ऐन्द्रजालिक डंडे से, कमरे की दीवार पर लटकती हुई, एक काली यवनिका को दिखाकर बोला—शिष्य ! वह जो काला पर्दा देख रहे हो, क्या तुम बता सकते हो कि उस की आड़ में क्या है ?

एपिसाइडिस ने मुँह ऊपर उठाकर कहा—नहीं, महात्मन् ! मैं नहीं जानता हूँ।

बड़े ही गम्भीर स्वर में आरबेसेस बोला—शिष्य ! तुम नहीं जानते, किन्तु मैं जानता हूँ। उसे देखो।

सहसा कमरे में बिजली चमक गई। एक साथ हज़ारों बज्रों की गर्जन के साथ पृथ्वी काँप उठी। पर्दे दो टुकड़े में फटकर हट गये। उसके भीतर से दिखाई पड़ने लगा कि जितनी दूर तक दृष्टि जाती है, केवल अन्धकार-ही-अन्धकार नील अग्निराशि और असंख्य नरकंकाल पड़े हैं। उनकी आँखों के कोटर में अग्नि-शिखा प्रज्वलित हो रही है। उनके मांस-शून्य मुँह में चमकते हुए दाँतों की पंक्तियाँ झलक रही हैं; और उस मुँह से कंकाल की हसी बड़ी ही विकृत और भयावनी जान पड़ती है!

बड़ी ही धीरता से आरबेसेस बोला—शिष्य, डरो मत। मनुष्य-मात्र की यही दशा, यही अन्तिम गति, होती है। हम लोगों के वर्तमान और भविष्यत् में कितना अन्तर है, इसे अच्छी तरह से देख और समझ लो। जीवन की अवधि कितनी थोड़ी है! जीवन कितना अस्थायी और क्षण-भंगुर है! इसीलिए कहते हैं—भोग करो। समय रहते ख़ूब मौज कर लो।

सहसा एक अनुपम सुन्दरी आकर, अपने मृणाल के समान कोमल, उज्ज्वल, सरस बाहु से उसे आलिंगन कर, एक पुष्पशैया पर ले गई। एपिसाइडिस वाह्य ज्ञान खोकर उस स्वप्नराज्य में विहार करने लगा। सहसा एक कातर रुद्ध-यन्त्रणा का दीर्घ निश्वास मानो एपिसाइडिस के मुँह पर

बह गया। उसने पूछा—क्यों सुन्दरी! यह क्या? यहाँ पर आनन्द का राज्य है! फिर तुम दुखी क्यों हो?

रमणी के हृदय में हलचल मच गयी। उसने डर से व्याकुल होते हुए भी मीठे स्वर में कहा—मैं अभागिनी हूँ, क्रीतदासी हूँ। मुझे स्वाधीनता नहीं। मेरा नारी-धर्म नष्ट मत कीजिये। आप मुझे बचा लें।

सर्पदंश के समान एक फलाँग में शैया छोड़कर एपिसाइडिस उठ खड़ा हुआ। एकटक उस रमणी की ओर देखते हुए उसने पूछा—तुम कौन हो?

रमणी ने उत्तर दिया—मैं निडिया हूँ।

एपिसाइडिस ने चिल्लाकर कहा—भिक्षुक आरबेसेस! यही तुम्हारा धर्म है! निडियाको ओर निहार कर उसने कहा—रमणी! तुम चाहे जो कोई भी क्यों न हो, उसे मुझे जानने से कोई मतलब नहीं। तुम्हारी जहाँ इच्छा हो, जा सकती हो।

निडिया काँपते-काँपते वहाँ से बाहर चली गयी। लज्जा, घृणा, और क्षोभ से एपिसाइडिस वहाँ पर अचेत होकर पड़ रहा!

---

[११]

निडिया की मुक्ति

आरबेसेस के घर से बाहर हो, निडिया दौड़ती-हाँफती हुई नगर के उस ओर जा पहुँची, जहाँ पर ग़रीबों के मकान थे। उसी मुहल्ले की अत्यन्त घृणित तंग गली में निडिया का मालिक रहता था। उसका माम था बार्ब्वो। वह नगर के प्रसिद्ध पहलवानों में से था। वह गुण्डई करके, दिन में अपनी क्रीतदासी अन्धी निडिया से फूल बेंचवाकर और रात्रि में उसकी देह से रुपये वसूलकर, उन्हीं से अपने परिवार का पालन-पोषण करता था। उसे बेवक्त लौटते देखकर गुण्डों का सर्दार बार्ब्वो और उसकी स्त्री, दोनों, जल-भुनकर ख़ाक हो गये। कमरे में क़दम रखते ही उसे बेरहमी से पीटने लगे। बेचारी निडिया यन्त्रणा से छटपटाने लगी! उसके शरीर के अंग-प्रत्यंग के ज़ख्मी हो जाने से ख़ून गिरने लगा! वह रोती हुई बोली—मुझे मारते-मारते चाहे मार ही डालो, चाहे जो कुछ करो; लेकिन अब मैं उस दुष्ट भिक्षुक के घर पर न जाऊँगी।

मुँह टेढ़ाकर बार्ब्वो की स्त्री बोली—न जायगी, तो क्या ख़ाक खायगी?

घर के भीतर रोना-चिल्लाना सुनकर रास्ते पर बहुत से लोग इकट्ठे हो गये। ठीक उसी समय ग्लकास और क्लडियास

उसी रास्ते से होकर जा रहे थे । निडिया के गले की आवाज सुनकर ग्लकास चौंक उठा और बोला—देखो तो क्लडियास ! कौन रोती है ? गला तो परिचित जान पड़ता है ।

क्लडियास बोला—इस दरिद्र मुहल्ले में हम लोगों के जान-पहचान का आदमी भला कहाँ से आयेगा ?

किन्तु ग्लकास उस उत्तर से सन्तुष्ट न हुआ । जिस घर के अन्दर से वह रोने की आवाज़ आ रही थी, उसके दरवाजे के पास जाकर ग्लकास ने ज़ोर से खटखटाया ।

बाव्वों की स्त्री ने यह समझकर कि कोई नया ग्राहक आया है, झटपट आकर द्वार खोल दिया ।

उसी समय निडिया चिल्लाकर रो उठी । ग्लकास बोला—यह क्या ! यह तो हम लोगों की परिचित—अन्धी—फूलवाली है !!

ग्लकास ने दौड़कर, स्नेह से, निडिया को उठा, छाती से लगाकर, कहा—निडिया ! यह देखो, मैं आगया हूँ। अब तुम्हें डरने की कोई बात नहीं ।

बाव्वों की पत्नी की ओर रुखाई के साथ ताककर, ग्लकास बोला—भली औरत ! तेरे बाल पक गये हैं । तुम किस वजह से इस बेचारी लड़की के ऊपर ऐसी निर्दयता का व्यवहार कर रही हो ?

बाव्वों की स्त्री क्रूरदृष्टि से ग्लकास की ओर ताककर

हाथ-पैर पटकती हुई बोली—मेरी खुशी ! हम लोगों के शरीर की गाढ़ी कमाई के पैसे से ख़रीदी हुई चीज़ है। तुम्हारे सिर में क्यों पीड़ा पैदा हुई बाबू ! अगर तुम्हारे अन्दर इतना दया का भाव है, तो मछली की तरह चमकते हुए, ठनाठन, उतने रुपये गिन दो, जितने पर मैंने इसे ख़रीदा है, और इसके अतिरिक्त पन्द्रह-सोलह वर्ष से बैठाकर जितना खिलाया है। तब देखूँ, तुम्हारी दया ! तुम्हारे जैसे ठाट-बाटवाले बहुत बाबुओं को मैंने देखा है।

ग्लकास बोला—तो क्या इस लड़की को तुम मेरे हाथ बेचोगी ?

वह बोली—क्यों न बेचूँगी ? उचित मूल्य मिलने पर अवश्य बेचूँगी।

ग्लकास बोला—कितने रुपये लोगी ?

बाव्वों की स्त्री ने असम्भव दाम कहकर ग्लकास को विदा करना चाहा। वह बोली—यह लड़की सुन्दरी है, काम करने में चतुर और रोज़गार करनेवाली है। मैंने छः मुहर पर इसे ख़रीदा था। पन्द्रह-सोलह वर्ष से इसे खिलाने-पिलाने में मेरा कमसे कम छः मुहर और ख़र्च हुआ है। इसके अतिरिक्त आठ मुहर मुनाफ़े पर मैं इसे बेच सकती हूँ।

ग्लकास चटपट पाकेट से रुपयों से एक थैली निकालकर, एक-एक करके, तीस स्वर्ण-मुद्रा मेज़ के ऊपर गिनकर,

बाल्वों की पत्नी से बोला—तुम इस लड़की के लिए बीस मुहरें चाहती हो। मैं सन्तुष्ट होकर तुम्हें तीस मुहरें देता हूँ। हाकिम पैनसा मेरे मित्र हैं। चलो, अभी चलकर उनके सामने बेंचने का काग़ज़ लिख दो।

इतनी मुहरों का लोभ संवरण करना उसके लिए बिलकुल असंभव था। उसने ज़ुबान से और कुछ नहीं कहा। मुहरों को एक-एक करके गिनकर और उन्हें अच्छी तरह से बजाकर और परखकर अपने पुराने अँगरखे की बगली में रखती हुई बोली—चलिये बाबू! अभी चलकर काग़ज़-पत्र लिखे देती हूँ।

इसके बाद निडिया की ओर मुख़ातिब होकर बोली —जाओ निडिया! अब हरजाईपन से मुँह छिपाकर तुम्हें रोना न पड़ेगा। तुम्हारे पास जो अधिक कपड़े-लत्ते हों, उनकी गठरी बनाकर, इस भलेमानस के साथ, उनके घर जाओ। देखना, घर के अन्दर रखा हुआ बेंत का बाक्स, फूल रखने को झोली, जिसे फूल बेचने के लिए दिया गया था, उन्हें भूलकर भी न ले जाना।

अब निडिया ने ग्लकास की ओर अपनी दृष्टि-शक्ति से रहित आँखों को फिराकर, मौन भाव से, अपनी हार्दिक कृतज्ञता प्रकट की। उसके होंठ आवेग से कुछ-कुछ काँप रहे थे। उसने पूछा—क्या सचमुच तुमने मुझे इनके

हाथ से मुक्त कर दिया ! क्या सचमुच, आप मुझे ले चलेंगे ! क्या मुझे अब यहाँ पर न रहना पड़ेगा ?

ग्लकास बोला—हाँ निडिया, तुम्हें बिलकुल छुटकारा मिल गया। केवल उसी के हाथ से नहीं, कठोर दासता के हाथ से भी !

ग्लकास की बात सुनकर निडिया, ख़ुशी के मारे, फूल उठी। उसने पूछा—मुझे आपके यहाँ चलकर क्या-क्या करना पड़ेगा ?

ग्लकास बोला—पम्पियाई की सर्व्वश्रेष्ठ सुन्दरी के निकट तुम्हें दो-चार देशी गाने सुनाने पड़ेंगे। केवल इतना ही करना पड़ेगा।

सहसा निडिया का चेहरा कुछ पीला पड़ गया। उसके होठ पर की हँसी मलिन पड़ गई। निराशा का क्षीण श्वास छोड़ती हुई वह बोली—तो क्या आप मुझे अपने घर पर न रखेंगे, ग्लकास ?

ग्लकास बोला—इस समय कुछ दिन के लिए नहीं। इसके बाद तुम मेरे ही घर पर रहोगी। अब चलो, रात अधिक बीत चली।

सभी कमरे से बाहर हुए। ग्लकास सब के आगे-आगे चला; निडिया सबके पीछे-पीछे।

---

[१२]

निडिया की तत्परता

दूसरे दिन, तड़के, चारपाई छोड़कर, कमरे के जँगले के पास खड़े हो, ग्लकास ने देखा कि निडिया हाथ में करवा लेकर, बग़ीचे में, मूर्तिमती वन-देवी के समान फिरती हुई, फूलों के पौधों के थालों में, जल डाल रही है। उसके चेहरे पर हँसी की रेखाएँ फूट रही हैं। उसपर उगते हुए बाल-सूर्य्य की किरणें पड़कर उसे और लाल बना रही हैं।

निडिया यह जानकर कि ग्लकास की नींद टूट गई है, नये खिले हुए सुगंधित फूलों और सुन्दर पत्तों का अर्घ्य लेकर अपने देवता को उपहार देने को आई। इधर जिस प्रकार बालिका कामदेव के बाणों से व्यथित हो रही थी, उधर ग्लकास भी अपनी हृदयेश्वरी आइयोन की चिन्ता में विह्वल होकर अपने को भूल रहे थे। निडिया को फूलों का गुच्छा लेकर आते देख उन्होंने पूछा—निडिया ! तू तो बहुत सवेरे उठती है ? इतने फूलों के तोड़ने और उनका गुलदस्ता बनाने में तो बहुत समय लगा होगा। पिछली रात को यहाँ पर तुझे अच्छी नींद आई न ? किसी तरह की असुविधा तो नहीं जान पड़ती है ?

निडिया फूलों के गुच्छे को मेज़ पर, फूलदानी में, रखती

हुई बोली—नहीं ग्लकास ! मुझे अच्छी नींद आई। सवेरे उठने की मेरी लड़कपन की आदत है।

ग्लकास ने पूछा—मैं तुझे तुम्हारे पहले मालिक के यहाँ से लाया हूँ, इससे तुम सुखी हो या दुखी ?

कृतज्ञता-पूर्ण भाषा में निडिया ने कहा—इतना सुख मुझे जन्म-भर में कभी नहीं मिला होगा।

ग्लकास बोला—निडिया ! मैं इससे भी अधिक तुम्हारे सुख का इन्तज़ाम करना चाहता हूँ । तुमसे मेरा एक अनुरोध है। क्या तुम उसे मानोगी ? उसके स्वीकार करने पर मैं बहुत सुखी हूँगा।

निडिया बोली—अपने प्राण-दाता स्वामी ग्लकास को सुखी रखने के लिए मैं अपने तुच्छ प्राणों को भी विसर्जित कर सकती हूँ।

ग्लकास बोला—सुनो निडिया ! तुम युवती हो। तुम्हारे दिल है। इसीसे तुम्हारे सामने दिल खोलकर मनकी बात कहने में मुझे कोई बाधा नहीं। तुम मेरा दुःख अवश्य समझोगी और उसे दूर करने की चेष्टा भी करोगी।

निडिया ने बड़ी उत्सुकता के साथ पूछा—मुझे क्या करना होगा ग्लकास ?

ग्लकास बोला—इस शहर में आइयोन नामक एक सुन्दरी रहती है। क्या तुम उसे पहचानती हो ?

कुछ चौंककर निडिया ने उत्तर दिया— नहीं ग्लकास,

मेरे साथ उसकी जान-पहचान नहीं है। फिर भी मैंने उसका नाम सुना है। मैंने यह भी सुना है कि वह बहुत सुन्दरी और सर्व गुणागरी है।

ग्लकास बोला—उस असाधारण रमणी को मैं प्राणों से अधिक चाहता हूँ। मैं उसे पाये बिना अधिक दिन तक नहीं बचा रह सकता। उसे मुझे प्राप्त करना ही पड़ेगा।

इस बार निडिया का सिर से पैर तक समस्त शरीर वेदना से सिहर उठा। उसने ग्लकास की बातों का कोई उत्तर नहीं दिया।

कुछ देर के बाद निडिया ने पूछा—इसके लिए मुझे क्या करना पड़ेगा, कहिये।

ग्लकास बोला—तुम्हें, आइयोन के पास जाकर, यह कहना पड़ेगा कि मैं उसे प्राणों से भी अधिक चाहता हूँ।

भयभीत होकर निडिया ने कहा—क्या मुझे उसके पास जाना पड़ेगा? ग्लकास! क्या आपको छोड़कर जाना पड़ेगा?

ग्लकास बोला—हाँ निडिया! बहुत दिन के लिए नहीं; बहुत थोड़े समय के लिए। यदि भगवान ने प्रार्थना सुनली, तो यह निश्चय जानो निडिया, मैं शीघ्र ही उसे ब्याहूँगा। उस समय आइयोन मेरे ही यहाँ रहेगी। उस समय तुम, हम दोनों का स्नेह पाकर, बहुत सुखी होगी।

निडिया की आँखें आसुओं से भर आईं !

ग्लकास झटपट जाकर, अपने रूमाल के आँचल से, उसके दोनों नेत्रों को पोंछते हुए बोला—निडिया ! रोती क्यों हो ? तुम्हें जिस काम के लिए भेजता हूँ, उससे तुम्हें दुखी होने की कोई आवश्यकता नहीं। तुमने आइयोन को अभी देखा नहीं है, इसी से ऐसा कहती हो। वह बहुत शान्त स्वभाववाली, दूसरो के दुःख से बहुत दुखी होने वाली, दया की मूर्ति है। वासंती समीरण के समान वह अत्यन्त स्निग्ध और सुख देनेवाली है। वह तुम्हें अपनी सगी बहन की तरह मानेगी, अपने आत्मीय की तरह स्नेह-भरी आँखों से देखेगी।

गवाँर लड़की अब भी रो रही है। नहीं, रोओ मत। मैं तुम्हें, तुम्हारी इच्छा के विरुद्ध, नहीं भेजना चाहता !

निडिया ने शान्त होकर कहा—यदि वहाँ पर मेरे जाने से आपका कोई अभीष्ट सिद्ध हो, तो मैं ख़ुशी से आपके आदेश का पालन कर सकती हूँ।

ग्लकास ने प्रसन्न चित्त होकर, निडिया के हाथ को चूम कर, कहा—निडियाँ ! मेरी इच्छानुसार काम करने पर मैं तुमसे बहुत प्रसन्न हूँगा। तुम भी देख लोगी कि तुम्हारे सुख के लिए मैं जो इन्तज़ाम करूँगा, वह कितना सुन्दर—कितना ! आनन्द देनेवाला होगा ! निडिया, तू सुखी हुई न ?

एक दीर्घ निश्वास छोड़कर निडिया ने कहा—मैं क्रीतदासी हूँ। मेरे सुख और दुःख को आप क्या पूछते हैं?

ग्लकास बोला—नहीं निडिया! अब तुम क्रीतदासी नहीं हो, मैं ने तुम्हें ख़रीद लिया है, तुम्हें दासत्व-बन्धन से मुक्त कर दिया है। इस समय तुम बिलकुल स्वतंत्र हो।

निडिया ज़ोर से रोती हुई बोली—ग्लकास! अगर तुम फिर स्वतंत्रताकी बात चलाओगे तो मेरे मन को बहुत कष्ट होगा। तुम्हारी क्रीतदासी होकर रहने ही में मुझे आनन्द है—तुम्हारी सेवा करने ही में मुझे सुख है!

ग्लकास बोला—कुछ दिन के बाद ऐसा ही होगा। तुम मेरे पास ही रहोगी। तुम्हें मुझे छोड़कर अन्यत्र नहीं जाना पड़ेगा। इस समय, केवल कुछ दिनों के लिए, तुम्हें आइयोन के मकान पर जाकर रहना पड़ेगा।

निडिया बोली—अच्छा, मुझे वहाँ जाकर क्या करना होगा, सो तो बताइये।

ग्लकास बोला—तुम चुनकर जो एक ताज़े फूलों का गुच्छा लायी हो, उसे ले जाकर आइयोन को उपहार में दो। साथ में इस पत्र को भी दे देना।

निडिया ने एक झोली फूल और ग्लैकास की चिट्ठी लेकर आइयोन के घर पर जाकर उससे भेंट की।

आइयोन ने ग्लकास के भेजे हुए उपहार को लेकर फूलों के गुच्छे को अपने बैठने के पासवाले मेज़ के ठीक

बीच में रख दिया और चिट्ठी खोलकर उसे दो-तीन बार आद्योपान्त पढ़ा।

ग्लकास ने लिखा था—

"आइयोन !

पाँच-छः दिन से मैं तुमसे भेंट करने को जाता हूँ, और वापस आता हूँ। जिस समय जाता हूँ, उसी समय तुम्हारे मकान के सदर दरवाज़े को बन्द पाता हूँ। बाहर किसी दास के साथ मुलाक़ात होने पर पूछता हूँ कि "आइयोन अच्छी तरह से है न?" तो वे इसके उत्तर में केवल यही कह देते हैं—"हाँ"। इससे अधिक उससे और कुछ पूछने का साहस नहीं होता। क्यों आइयोन! क्या तुम मुझसे नाराज़ हो गई हो? क्या इसी से मुझसे मुलाक़ात करते में तुम्हें घृणा मालूम होती है? नहीं सुन्दरी! मेरा कोई अपराध नहीं है। क्या किसी ने तुमसे मेरी शिकायत की है? आइयोन! क्या तुम निन्दकों की बातों पर विश्वास करती हो? अगर आज मेरे सम्पूर्ण पूज्य देवता मेरे पास आकर आइयोन की निन्दा करें, तो मैं तो उनकी बातपर ध्यान न दूँगा; तो तुम्हीं क्यों निन्दकों की बातों पर विश्वास करती हो? ना आइयोन! ऐसा न करो। तुम्हारे लिए यह तुच्छ उपहार—अपने बाग़ के फूल—भेजता हूँ। इसे क्या स्वीकार करोगी? और एक वस्तु भेजता हूँ। यह जो क्षुद्र उपहार लिये हुई तुम्हारे पास जा रही है, वह सुन्दर फूल से भी

कोमल है। किन्तु वह बड़ी अभागिन है। वह अन्धी है। क्या तुम इसे आश्रय दोगी ?

तुम्हारा प्रेमी—

ग्लकास

पत्र को पढ़कर आइयोन की आँखों में आँसू छलछला आये। उसने धोखेबाज़ के धोखे में पड़कर अपने हृदयेश्वर के हृदय को अकारण इतनी व्यथा पहुँचाई, यह जानकर उसे बहुत ही आत्म-ग्लानि हुई।

निडिया की ओर देखकर आइयोन ने पूछा—सुन्दरी, तुम्हारा नाम क्या है ?

उसने उत्तर दिया—मेरा नाम निडिया है।

"तुम किस देश की हो ?"

"थेसाली देश की।"

आइयोन ने कहा—तुम खड़ी क्यों हो बहन ? बैठ जाओ। हम लोग एक ही देश की रहनेवाली हैं। तुम मेरी सगी बहन की तरह मेरे पास रहोगी। तुम्हें किसी तरह की तकलीफ़ न होगी। तुम्हें कोई मेहनत का काम न करना पड़ेगा। ग्लकास से भी तुम्हारी बहुधा भेंट हुआ करेगी। आज ही रात को मैं, उन्हें, यहाँ पर भोजन करने के लिए, निमंत्रित करती हूँ।

निडिया ने विस्मित होकर कहा—क्या आप आज

ही ग्लकास को यहाँ पर निमंत्रित करेंगी ? मैं आशीर्वाद देती हूँ, आप सदा सुखी रहें।

आइयोन ने पूछा—क्यों बहन ! मैं ग्लकास को निमंत्रित करती हूँ, इससे तुम्हें प्रसन्नता क्यों हो रही है ?

निडिया ने कहा—बहन ! आप नहीं जानती हैं कि ग्लकास क्या हैं। वे मनुष्य नहीं, देवता हैं। उन्हें सुखी देखकर मुझे सुख मिलना ही चाहिये ! यदि आपकी इच्छा हो, तो आपका पत्र मैं ही जाकर उन्हें दे आऊँ।

आइयोन ने कहा—तुम क्यों तकलीफ़ करोगी निडिया ! मैं नौकर के हाथ पत्र भेजे देती हूँ।

निडिया ने कहा—ग्लकास के लिए मुझे ज़रा भी तक़लीफ नहीं होती। मैं ही जाऊँगी। शाम होने के पहले ही मैं फिर आपके पास लौट आऊँगी और कल से आप ही के पास रहूँगी।

आइयोन ने कहा—अच्छा निडिया, मैं तुम्हारी इच्छा में बाधा देना नहीं चाहती। मैं अभी ग्लकास को निमंत्रण का पत्र लिखे देती हूँ। तुम ले जाओ।

जिस अभीष्ट साधन के लिए, ग्लकास ने, निडिया को, आइयोन के पास भेजा था, उसे ख़ुशी के साथ पूरा करके, निडिया, आइयोन के लिखे हुए पत्र को लेकर, ग्लकास के पास पहुँची। ग्लकास अत्यन्त प्रसन्न हुआ और उसे हृदय से धन्यवाद देने लगा।

उसी दिन शाम को निडिया जब आइयोन के घर पर लौटकर आयी, तो वह नहीं थी—कहीं बाहर चली गयी थी।

निडिया ने एक नौकर से पूछा—मालकिन कहाँ गई हैं; बता सकते हो ?

नौकर ने उत्तर दिया—मिश्र के भिक्षुक आरबेसेस के घर पर।

निडिया ने आश्चर्य्य में भरकर कहा—क्या आरबेसेस से उनकी जान-पहचान ज़्यादा है ?

नौकर ने कहा—हाँ।

निडिया ने पूछा—क्या वह अक्सर उनसे भेंट-मुलाक़ात करने को जाया करती हैं ?

नौकर ने कहा—नहीं, आज पहले-पहल गई हैं।

निडिया ने मीठे स्वर में कहा—जान पड़ता है, मालकिन यह नहीं जानतीं कि आरबेसेस किस प्रकृति का मनुष्य है।

निडिया वहाँ पर अधिक देर तक खड़ी न रह सकी। उसी समय लौटकर, ग्लकास को यह ख़बर देने के लिए, उसके घर पर, आयी। उस समय ग्लक़ास सान्ध्य भ्रमण के लिए बाहर चले गये थे। अब वह बेचारी क्या करती, किस तरह पत्नी को बहेलिये के जाल से छुड़ाऊँ, इस भावना से वह व्याकुल हो उठी। उसने ग्लकास के एक

नौकर से पूछा—क्या तुम मुझसे कह सकते हो कि आइ-योन का कोई निजी आत्मीय पम्पियाई में है, या नहीं ?

नौकर ने कहा—क्यों नहीं है ? क्या तुम नहीं जानती कि उसका सगा भाई मिश्र की देवी आइसिस का एक पुजारी है ?

निडिया—होगा, उसका नाम क्या है ?

नौकर ने जवाब दिया—उसका नाम एपिसाइडिस है। क्यों, तुम्हें उसकी क्या आवश्यकता है ?

निडिया उसकी बात का कोई उत्तर न देकर, फ़ुर्ती से, ग्लकास के मकान से बाहर हुई और सीधे आइसिस देवी के मन्दिर की ओर चल पड़ी। मन्दिर को पहुँचकर उसने कातर कण्ठ से चिल्लाना और ज़ोर-ज़ोर से दरवाज़ा खटखटाना आरम्भ कर दिया।

एक पुजारी ने भीतर से पुकारा—तुम कौन हो ? किस अभिप्राय से असमय आकर हम लोगों की पूजा में बाधा पहुँचती हो ?

निडिया ने करुण स्वर में कहा—मन्दिर में कौन है ? जल्दी किवाड़ खोलो। एक स्त्री बहुत आपत्ति में पड़ी है। उसका उद्धार करो।

उस रमणी के कण्ठ का करुण चीत्कार सुनकर, एक पुजारी ने, मन्दिर का फाटक खोलकर, उससे पूछा—भली लड़की ! तू क्या चाहती है ?

निडिया ने कहा—यहाँ पर एपिसाइडिस नामक कोई पुजारी हैं। उनसे मुझे कुछ विशेष काम है। मैं उनसे मुलाक़ात करना चाहती हूँ।

पुजारी ने विस्मित होकर कहा—भली लड़की! मेरा ही नाम एपिसाइडिस है। किन्तु, मुझे जहाँ तक याद है, मैंने तुम्हें कहीं पर नहीं देखा है। क्या तुम मुझे पहचानती हो?

निडिया ने कहा—आपने मुझे पहले ज़रूर देखा है। फिर भी वह देखना-सुनना जिस भाव से हुआ, उसे हम दोनों आदमियों को भुला ही देना अच्छा है। क्या आप को याद है, भिक्षुक आरबेसेस के घर पर उस रात के भोज में ......! ......मैं निडिया हूँ।

सर्प-दंश की तरह चौंककर एपिसाइडिस ने कहा—मुझसे तुम्हें क्या प्रयोजन है?

निडिया ने कहा—प्रयोजन!—एक स्त्री को बहेलिये के जाल से रक्षा करनी है। महाशय, सुन्दरी आइयोन आपकी कौन है?

एपिसाइडिस बोला—वह मेरी सगी बहन है। क्यों, उसे क्या हुआ?

निडिया ने कहा—वह बड़ी भारी विपत्ति में पड़ी है। शीघ्र ही मेरे साथ आइये। वह धूर्त के जाल में फँसी हैं। वह एक लम्पट के हाथ में पड़ी है। सम्भव है, अब तक वह उसका सर्वनाश कर चुका हो। आइये, सोचने

विचारने का समय नहीं है। में अंधी हूँ। तो भी, भगवान् की इच्छा से, अपने स्पर्शेन्द्रिय की सहायता से, आपको रास्ता दिखाती हुई ले जा सकती हूँ।

एपिसाइडिस ने कहा—कौन वह धूर्त है? कौन वह लम्पट है?

निडिया ने कहा—जिसने आपका सर्व्वनाश किया है, वही आपकी बहन का भी सतीत्व बिगाड़ना चाहता है। वह और कोई नहीं, मिश्र का भिक्षुक—दगाबाज़ आरबेसेस है।

एपिसाइडिस ने और विलम्ब नहीं किया। निडिया आगे-आगे रास्ता दिखाती हुई चली। घर के कोने से एक नंगी तलवार लेकर एपिसाइडिस उसके पीछे-पीछे चला।

---

[१३]

बहेलिये के जाल में चिड़िया

भिक्षुक आरबेसेस अपने महल के ऊपरी तल्ले पर, एक चौड़े कमरे में अकेला बैठकर, खुले हुए जंगले से, एक एक बार असंख्य ताराओं को देखता था और अपने सामने, एक ताँबे के बने मेज़ पर, सोने की क़लम से, अंक लिखकर कुछ गिन रहा था। सुनील आकाश एकदम स्वच्छ था। केवल विसूवियस की गगन-चुम्बी चोटी के

पास श्यामघन का एक टुकड़ा दिखाई पड़ता था। आरबेसेस इस प्रकार चित्त लगाकर देख रहा था कि उसके ललाट पर की शोणित-वाहिनी रगें फूल उठी थीं और उनमें गांठ जैसी पड़ गई थी। वह बहुत देर तक इस भाव में रहकर, विरक्त हो, अपनी क़लम मेज़ पर रखकर, बोला—

"वही, एक ही फल!—एक ही बात है। अपने भावी भाग्य में एक अत्यन्त भयंकर दुर्घटना की सूचना पाता हूँ। बलवान अंगारक ग्रह शनैश्चर के साथ, मेरे मारक क्षेत्र में संस्थित हो, किसी भारी आघात से रक्तपात और कठिन प्राणान्तक पीड़ा की सूचना देता है। चाहे ग्रह-मंडली कुछ भी क्यों न कहे, अपनी दुर्दमनीय शक्ति के बल पर, मेरा मन, अब भी बहुत आशा दिला रहा है। अनेक विपत्तियों के बीच में भी मैं सफलता की तीव्र ज्योति, अच्छी तरह से, देख रहा हूँ।"

आरबेसेस आसन छोड़कर उठा और खुले हुए जँगले के पास खड़ा होकर, सुदूर चन्द्रमा की चाँदनी में चमकते हुए अग्निगर्भ-विसूवियस की चोटी की ओर, एकटक से देखते-देखते अपने मन ही मैन कहने लगा—

"हे युग-युगान्तर के इतिहास के प्रत्यक्षद्रष्टा भूधर-श्रेष्ठ! बाहर से जैसा तुम्हारा रंग-रूप साँवला है और भीतर गर्मी से पिघलनेवाली धातु और लपलपाती हुई आग की तीव्र ज्वाला है, ठीक वही मेरी भी दशा है। मेरा

हृदय भी ठीक तुम्हारे ही तरह अन्तर्अग्नि से जला करता है। उस ज्वाला के शान्त करने की एक मात्र महौषध है सुन्दरी आइयोन का प्रेम। चाहे छल से हो, या बल से, आइयोन को अंकशायिनी बनाना ही पड़ेगा। उसे यहाँ पर लाने के लिए आदमी भेजे देर हुई! वह अब तक क्यों नहीं आई! तो क्या, वह मेरे षडयन्त्र को समझ गयी है? नहीं—यह कभी सम्भव नहीं।"

भिक्षुक आरबेसेस जिस समय इस प्रकार उत्सुक और चिन्ता में मग्न हो रहे थे, उसी समय एक नौकर ने आकर ख़बर दी कि आइयोन आई हुई है। आरबेसेस चटपट उठकर मुस्कराते हुए उसे लिवा आया। उस कमरे में, जो पौराणिक चित्रावली से सुशोभित हो रहा था, और संगमरमर-रचित, देखने में भयंकर, पुराने मिश्र के देवी-देवताओं की पत्थर की मूर्तियों से भरा हुआ था, क़दम रखते ही, न जाने क्यों, आइयोन का सारा शरीर एकदम भय से काँप उठा!

आरबेसेस आइयोन का हाथ चूमते हुए बोला—सुन्दरी आइयोन! तुम्हारे कमरे में क़दम रखते ही मेरे कमरे के सारे दीपक मानो फीके पड़ गये। जानती हो, क्यों? तुम्हारे असाधारण लावण्य की प्रभा से! तुम्हारे मनो-मुग्धकारी अंग-सौरभ ने, मेरे कमरे में खिले हुए फूलों और कमरे में छिड़के हुए पुष्प-सार को भी मानो मातकर दिया।

आइयोन ने कहा—आप मेरे सामने इस प्रकार बात-चीत न करें। आप मेरे शिक्षा-गुरु हैं। आपने ही तो मुझे सिखाया है कि इन सार-रहित चाटुकारी की बातों का मूल्य एक कौड़ी भी नहीं है।

आइयोन की बातों में कुछ ऐसी सरलता और माद-कता थी कि ज्ञानी, मनोविज्ञान का ज्ञाता, अहंकारी आरबे-सेस भी कुत्ते की तरह उसका पैर चाटने को तैयार था।

आरबेसेस ने कहा—नहीं आइयोन! मैंने जो कुछ कहा है, उसका एक वाक्य भी झूठा नहीं है। भिक्षुक आरबेसेस का उन्नत शिर एकमात्र जगन्माता आइसिस के अतिरिक्त और किसी देवता के सम्मुख नत नहीं होता था। किन्तु उसका वह अभिमान आज दूर हो गया। तुम्हारी प्रसन्नता के लिए मैं तुम्हारा तलवा चाटने को भी तैयार हूँ!

यह कहकर आरबेसेस एक बार आइयोन के पैरों के पास जा, घुटना टेककर, बैठ गया; उसने दोनों हाथों से उसका पैर मज़बूती से जकड़ लिया।

आइयोन बोली—आप यह क्या कर रहे हैं भिक्षुक आरबेसेस! आप मुझसे अवस्था में बड़े, मेरे विशेष हितैषी, अभिभावक और शिक्षा-गुरु हैं। क्या आपको मुझे इस प्रकार की दृष्टि से देखना उचित है? विशेषकर ऐसी दशा में, जब कि मैं एक पुरुष को प्यार करती हूँ। आपकी

यह अनुचित आशा किस प्रकार पूरी हो सकती है, आपही बतलाइये ?

बिकट अट्टहासकर भिक्षुक आरबेसेस चिल्लाकर बोला—तुम किसे प्यार करती हो ? उस तुच्छ, लम्पट, ग्रीक ग्लकास को ! सुनो आइयोन ! तुम मेरी न होगी, यह बात मुझसे सही जा सकती है; किन्तु तुम, मेरी आँखों के सामने उस निर्बल, क्षुद्र पतिंगे को छाती से लगाओ, यह मैं किसी तरह भी नहीं सहन कर सकता। इसके लिये यदि अपने हाथों से तुम्हारी क़ब्र भी खोदनी पड़े, तो यह भी मुझे स्वीकार है। आओ प्रियतमे ! मुझे अधिक न जलाओ। तुम मेरी हो, और किसी की नहीं हो !

यह कहकर आरबेसेस उठ खड़ा हुआ और आइयोन की देह से लिपट गया। उस समय आइयोन की देह में मस्त हस्तिनी का-सा बल आ गया था। उसने आरबेसेस के सीने में ज़ोर से ऐसी लात जमायी कि क्षण भर के लिए उसका सिर चक्कर खा गया। वह क्रोध से, बाण-विद्ध सिंह की तरह गर्जते हुए, उसपर पुनः आक्रमण करने का उद्योग करने लगा।

इतने में, पीछे से, दो आदमियों ने कमरे में प्रवेश किया। आगे ग्लकास था और उसके पीछे नंगी तलवार लिये आइयोन का भाई एपिसाइडिस। ग्लकास ने अपने दाहने हाथ से आरबेसेस की गरदन भर दबाई। मुख का श्वास

छीन लेने पर सिंह जिस प्रकार विक्षिप्त हो उठता है, उसी प्रकार, उन्मत्त की तरह गर्जते हुए, वह बोला—तुम कौन हो?

ग्लकास बोला—तुम्हारा काल! अपने शत्रु की गर्दन छोड़कर, उसने दोनों हाथों से जकड़कर कुश्ती का एक ऐसा दाँव लगाया कि आरबेसेस दो-तीन हाथ दूर जाकर चित्त गिर पड़ा। इस पराजय से उसकी क्रोधाग्नि सौगुनी भड़क उठी। उसने एक फलांग में आकर ग्लकास को धर दबाया। वे दोनों आदमी एक-दूसरे को ढकेलते-ढकेलते, घर के कोने में, एक काले रंग के पत्थर के बने खम्भे के तले जा पहुँचे। खम्भे के ऊपर गड़ा हुआ एक बड़ा भारी कटा मुण्ड था। आरबेसेस एक क्षण के लिए ग्लकास को छोड़कर, उस खम्भे को पकड़कर, उसके ऊपर वाले कटे मुण्ड की ओर ताककर, एक अज्ञात भाषा में, कोई मन्त्र उच्चारण करते हुए बोला—माँ रणचण्डी! लो, नरबलि लो!

उस विकट मूर्तिवाले देवता ने मानो उसकी पुकार सुनली। उसके विकृत भयावने चेहरे से घृणापूर्ण हँसी की रेखा दिखाई पड़ी। उसे देखकर डर से ग्लकास की अन्तरात्मा काँप उठी। उसी क्षण दौड़कर आरबेसेस, एपिसाइडिस के हाथ से फुर्ती से तलवार छीन कर, ग्लकास की ओर दौड़ा। ग्लकास को अपनी ग़लती दिखाई पड़ी। उसने मनही मन अपने इष्टदेवता का नाम स्मरण किया। सहसा पृथ्वी थर-थर काँपने लगी। उस

के अन्दर से, एक ही साथ, सैकड़ों बज्रों के गर्जन की आवाज़ सुनाई पड़ने लगी। जिस खम्भे पर पत्थर का कटा मुण्ड था, वह खम्भा हवा से हिलाये हुए केले के समान हिलते-हिलते एकबारगी आरबेसेस के सिर पर गिर पड़ा। उसकी गर्दन पर ज़ोरों की चोट लगी। वह वहीं पर बैठ गया। उसमें उठने की भी शक्ति नहीं रह गई। उसके शरीर से लगातार रक्त-धारा बहने लगी। उसके कपड़े भीग गये। आइयोन भी न जाने कबकी यह सब देख सुनकर मूर्च्छित हो गई थी, इसे ग्लकास वा एपिसाइडिस में से किसी ने भी नहीं देखा था। ग्लकास ने जब देखा कि दुष्ट को दण्ड देने के लिए भगवान का बज्र अपने आप ही गिरा है, और उन लोगों को कोई भय नहीं है, तो वह उस समय फ़ौरन दौड़कर, दोनों हाथों से आइयोन को गोदी में उठा, उस नारकीय कमरे से बाहर ले चला। एपिसाइडिस भी उसके पीछे-पीछे चला। मकान से बाहर होकर उन लोगों ने देखा कि रास्ता लोगों से भरा है। लड़के, बूढ़े, जवान, सभी के मुँह पर भयंकर भय का चिन्ह और एक ही बात है—भूकंप, भूकंप !

उस समय निडिया, रास्ते के बग़ल में, एक छोटे से टीलेपर, एक बड़े केतकी-वन के बग़ल में बैठकर, आँसुओं की झड़ी लगा रही थी ! आइयोन तब भी होश में नहीं आयी थी।

———

[१४]

नौका-भ्रमण

पिछली घटना के कई दिन बाद, निर्मल चाँदनी-वाली एक सन्ध्या को, ग्लकास, आइयोन और निडिया को साथ लेकर, सागर के वक्ष पर, नौका-भ्रमण के लिए बाहर निकला। बिना तरंगवाले शान्त समुद्र के वक्ष में उनकी नौका हंस की चाल से जा रही थी। मुस्कराती हुई आइयोन नौका के बीचोबीच में, एक आसन पर बैठकर, एकटक ग्लकास के मुँह की ओर निहार रही थी। निडिया उसके बग़ल में बैठकर वीणा बजाकर गा रही थी। ग्लकास उस गानके ताल पर धीरे-धीरे डाँड़ चला रहा था। आइयोन को नर-पिशाच आरबेसेस के हाथ से उद्धार करके ले आने के बाद, आज ही, उन्होंने, पहले पहल, आमोद-प्रमोद का अवसर पाया था।

आइयोन ने पूछा—उस दिन पिशाच के इरादे को तुमने किस तरह से समझ लिया था, ग्लकास! और एपि-साइडिस ने ही किस तरह से देख लिया था? उस दिन की सारी घटना मुझे अलौकिक जान पड़ती है!

ग्लकास ने कहा—उस दिन की सारी घटना भगवान का चक्र था। लौकिक रीति से देखने पर निडिया ने ही उस दिन तुम्हारे प्राण और मन की रक्षा की। हम लोग

चिरकाल तक, इसके लिए, उसकी कृत्तज्ञता के पाश में बँधे रहेंगे।

आइयोन ने कहा—इस समय निडिया केवल मेरी सखी ही है, सो बात नहीं। वह मुझे प्राण देनेवाली भी है। निडिया! तुमने किस तरह से दग़ाबाज आरबेसेस के कुचक्र के समझ लिया था? क्या तुम पहले ही से उसे पहचानती थीं?

निडिया ने उत्तर दिया—हाँ मलकिन! मेरा पुराना मालिक, मुझे, बीच-बीच में, उस दुष्ट भिक्षुक के घर पर, रुपये के लिये, गाना सुनाने के, भेजा करता था; इसी से मैं उस दुष्ट की बुरी हरकतों को जानती थी।

आइयोन बोली—तुम्हारे ऊपर तो, उस पापी ने, किसी दिन, किसी प्रकार का अत्याचार नहीं किया था?

निडिया ने कहा—नहीं मलकिन! मैं क्रीतदासी, दरिद्र और अन्धी हूँ। मैं भोगी के सम्भोग के बिल्कुल अयोग्य हूँ। लम्पट ने किसी दिन मुझे बुरी दृष्टि से नहीं देखा। मैंने ज्योंही आपके घर पर जाकर सुना कि आरबेसेस आपको निमंत्रण देकर लेगया है, त्यों ही मेरे मन में बड़ी भारी शङ्का पैदा हुई। मैं दौड़ती हुई ग्लकास के घर पर गयी। वह उस समय बाहर घूमने के लिए चले गये थे। दूसरा उपाय न देखकर आपके भाई के पास जाकर मैंने सूचित

किया। रास्ते में ग्लकास के साथ हम लोगों की भेंट हुई। भगवान् की कृपा से मालकिन के मान और प्राण की रक्षा हुई।

जिस समय इस प्रकार बातचीत चल रही थी, उस समय चन्द्रमा की शुभ्र चाँदनी पृथ्वीतल पर छिटक रही थी। सहसा एक श्यामघन ने आकर चन्द्रमा के हँसते हुए मुखड़े को ढक लिया। तीनों आदमियों की दृष्टि युगपत् चन्द्रमा की ओर आकर्षित हुई। उस समय चन्द्रमा ठीक विसूवियस के अग्नि-गर्भ शिखर के सिरे पर अवस्थित थे। काले बादल के एक टुकड़े ने उसे ढक लिया था। शेष सम्पूर्ण आकाश निर्म्मल था, तारागण झिलमिलाते थे।

उस दृश्य को देखते ही, न जाने क्यों, सबका चित्त उद्विग्न हो उठा। भयभीत स्वर में आइयोन ने कहा—देखो ग्लकास! विसूवियस की चोटी पर काला-काला मेघ जमकर एक भयंकर दैत्य के समान हो गया है!

ग्लकास बोला—ठीक कहती हो आइयोन! इस प्रकार के अस्वाभाविक आकार के मेघ को मैंने भी पहले कभी नहीं देखा था। जान पड़ता है, शीघ्र ही कोई प्राकृतिक विप्लव घटित होगा। उस दिन का भूकम्प भी कैसा भयानक था!

आइयोन बोली—चलो ग्लकास! नाव फिरा ले चलो! चलो, हम लोग चलें। बड़ा भय मालूम हो रहा है।

ग्लकास नाव का मुँह फिराकर, जल्दी-जल्दी डाँड़ खेते हुए, बहुत जल्द किनारे पर उतरा।

---

[१५]

प्रेम-प्रवाह

आइयोन के हृदय का एक छोटा से छोटा गूढ़ रहस्य भी, इस समय, ग्लकास से छिपा हुआ न था। दोनों एक दूसरे के प्रति हृदय खोलकर हृदय का आकर्षण प्रकट करते थे।

देखते-देखते जाड़ा बीत गया। वसन्त के आगमन पर, पृथ्वी ने, नवीन पत्तों और पुष्पों की, हरी-भरी शोभा धारणकर, मूर्तिमती राजराजेश्वरी का बाना पहन लिया। वसन्त के मध्य में ग्लकास और आइयोन के विवाह का दिन स्थिर हो गया।

आरबेसेस को, उस रात को, कन्धे पर जो गहरी चोट लगी थी, उस चोट से अब तक वह चारपाई पर पड़ा हुआ था। वह दिन-प्रतिदिन नीरोग हो रहा था। उस समय भी, वह अपने परम शत्रु ग्लकास और एपिसाइडिस से बदला लेने के लिए, कोई प्रत्यक्ष उपाय काम में नहीं ला रहा था; किन्तु परोक्ष में उसके मनमें यही एक चिन्ता

सदा बनी रहती थी कि किस उपाय से अपने दोनों शत्रुओं से बदला लूँ ।

रात दिन—सबेरे शाम—निडिया, ग्लकास और आइ-योन के साथ-साथ रहती थी। एक प्रकार की दारुण ज्वाला से बालिका की देह रातदिन जला करती थी, पर उसे ग्ल-कास या आइयोन, कोई, ज़रा भी नहीं समझ पाते थे। उसके चिड़चिड़े मिजाज़ को तो वे उसकी दृष्टिहीनता का कारण समझते थे। उसका क्षण में हँसना, क्षण में रोना, क्षण में बिगड़ उठना और क्षण में शान्त हो जाना, क्षण में प्रसन्न और क्षण में उदास हो जाना, उनको बुरा न लगकर, उस पर उनकी आसक्ति का कारण हो गया था। आइयोन उसे अपनी सगी बहन की तरह प्यार करती थी। किन्तु निडिया उससे बहुत ईर्ष्या करती थी। इसका कारण था, ग्लकास का आइयोन को प्यार करना। उसी विष से दग्ध होकर वह रात-दिन जला-भुना करती थी। ग्लकास निडिया को पिशाच के हाथ से छुड़ाकर लाया था, उसने उसे अपने मकान में आश्रय दिया था, उसके सुख के लिए न मालूम वह कितना यत्न करता था! यह सब कुछ था, पर उसे छोड़कर तीनों लोक में कोई ग्लकास को प्यार करे, अथवा ग्लकास उसे छोड़कर और किसी को प्यार करे, यह बात उसे बिलकुल सह्य न थी। एक दिन आइयोन की रक्षा के लिए उसने अपने को

ख़तरे में डाला था, आज वह उसी का गला दबाकर, उसे मार डालने से भी पैर पीछे नहीं रख सकती थी ! स्त्री के क्रोध की ज्वाला कितनी भयानक होती है !

निडिया मनमें सोचा करती—आइयोन को कितना सुख, कितनी शान्ति है ! आइयोन आँख-भर ग्लकास को रात दिन देख पाती है ! और मैं ? मैं अभागिनी चिर दुःखिनी हूँ—जन्म से अन्धी !

एक दिन सन्ध्या होने के कुछ पहले वह ग्लकास के बग़ीचे से ताज़े, हाल के खिले हुए, फूलों की झोली लेकर आइयोन के घर की ओर जा रही थी। रास्ते में एक स्त्री ने उसे, सम्बोधित करके पूछा—अंधी मालिन ! तुम कहाँ जा रही हो ? तुम्हारी झोली के फूलों को कौन बेचेगा ?

उस स्त्री की पोशाक भले घर की-सी थी, वह सुन्दर थी और उसका कंठ सुरीला था; किन्तु वह कुछ रुक्ष बोलनेवाली तथा गर्विता थी।

निडिया उस स्त्री को न पहचान सकी। उसने विस्मित होकर उसकी तरफ़ से मुँह फेर लिया।

जुलिया ने कहा—क्या मेरे कंठ-स्वर को तुमने नहीं पहचाना ?—मैं सेठ डायोमेड की पुत्री जुलिया हूँ। मैं तुमसे कई बार कितना फूल ख़रीद चुकी हूँ ! क्या तुम्हें याद नहीं है ?

निडिया—मुझे माफ़ कीजिये । मैं आपके कंठ-स्वर से आपको नहीं पहचान सकी ! नहीं सुन्दरी, मेरे ये फूल बिक्री के लिए नहीं है ।

जुलिया—तो किस लिए हैं ?

निडिया—ये फूल ग्लकास के बग़ीचे के हैं। उन्होंने इन्हें सुन्दरी आइयोन को उपहार में भेजा है। मैं इस समय आइयोन के यहाँ काम करती हूँ ।

जुलिया—तो उनके सम्बन्ध में जो अफ़वाह है, वह झूठी नहीं है।

निडिया—कौन सी अफ़वाह है ?

जुलिया—अफ़वाह यह है कि आइयोन ग्लकास को प्यार करती है ।

एक दीर्घ निश्वास छोड़कर निडिया ने कहा—हाँ, बात तो सच है ।

जुलिया ने कहा—मालिन ! तुमसे मुझे कुछ काम है। अगर तुम कुछ देर से जाओ, तो क्या तुम्हारी मालकिन तुमसे नाराज़ होंगी ?

निडिया ने कहा—वह मुझे सगी बहन की तरह चाहती हैं। विलम्ब होने पर भी वह मुझ पर कभी नाराज़ न होंगी।

जुलिया—तो मेरे साथ मेरे घर तक चलो। बातें

बहुत गोपनीय है। यहाँ—आम रास्ते पर—कहने योग्य नहीं है।

निडिया—अच्छी बात है।— चलिये, चलती हूँ।

जुलिया निडिया को साथ लेकर अपने घर पर गयी। वहाँ पहुँचकर, अपने सोनेवाले कमरे का अरगला बन्द करके, बातचीत करने लगी।

जुलिया ने पूछा—मालिन ! कहो तो आइयोन देखने में कैसी है ? मैं समझती हूँ, वह बहुत सुन्दरी है।

निडिया ने कहा—मैं किस प्रकार कह सकती हूँ ? फिर भी सबके मुँह से सुनती हूँ कि वह बहुत सुन्दरी है।

जुलिया ने पूछा—वह लम्बे क़द की है, या नाटी ?

निडिया—वह लम्बी है, ऐसा मैंने सुना है।

जुलिया—मैं भी तो लम्बी हूँ। उसके बाल काले हैं, या भूरे ?

निडिया—सुना है, खूब काले हैं।

जुलिया—मेरे भी तो काले ही हैं। क्या ग्लकास उसके घर पर प्रायः आया-जाया करता है ?

निडिया—रोज़ एक-दो बार आते हैं। किसी-किसी दिन अनेक बार आते हैं।

जुलिया—क्या ग्लकास आइयोन को .खूब प्यार करते हैं ?

निडिया—मेरा तो ऐसा ही अनुमान है। उनके विवाह का दिन भी निश्चित हो गया है।

जुलिया ने अपने विस्मय को छिपा रखकर रुद्ध-कंठ से कहा—विवाह ! तो उसकी तैयारी भी .खूब हुई होगी।

जुलिया कुछ देर तक, अवाक् हो, कुछ सोचती रही। उसका मुँह उदास हो गया। उसकी भौंहें टेढ़ी हो गईं।

कुछ देर के बाद, वह कुछ आश्वस्त; हो निडिया से बोली—मालिन ! तुम्हारा देश थेसाली है न ?

निडिया ने कहा—हाँ।

जुलिया—सुना है, वहाँ के सभी लोग कुछ-कुछ तंत्र-मंत्र तथा जादू जानते हैं।

निडिया—बात तो ठीक है। थेसाली तंत्र-मंत्र का देश अवश्य है।

जुलिया ने पूछा—मालिन ! तुम वशीकरण का कोई मंत्र-तन्त्र वा औषध जानती हो ?

निडिया कुछ चकराई। वह बोली—नहीं बहन ! मैं जन्म से ही अंधी हूँ। मैं किस तरह से यन्त्र-मन्त्र वा औषध-प्रयोग सीख सकती ?

जुलिया बोली—तुम्हारा दुर्भाग्य है ! अगर तुम वशीकरण की एक भी औषध वा जड़ी-बूटी बतला देती, तो

उसके बदले मैं तुमको इतना धन देती कि तुम जन्मभर पैर पर पैर रख कर खाती, तो भी नहीं ख़तम होता।

निडिया—अगाध सम्पत्तिशाली डायोमेड की एक मात्र कन्या—जुलिया—ऐश्वर्य, रूप और गुण में अद्वितीय है। और फिर भी उसे वशीकरण के लिए मंत्र की आवश्यकता हो सकती है, यह मेरी धारणा से बाहर है।

जुलिया ने कहा—मेरे पास जो मंत्र-तंत्र है, वह संसार के एक व्यक्ति को छोड़कर और सब को वश में कर सकता है।

निडिया ने कहा—बहन! क्या मैं जान सकती हूँ कि वह कौन है?

जुलिया ने कहा—उसका नाम मैं नहीं बता सकती। तो भी इतना कहे देती हूँ कि वह ग्लकास नहीं है। हाँ, ठीक है। ग्लकास और आइयोन में जिस प्रकार के प्रेम का तुमने हाल बताया है, उससे मेरी धारणा है कि आइयोन ने उसपर अवश्य ही जादू चलाया है। उसी से मैंने तुमसे औषध का प्रस्ताव किया है। मालिन! मैं भी एक पुरुष को चाहती हूँ, किन्तु उस निरमोही ने मेरे प्रेम का प्रतिदान नहीं दिया। यह क्या कम अपमान की बात है? मैं उस अपमान का बदला लेना चाहती हूँ। मैं उस ढीठ को, अपने बायें पैर से, निर्दयता से, कुचलना चाहती हूँ! अच्छा मालिन! तुमने तो कहा था कि तुम स्वयं कुछ मंत्र-तंत्र

नहीं जानती। तुम शहर में कई जगह आती-जाती हो। क्या तुम बता सकती हो कि शहर में ऐसा कौन गुणी तांत्रिक है ?

निडिया ने कहा—मिश्र के भिक्षुक आरबेसेस को शहर का कौन नहीं जानता ?

जुलिया ने कहा—ठीक बतलाया ! आरबेसेस एक नामी गुणी है। मैंने सुना है कि उसके पास अगाध सम्पत्ति है। उसे धन का प्रलोभन देकर नहीं भुलाया जा सकता। अच्छा, चलकर देखूँगी।

निडिया—बहन ! मैंने सुना है, वह महालम्पट आदमी है। क्या आप अकेले ही जाकर उससे भेंट करेंगी ?

जुलिया—भले हो, मुझे क्या करना है। वह मेरा क्या कर सकता है ! मैं आज ही जाकर उससे भेंट करूँगी।

निडिया ने आश्चर्य-चकित होकर पूछा—आज ही ! क्या इसी रात को ?

जुलिया ने बड़े अभिमान से जवाब दिया—अवश्य ! सेठ डायोमेड की कन्या को अपमानित कर सके, ऐसा आदमी पम्पियाई में कौन है ! मैं अभी जाऊँगी।

निडिया ने कहा—उसके साथ भेंट होने का फलाफल क्या मैं जान सकूँगी ?

जुलिया ने कहा—अवश्य। कल शाम को ठीक इसी

समय तुम मेरे मकान पर आना। मैं तुमसे सब बता दूँगी।

निडिया को विदा करके जुलिया ने शीघ्र ही बाहर जाने की पोशाक पहन ली। आरबेसेस से मुलाक़ात करने के लिए वह अकेले ही घर से निकल पड़ी।

---

[१६]

जुलिया का षडयंत्र

आरबेसेस अपनी, राजमहल के समान, हवेली के दो-तल्ले पर, एक चौड़े कमरे में बैठकर, खुले हुए जँगले से आती हुई, सन्ध्याकालीन वायु का सेवन कर रहा था। उसके मुँह पर अब भी पीड़ा की यन्त्रणा का चिन्ह दिखाई पड़ता था। जितनी सांघातक चोट उसे लगी थी, यदि उतनी चोट दूसरे को लगी होती, तो उसका जीना कठिन हो जाता। किन्तु आरबेसेस में शारीरिक और मानसिक बल बहुत ज्यादा था, इसीसे वह ऐसी चोट को सहन कर सका। धीरे-धीरे वह स्वस्थ होने लगा। पौष्टिक ओष-धियों के सेवन से उसके शरीर में बल का संचार भी होने लगा।

अगणित ताराओं से खचित निर्मल आकाश की ओर

देखकर वह मन ही मन कहने लगा—"अपने भविष्य के भाग्याकाश में जिस प्रचंड झंझावात का आभास मैंने गणना से पाया था, वह झंझावत मुझ पर आही बीता। ग्रहों ने जो सूचित किया था, वह अक्षर-अक्षर ठीक निकला, मेरा ग्रह कट गया। आकाश-मंडल के एक भाग को आलोकितकर सबकी अपेक्षा बड़े आकारवाला जो तारा उदय हुआ है, वह शुक्र तारा ही इस समय मेरा नियन्ता है। हे राक्षस-गुरो! जिस प्रबल आसुरी शक्ति का मैं उपासक हूँ, उसी शक्ति को तुम युग-युगान्तर से नियंत्रित और संचालित करते आ रहे हो। मुझे साहस प्रदान करो। जिसमें मैं, शत्रु को पैंददलित करके, तुम्हें प्रसन्न करने के लिए षोड़शोपचार बलि की व्यवस्था करने में समर्थ हो सकूँ!"

भिक्षुक आरबेसेस जिस समय इस प्रकार चिन्ता में मग्न था, उसी समय एक नौकर ने, बहुत सावधानी से, उस कमरे में प्रवेश करके, ख़बर दी कि एक स्त्री आपसे एकान्त में भेंट करना चाहती है। "स्त्री" के आने की ख़बर सुनते ही ख़ुशी से उसका मन मानो नाच उठा! उसने व्यस्त भाव से, नौकर से, पूछा—वह स्त्री युवती है या प्रौढ़ा ?

नौकर ने कहा—उसका मुँह घूँघट से ढका हुआ है; तो भी उसके अंगों के खुले हुए भागों को देखकर

अनुमान होता है कि वह स्त्री युवती, सुन्दर और तन्वंगी है!

आरबेसेस का मन आशा से उत्फुल्ल हो उठा। उसने मन ही मन कहा—यह कौन स्त्री है? क्या आइयोन मुझसे मुलाक़ात करने को आई है? उसने नौकर को हुक्म दिया—उसे शीघ्र ही यहाँ पर लाओ।

स्त्री के कमरे में पैर रखते ही आरबेसेस ने समझ लिया कि उसका अनुमान ग़लत है। यद्यपि उस स्त्री के अंग-प्रत्यंग का गठन बहुत कुछ आइयोन के समान था, और उसकी अवस्था भी उसी के समान थी, तो भी आइयोन के अंग-प्रत्यंग से जो नज़ाक़त और चंचलता टपकती थी, वह इसमें कहाँ थी!

उस स्त्री की तरफ़ देखकर आरबेसेस बोला—सुन्दरी, मेरा अपराध क्षमा करना। मैं अच्छी तरह से खड़ा होकर आपकी अभ्यर्थना करने में असमर्थ हूँ। मेरी देह में अब भी पीड़ा है।

जुलिया बोली—भिक्षुक महाराज! आप व्यस्त न हों। मैंने एक विशेष विपत्ति में पड़कर आपका आश्रय ग्रहण किया है। इस दुखिया के ऊपर कृपाकटाक्ष डालकर उसे अनुगृहीत करें!

आरबेसेस बोली—सुन्दरी, जो तुम्हें कहना हो, उसे बेधड़क कहो। मेरी शक्ति में जहाँ तक उपकार करना

सम्भव होगा, उसे करने के लिए मैं तैयार हूँ।

जुलिया बोली—भिक्षुक आरबेसेस ! तन्त्र-शास्त्र में आपकी असाधारण गति और अलौकिक शक्ति से सभी परिचित हैं।

आरबेसेस ने मुस्कराकर कहा—बहुत वर्षों तक अथक परिश्रम के परिणाम-स्वरूप ज्ञान-रूपी समुद्र के दो-चार कणों को प्राप्त कर सका हूँ, इसमें सन्देह नहीं। किन्तु सुन्दर स्त्रियों का उससे कुछ काम निकल सकेगा, यह मेरे ज्ञान के बाहर है।

जुलिया ने कहा—ज्ञानी आरबेसेस ! दुखिया के दुख को दूर करना क्या ज्ञान का उद्देश्य नहीं है ?

आरबेसेस बोला—कहिये, आप मुझसे किस प्रकार की सहायता चाहती हैं ?

जुलिया बोली—संसार में प्रेम करके उसका प्रतिदान न पाना क्या एक बड़ा भारी दुःख नहीं है ?

आरबेसेस बोला—सो क्यों ? आप जैसी सुन्दरी और बुद्धिमती का भी कोई नायक निरादर कर सकता है ?

जुलिया—यही तो मेरा मानसिक कष्ट है।

आरबेसेस बोला—आपकी बात सुनकर मैं अत्यन्त दुःखित हुआ। किन्तु सुन्दरी ! आप जिस सहायता के लिए यहाँ पर आई हैं, उस तरह की सहायता करने की शक्ति मुझ में नहीं है। मारण, उच्चाटन, वशीकरण आदि योग

निम्न श्रेणी में समझे जाते हैं। मैं इनकी चर्चा तक नहीं करता।

जुलिया झटपट उठकर बोली—तो मैं चलती हूँ।

आरबेसेस बोला—नहीं, उठिये मत, बैठिये। यद्यपि मैंने स्वयं इस क्षुद्र ज्ञान का अनुशीलन नहीं किया है, किन्तु मेरे दो-चार शिष्य ऐसे हैं, जो इस काम को करते हैं। भद्रे! आपके चेहरे और पोशाक को देखकर जान पड़ता है कि आप किसी अच्छे और प्रतिष्ठित घराने की महिला हैं। क्या आप विवाहिता है?

जुलिया ने कहा—नहीं।

आरबेसेस ने पूछा—क्या आप किसी धनी युवक को अपने प्रणय की वंशी में खींचने की इच्छा करती हैं?

जुलिया ने कहा—मैं जिसे चाहती हूँ, उसकी अपेक्षा मेरी आर्थिक स्थिति कई गुना अच्छी है। मैं चाहती हूँ कि मैं प्रणय-संग्राम में अपनी प्रतिद्वन्दिनी को नीचा दिखाऊँ।

आरबेसेस बोला—तुम्हारा संकल्प तो बहुत अच्छा है; किन्तु क्या मैं यह जानने का साहस कर सकता हूँ कि वह तुम्हारा प्रेमी कौन है, देशी है या विदेशी?

जुलिया ने कहा—वह विदेशी है। वह एथेन्स का निवासी है।

आरबेसेस ने चौंककर पूछा—कौन ? क्या उसका नाम ग्लकास है ?

जुलिया ने सिर नीचा कर लिया। कुछ क्षणों के बाद कहा—जब आप मुझे इस विषय में किसी प्रकार की सहायता न देने को कहते हैं तो इस बात के पूछने से लाभ ही क्या है ?

आरबेसेस ने कहा—नहीं सुन्दरी ! तुम्हारी बात सुनकर मेरा हृदय पिघल गया है। मैं तुम्हें अपनी शक्ति के अनुसार मदद करने को तैयार हूँ। सुनो, शहर से एक कोस की दूरी पर, विसूवियस की चोटी के ठीक नीचे, एक तराई है। उस तराई में, पहाड़ के एक छोटी सी गुफा में, एक योगिनी रहती है। वशीकरण, उच्चाटन, मारण आदि विद्याओं में वह सिद्ध है। उसके पास जाकर मेरा नाम लेना, वहाँ तुम्हारी मनोकामना अवश्य पूरी होगी। वह बहुत लालची है। काफी रुपये का लालच दिखाने पर वह तुम्हें निराश न लौटने देगी।

जुलिया ने हताश होकर कहा—अकेले इतनी दूर जाकर उस योगिनी को ढूँढ़ना मेरे लिए किस प्रकार सम्भव है ?

आरबेसेस ने कुछ चिन्तित भाव से कहा—मेरी देह इस समय स्वस्थ नहीं है। तीन दिन तक और

इन्तज़ारी करने पर मैं तुम्हें उसके पास ले जा सकता हूँ।

जुलिया ने कहा—तीन दिन तक विलम्ब करने से कैसे काम चलेगा! ग्लकास के विवाह का दिन तो स्थिर हो चुका है। शीघ्र ही उनका विवाह हो जायगा।

आरबेसेस ने विस्मित होकर कहा—विवाह! कब होगा?

जुलिया ने कहा—इसी मास के प्रथम सप्ताह में। आरबेसेस ने कहा—इतनी जल्दी! अच्छा सुन्दरी, धैर्य धारण करो। क्या कल सन्ध्यासमय, ठीक इसी वक्त, यहाँ पर आ सकती हो? सवारी में चढ़कर आना। मैं कल ही तुम्हारी संकल्प-सिद्धि का रास्ता साफ़ कर दूँगा।

जुलिया लौट गई। आरबेसेस अकेला बैठकर ग्लकास से अपना बदला चुकाने के लिए उपाय सोचने लगा। एक तदबीर सूझ जाने पर हठात् उसका मुख-मंडल प्रफुल्ल हो उठा। उसने एक दासी को पुकारकर हुक्म दिया—कहारों को अभी शिविका ले आने को कहो। मैं ज़रा बाहर जाऊँगा।

---

[१७]

योगिनी और शैतान

जिस समय आरबेसेस योगिनी के आश्रम में पहुँचा, उस समय लगभग दो पहर रात बीत चुकी थी। कहारों को, सवारी लेकर, कुछ दूरी पर, एक पेड़ के नीचे बैठकर आराम करने का आदेश देकर, आरबेसेस लाठी टेकता हुआ, धीरे-धीरे योगिनी के रहने की गुफा को ओर, जाने लगा। वह पहाड़ी-मार्ग बहुत ही संकीर्ण और बीहड़ था। रास्ते के दोनों बग़ल में कँटीली झाड़ियाँ थीं। रात अँधेरी थी। काँटों से लग-लगकर उसका कपड़ा और खुला हुआ अंग स्थान-स्थान पर खँरुचने लगा।

गुफा का द्वार एक पत्थर के किवाड़ से बन्द था। उसके छेद के भीतर से एक टिमटिमाता हुआ दीपक जलता हुआ दिखाई पड़ रहा था। दरवाज़े पर धीरे से आघात कर आरबेसेस धीर-गम्भीर स्वर में बोला—भीतर कौन हैं? दरवाज़ा खोलिये। भीतर से योगिनी ने दुखी आवाज़ में कहा—इतनी रात हो जाने पर कौन मरने के लिए आया। बापरे बाप! लोगों की भीड़-भाड़ से भागकर, इस जंगल के बीच आने पर, भी उनसे पिण्ड नहीं छूटता। कौन है भाई! इतनी रात तुम मुझे तंग करने के लिए क्यों आये हो?

आरबेसेस अपने स्वर को कुछ और भी गम्भीर करके बोला—योगिनी ! जिस तन्त्रशास्त्र की अंशमात्र ज्योति को प्राप्तकर, इस जंगल में बैठकर, अपने खाने-पीने और कपड़े-लत्ते का प्रबन्ध कर रही हो, उसी विशाल तंत्रशास्त्र के सभी तत्वों का जो ज्ञाता है, वही अद्वितीय योगी, सिद्ध पुरुष, तुम्हारे दरवाज़े पर खड़ा है।

भीतर से स्वर और भी कड़ा करके योगिनी ने कहा—तंत्रशास्त्र के ज्ञान में, विसूवियस की चोटी पर रहनेवाली, योगिनी से बढ़कर पृथ्वी में केवल एक व्यक्ति है, उसका नाम है 'हारमिस'। इसका प्रमाण उसकी कमर है, जिसका आकार कुण्डलित सर्पिणी का सा है और जिससे प्रलय-काल के सूर्य के समान तेज निकला करता है।

आरबेसेस ने अपने ऐन्द्रजालिक डण्डे से योगिनी की गुफा के दरवाज़े को खटखटाया। क्षण भर में दरवाज़ा खुल गया। आरबेसेस उस खुले हुए दरवाज़े के निकट अपनी दीर्घ बलिष्ट देह-यष्टि को उन्नत कर खड़ा हो गया। उसके पहने हुए कपड़े का एक अंश हट जाने से उसका उज्ज्वल कटि-बन्ध स्पष्ट दिखाई पड़ने लगा।

आरबेसेस ने कहा—योगिनी ! ध्यान-पूर्वक देखो, मैं ही वह 'हारमिस' हूँ।

योगिनी ने ज़मीन पर पड़कर उसे साष्टांग-प्रणाम किया और वह बोला—मेरा भाग्य बड़ा ही अच्छा है। मैं ने

बिना परिश्रम ही के गुरुदेव का दर्शन पा लिया।

आरबेसेस बोला—योगिनी! उठो, तुम्हें मेरी भलाई के लिए एक काम करना पड़ेगा।

योगिनी ने कहा—कौन सा काम है गुरुदेव? आज्ञा दीजिये।

आरबेसेस ने कहा—सुनो, योगिनी! प्राणायाम, कुम्भक, रेचक, समाधि आदि योग के उच्च अंगों की, संसार की भलाई के लिए, जितनी आवश्यकता है, उससे कम आवश्यकता मारण, वशीकरण, उच्चाटन आदि अधम अंगों की नहीं है। बल्कि समय-समय पर तो सांसारिक आवश्यकताओं के लिए वे अधिक उपयोगी हैं। मैं उच्च साधना में जैसा सिद्ध हूँ, तुम निम्नतर साधना में वैसी ही सिद्ध हो। मैं तुम से अपने एक निजी आवश्यक काम में तुम्हारी सहायता चाहता हूँ। अगर मेरा वह काम कर दोगी, तो तुम्हारी इस गुफा का मुँह तक सोने से भर दूँगा। क्यों, राज़ी हो न?

योगिनी ने उत्तर दिया—आप संसार के सभी सिद्ध पुरुषों के गुरू हैं। आपका एक कार्य करके यदि मैं पुरस्कार की इच्छा करूँ, तो मरने के बाद मेरी सद्गति का मार्ग सदा के लिए बन्द हो जायगा।

आरबेसेस ने कहा—नहीं योगिनी! इसका भय तुम ज़रा भी न करो। और क्या मुझे रुपये-पैसे की कुछ कमी

है जो उपयुक्त पात्र को दान देने में कृपणता करूँ ? इस समय मन लगाकर सुनो, तुम्हें क्या करना होगा। कल सन्ध्या समय एक युवती तुमसे मुलाक़ात करने के लिए आयेगी। वह एक पुरुष को चाहती है; किन्तु पुरुष उसे नहीं चाहता। इसके लिए उसे एक ओषधि की आवश्यकता है। वह पुरुष मेरा परम शत्रु है। वह केवल मेरा ही शत्रु नहीं, वरन् सारे सिद्ध महात्माओं और साधुओं में से प्रत्येक का शत्रु है। मैं उस विधर्मी नारकी की जान लेना चाहता हूँ। वह स्त्री जब तुम्हारे पास वशीकरण की औषध लेने आये, उस समय, तुम, उसके बदले, एक ऐसी उग्र ज़हरीली औषध देना, जिसके खाते ही उसके प्राण-पखेरू उड़ जायँ।

आरबेसेस के प्रस्ताव को सुनकर योगिनी भय से काँप उठी। वह काँपते-काँपते बोली—महात्मन् ! मुझे क्षमा कीजिये। इस देश का क़ानून जैसा कड़ा है, उसे तो आप जानते ही हैं। क्या अन्त में मैं फाँसी के तख्ते पर चढ़ूँ ! और ऐसा करने पर आप साफ़ बच जाँयगे, इसकी भी तो सम्भावना नहीं है।

योगिनी की बात सुनकर आरबेसेस कुछ देर सिर नीचा करके सोचता रहा। फिर एक दीर्घ निश्वास छोड़ते हुए बोला—योगिनी, तुमने ठीक कहा। मैं क्रोध से अधीर हो यहाँ तक नहीं सोच सका था। तो अन्य उपाय क्या है ?

योगिनी ने विकट हँसी हँसकर कहा—महात्मन् ! धैर्य धरिये। आपके सन्तोष और कार्यसाधन के लिए मैं जो व्यवस्था करूँगी, उससे साँप भी मर जायगा और लाठी भी न टूटेगी। आप अपने शत्रु की मृत्यु ही चाहते हैं न ? मैं उसके लिए मृत्यु से भी कठोर दण्ड की व्यवस्था कर दूँगी। मेरे पास एक ऐसी औषध है, जो देखने में जल जैसी स्वच्छ है। उसमें ज़रा भी गन्ध नहीं, खाने में वह ज़रा भी कड़वी नहीं जान पड़ती; और उसमें ऐसा अलौकिक गुण है कि उसको थोड़ी मात्रा में भी खा लेने पर आदमी जन्म भर के लिए पागल हो जाता है। उसको व्यर्थ करदेनेवाली दवा आज तक आविष्कृत नहीं हुई।

आरबेसेस ने अत्यन्त प्रसन्न होकर कहा—योगिनी ! शत्रु से बदला लेने के लिए तुमने जो उपाय ढूँढ़ निकाला है, वह मेरे उर्व्वर मस्तिष्क में भी नहीं आया था। मैं तुम्हारी बुद्धि की प्रशंसा किये बिना नहीं रह सकता। जो हो, तुम उस औषध को ठीक करके रख दो। मैं कल शाम को स्वयं उस स्त्री को साथ लेकर यहाँ आऊँगा। मैंने आज तुम्हारे पास आकर तुमसे भेंट की है, इसका आभास तक उसे न मिलना चाहिये। यह लो, एक तोड़ा स्वर्ण-मुद्रा। तुमने सारी ज़िन्दगी में किसानों-मज़दूरों में जड़ी बूटी बेचकर जो धन संचित किया है, उससे चौगुना धन इसमें है। तुम्हें इतना बयाने के रूप में दिया जाता है।

कार्य के सिद्ध होने पर कितना पाओगे, उसका तुम इसी से अन्दाज़ लगा लो।

यह कहकर आरबेसेस ने, अपने अँगरखे के पाकेट से, मुहरों से भरी हुई एक थैली निकाल, योगिनी के गुफा के फ़र्श पर फेंक दी। मुद्रा की झन-झन आवाज़ योगिनी के कानों में अमृत की वर्षा करने लगी।

वह कुछ जड़ित और भग्न भाषा में कहने लगी—आप क्यों······? आपसे पारितोषिक ! आप तो हम सब लोगों के गुरु हैं।

योगिनी की बात ख़तम होने के पहले ही आरबेसेस उस गुफा से बाहर हो गया। एक बार फिर योगिनी की ओर मुँह फिराकर उसने कहा—याद रखना, कल सन्ध्या-समय······।

---

[१८]

अदृष्ट का योग

दूसरे दिन सन्ध्या होने के कुछ पहले ही, निडिया जुलिया के मकान पर पहुँची। उस समय जुलिया बाहर जाने योग्य कपड़ा पहन रही थी।

निडिया ने पूछा—बहन ! तो आपने भिक्षुक आरबेसेस

के साथ, विसूवियस की योगिनी से, भेंट करने के लिए, जाने का निश्चय कर लिया है ?

जुलिया ने उत्तर दिया—अवश्य। क्यों निडिया, मुझे डर किसका है ?

निडिया ने कहा—आप जिसके साथ जा रही हैं, सब से अधिक तो उसी का डर है।

जुलिया ने कहा—सुन्दर मुख की सर्व्वत्र जय होती है। भली लड़की, तुम निश्चिन्त होओ। आरबेसेस मेरा ज़रा भी अनिष्ट करने का साहस न करेगा।

निडिया ने देखा कि जुलिया का साहस साधारण स्त्रियों की अपेक्षा बहुत अधिक है। उसने उसे फिर मना नहीं किया। हठात् उसके मस्तिष्क में विद्युज्ज्योति की भाँति आशा की एक झलक कौंध गई। उसने सोचा—जुलिया वशीकरण की औषध लाने के लिए जा रही है। अगर उसकी औषध से मैं भी कुछ पा जाऊँ, तो ग्लकास के चित्त को, आइयोन की ओर से हटाकर, अपनी ओर खींच सकूँगी।

मन ही मन इस प्रकार कल्पना करती हुई उसने जुलिया से कहा—बहन ! आप अकेले जाँयगी, यह बात मुझे अच्छी नहीं लगती। आप मुझे साथ क्यों नहीं ले चलतीं ? मैं अन्धी हूँ। मुझसे आपको क्या, किसी को डरने का

कोई कारण नहीं। और हो सकता है, मैं आपके किसी न किसी काम आही जाऊँ!

जुलिया ने सोचा—इसमें हर्ज ही क्या है?

उसने कहा—सम्भव है, हम लोगों के लौटने में अधिक रात चली जाय। तुम उस समय घर पर जाओगी कैसे?

निडिया—आज रात को घर पर नहीं जाऊँगी। रात को आप के यहाँ सो रहूँगी। सबेरा होते ही घर पर चली जाऊँगी।

जुलिया—अगर आइयोन तुम पर नाराज़ न हों, तो रह सकती हो।

निडिया—मैं अच्छी तरह से जानती हूँ, वे मुझसे नाराज़ न होंगी।

कहार पालकी ले आये। जुलिया और निडिया दोनों उस पर सवार हुईं। शाम होने के बाद अँधेरे में वे आरबेसेस के मकान पर पहुँचीं। आरबेसेस की पालकी भी उसके दरवाज़े पर लगी हुई थी। आरबेसेस अपना आडम्बर-पूर्ण मिश्री ऐन्द्रजालिक परिच्छद धारणकर, उत्सुकता के साथ, कमरे में टहल रहा था। उसने आगे बढ़कर जुलिया को अभिवादन करके कहा—आओ सुन्दरी! साथ में किसे लायी हो?

जुलिया—महात्मन्! वह एक अन्धी मालिन है। वह थेसाली देशकी रहनेवाली है।

आरबेसेस—कौन? क्या निडिया है? मैं उसे पहचानता हूँ। क्यों लड़की! तुम हमारे यहाँ गाना गाने नहीं आती हो? तुम तो मुझे अच्छी तरह से पहचानती हो। हमारे धर्म का सिद्धान्त तो तुम जानती हो। जैसा उस समय था—वैसा अब भी वही।······सावधान!

आरबेसेस की बातें सुनकर निडिया भय से काँप उठी! वह एक ओर खिसककर जड़वत् खड़ी हो गई!

आरबेसेस ने कहा—सुन्दरी! क्या तुम्हें मुझ पर इतना भी विश्वास नहीं है? भिक्षुक आरबेसेस ऐसा छोटा आदमी नहीं है कि अकेली पाकर वह एक रमणी के ऊपर अत्याचार या बुरा व्यवहार करेगा। वह योगिनी अधिक आदमियों को साथ ले चलने पर बहुत नाराज़ होती है। अच्छा होगा कि निडिया चलकर तुम्हारे यहाँ इन्तज़ारी करे। हम लोगों के लौटकर आने में देर ही कितनी होगी!

निडिया आरबेसेस से फिर मुलाक़ात होने से इतनी डर गई थी कि इस प्रस्ताव से उसकी जान में जान आयी।

जुलिया बोली—निडिया! भिक्षुक ने जो कुछ कहा है, उसे तुमने सुन ही लिया। तुम चलकर मेरे घर पर ठहरो। अगर कोई मेरे सम्बन्ध में पूछ-ताँछ करे, तो उस

से कहना कि वह अपने मित्र के घर पर, निमन्त्रण में, गई है।

निडिया वहाँ से जुलिया के घर को चली। दोनों शिविका, रात के अन्धकार में, चुपचाप नगर को पारकर, पहाड़ी रास्ते से, विसूवियस की चोटी के नीचे की घाटी की ओर, चल पड़ी।

निडिया अकेले जुलिया के कमरे में बैठकर उत्सुकता के साथ उसकी प्रतीक्षा करने लगी। वह बालिका अपने सदाकालीन अनन्त अन्धकार के बीच बैठकर, असीम वेदना की बिच्छू के डंक मारने की-सी ज्वाला से, जलने लगी।

आधीरात के कुछ पहले कमरे में सावधानी से पैर रखने की आवाज़ से निडिया चौंक उठी।

जुलिया ने धीरे-धीरे निडिया के पास आकर मीठे स्वर में कहा—निडिया! मैं लौट आई। औषध भी पा गई। यह देखो न! नहीं—नहीं, मैं भूलती थी। तुम देखोगी क्योंकर? तुम तो अंधी हो। निडिया! मुझे कोई चिन्ता नहीं रह गई। मैं ग्लकास को अवश्य पाऊँगी।

ग्लकास का नाम सुनते ही निडिया चौंक उठी। हाय! अनजान से उसने अपने पैरों में अपने आप कुल्हाड़ी मार ली! वह ग्लकास को आइयोन की छाती से छीनकर एक और के हाथ में दे रही है! उसने पहले ही जुलिया से खोल

कर क्यों न पूछ लिया कि जिस पुरुष को वह प्यार करती है, उसका नाम क्या है ? निडिया अब क्या करे—किस तरह से ग्लकास की, जुलिया से, रक्षा करे—इसी चिन्ता से उसे मर्म्मान्तक पीड़ा होने लगी ।

उसने जुलिया से पूछा—बहन ! आप जिस ओषधि को लायी हैं, उसका रंग कैसा है ?

जुलिया ने कहा—ठीक जल की तरह ।

निडिया ने पूछा—उसका गन्ध कैसा है ?

जुलिया ने कहा—उसमें किसी प्रकार की गन्ध नहीं है ।

निडिया ने फिर पूछा—यह ओषधि जिस किसी के हाथ में दी जायगी, वही उसके वश में हो जायगा न ?

जुलिया ने कहा—योगिनी ने तो ऐसाही कहा है ।

शारीरिक परिश्रम और मानसिक उत्तेजना के कारण जुलिया की आँखों में शीघ्र ही नींद आने लगी । वह निडिया के बग़ल में रखी हुई आरामकुर्सी पर सोने के लिए कहकर स्वयं अपने पलँग पर जाकर सो गई । वशीकरण की ओषधि से भरी हुई शीशी को बहुत सावधानी से अपने तकिये के नीचे छिपाकर रखती हुई वह निडिया से बोली—निडिया ! अपनी सबसे प्यारी इस दवा को अपने से एक क्षण के लिए भी अलग नहीं करूँगी । जब तक मैं सोयी रहूँगी, तब तक शीशी मेरे

तकिये के नीचे रहेगी। इस दशा में मुझे रात भर अच्छी नींद आयेगी।

निडिया की आखों में नींद नहीं आयी। किस तरह से उस ओषधि की शीशी को अपने हाथ में करूँ, यही उसकी भावना का प्रधान विषय था।

प्रायः देखने में आता है कि किसी मनुष्य की यदि कोई इन्द्रिय काम लायक़ नहीं होती, तो उसकी उस कमी की पूर्ति और दूसरी इन्द्रियाँ कुछ अंश में कर देती हैं। दर्शनेन्द्रिय से वंचित होने से निडिया की श्रवण और स्पर्शेन्द्रिय अत्यन्त प्रखर थी। जुलिया के श्वास-प्रश्वास के शब्द को सुनकर उसने अच्छी तरह से अनुमान कर लिया कि वह गहरी नींद में सो रही है! वह शैया छोड़-कर उठ बैठी और धीरे-धीरे जुलिया के सिरहाने के पास के एक दराज़ के ऊपर सजाई हुई इत्र की शीशियों में से, एक ख़ाली शीशी लेकर, उसे अच्छी तरह से पानी से धोया। इसके बाद, बिल्ली की तरह, धीरे-धीरे क़दम रखती हुई जुलिया के पलँग के पास जाकर, जब देखा कि उसकी नींद काफ़ी गहरी है, तो उसके तकिये में धीरे-धीरे हाथ डाला। जिस प्रकार कृपण रास्ते में बहुमूल्य पत्थर पाकर ख़ुशी के मारे फूल उठता है, वैसे ही निडिया भी अपनी अभीष्ट चीज़ को पाकर ख़ुशी से अपने को भूल गई! उसने बहुत सावधानी से शीशी को तकिये के नीचे से निकाल लिया

और उस औषध को ख़ाली शीशी में उंडेल लिया। इसके बाद सुराही के जल से उस स्फटिक की शीशी को भरकर, पहले की तरह उसमें काग लगाकर, फिर यथा-स्थान रख दिया। रात्रि का शेष समय उसने जगकर बिताया। चिन्ता, उत्सुकता और भय के कारण उसे एक क्षण के लिए नींद न आयी।

प्रातःकाल होते ही वह धीरे-धीरे उठकर जुलिया के घर से बाहर हुई।

जुलिया तब भी गहरी नींद में बेख़बर सो रही थी!

रास्ते में जाती हुई वह बारम्बार अपने पाकेट में हाथ डालकर देखती रही कि औषध की शीशी ठीक तरह से रखी है या नहीं। वह मन ही मन सोचने लगी—

ग्लकास! मैं तुमको जितना प्यार करती हूँ;—संसार भर की सारी वशीकरण की ओषधियाँ खिला देने पर भी तुम मुझे इतना प्यार कर सकोगे, इसमें सन्देह है। आइयोन! जाओ, सन्देह दूर होओ! अनुताप! मेरे पास भी न फटकना। ग्लकास! तुम्हारे मुँह की हँसी मेरे लिए स्वर्ग है, आनन्द की वस्तु। और तुम्हारा अदृष्ट, ग्लकास! तुम्हारा भाग्य—इस छोटी-सी शीशी में है!

---

[१९]

पौराणिक भोज

डायोमेड ने आज दोपहर के भोज में अपने ख़ास-ख़ास मित्रों को निमन्त्रित किया है। सर्वप्रिय ग्लकास, सुन्दरियों में श्रेष्ठ आइयोन, हाकिम पैनसा, श्रेष्ठ कुल में पैदा हुआ निर्धन तथा निठल्ला क्लडियास, पेटू सलास्ट के अतिरिक्त और दो-चार बाहरी लोग भी इस भोज में निमंत्रित हुए हैं।

प्रातःकाल उठकर हाथ-मुँह धोने के बाद, डायोमेड ने सबसे पहले, असली कंजूस की तरह, अपनी रन्धनशाला में जाकर देखा कि रसोइया तथा नौकर क्या कर रहे हैं। उस समय रन्धनशाला मसालों की सुगन्धि तथा अन्य व्यञ्जनों के सुवास से भरी थी। रसोइया व्यस्त भाव से इधर-उधर घूम-फिर रहे थे। उनके बड़े पेटवाले स्वामी ने कब चुपके से रन्धनशाला में प्रवेश किया है, इसकी तरफ़ उनकी बिलकुल निगाह न थी।

बहुत से नये, बेपहचान के, चेहरों को रसोई-घर में घूमते-फिरते देखकर डायोमेड अपने मन में बकते-झकते कहने लगा—मेरा यह कनप्रियो ही नाश करनेवाला है। मौक़ा पाते ही दुनिया-भर के रसोइयों को बुला लाता है। जहाँ दस रुपये का खर्च होता है, वहाँ मुझे पचास रुपये के

खर्च में डाल देता है। हाय ! हाय !! इनके मारे तो, मैं देखता हूँ, मेरा दिवाला निकल जायगा। ये जैसा लम्बा-चौड़ा ढीला चोगा पहने हुए हैं, उससे तो मुझे जान पड़ता है कि मेरे घर का सारा सामान आज ही आधा कर देंगे !

जिस समय डायोमेड अपने मन में इस प्रकार बक-झक रहा था, उस समय रसोइये अपने-अपने काम में व्यस्त थे।

मजदूरी पर काम करनेवाले एक पाचक ने डायोमेड के प्रधान रसोइया कनम्रियो से पूछा—क्या तुम्हारे घर में इससे बड़ा कोई बर्तन नहीं है ? इसमें तिरसठ अंडे नहीं अँटते। मैं बहुत लोगों के यहाँ रसोई बनाता हूँ, किन्तु कहीं पर इतने छोटे से बर्तन में काम करना नहीं पड़ा था।

मुँह टेढ़ाकर डायोमेड ने कहा—चोर कहीं का ! इसमें तो तुम्हारे सात पुरुषों का पिण्डदान तैयार होगा। अपनी होशियारी अपने पास रखो, मेरे घर से अभी बाहर होओ। कनम्रियो, उस कोने में बैठकर क्या कर रहे हो ? फ़ौरन बाहर निकलो ! कहाँ से तुम इन चोर बदमाशों को लाये हो ? इनके चेहरे से जान पड़ता है कि ये सब चोर हैं।

कनम्रियो ने भीतर से बाहर आकर, सिर नवाकर, अपने स्वामी के सामने खड़ा हो, आँख के इशारे से, दूसरे रसोइयों को बताया कि तुम लोग इनकी बात का कुछ खयाल न करो। नीच अगर बढ़-बढ़कर बोले तो बुद्धिमान उसे हँसी में उड़ा देते हैं। यहाँ पर इसी नीति को बर्तना चाहिये।

उसने अपने मालिक से कहा—हुजूर ! मैं जिन लोगों को लाया हूँ, ये ही शहर में··· ···

कनप्रियो की बात को बीच ही में काटकर डायोमेड बोला—क्या शहर में ये ही है ? ये चोर ! क्यों ?

कनप्रियो ने सावधानी से कहा—नहीं हुजूर, मैं, ऐसे लोगों से मेल-जोल नहीं रखता।

डायोमेड फिर कनप्रियो की बात काटकर बोला—"नहीं, कभी नहीं। तुम जैसे साधु हो, वैसेही तुम्हारे हम-जोली भी तुम्हारे मौसेरे भाई हैं, क्यों ? भला यह तो बताओ, क्या तुम यहाँ से मांस चुराकर बाज़ार में मिट्टी के मोल नहीं बेच आते हो ? और यह तो बताओ, बाज़ार में जो मकान तुमने ख़रीदे हैं, उनके लिए दाम कहाँ से पाये ?

कनप्रियो बोला—और जो कुछ मुझे कहना चाहिये, कह लीजिये, लेकिन मुझे चोर न बनाइये। मैं ईश्वर की सौगन्द खाकर······।

डायामेड ने कहा—ख़बरदार, सौगन्द न खाओ। तुम्हारे इस प्रकार साफ़ झूठ बोलने पर कहीं तुमपर बज्र न गिरे ! अच्छा,जाओ, छोड़े देता हूँ, किन्तु यह साफ़-साफ़ कहे देता हूँ कि कल सबेरे उठते ही बरतन, छुरी, चमचा, प्याला आदि सभी चीज़ों का एक-एक करके हिसाब लूँगा। अगर कोई चीज़ टूटी-फूटी अथवा भूली होगी, तो तुमसे

समझूँगा। समझे न? और क्या कहनेवाला था—हाँ, याद पड़ गया। पिछले भोज में कबूतर का मांस इतना कड़ा रह गया था कि लोगों के दाँत किट-किट करते थे। समझ लो बच्चे, अगर फिर इस बार भी वैसाही हुआ, तो या तो मैं ही रहूँगा या तुम्हीं रहोगे!

अन्य रसोइयों की ओर मुँह करके, चुपके से हँसकर, कनग्रियो बोला—हुजूर! क्या सदैव एकसा रहता है? कुछ लोग ऐसे मनहूस होते हैं कि सबेरे उठते-उठते उनका मुँह देखने पर तसला फूट जाता है। इसीलिये आपको कई बार मना कर चुका हूँ कि आप भोज के दिन सबेरे-सबेरे उठकर भोजनागार में छिपा कीजिये।

डायामेड अपने गुणी पाचक की टीका-टिप्पणी का अर्थ समझकर बोला—क्यों, मेरा ही अन्न खाकर मुझी पर ······।

कनग्रियो बोला—हुजूर! क्या मैं यह बात अस्वीकार करता हूँ?

जिस समय कृपण स्वामी और मुँह-लगे नौकर में इस तरह बातचीत हो रही थी, उस समय, मकान के एक ओर, सजे-सजाये और चौड़े कमरे में, एकान्त में, बैठकर डायोमेड की इकलौती बेटी सुन्दरी जुलिया, चित्त लगाकर अपने भविष्य के सम्बन्ध में; नाना प्रकार की कल्पनाएँ कर रही थी। वह यह बात नहीं जानती थी कि मनुष्य कुछ

सोचता है और परमेश्वर कुछ दूसरा ही करता है। जिस ओषधि के बल पर वह ग्लकास को अपने वश में करना चाहती थी, वह ईश्वर के अलंघनीय नियम के अनुसार दूसरे के हाथ में चली गयी है, इसका उसे स्वप्न में भी खयाल न था।

आज के दोपहर के भोज में ग्लकास और आइयोन भी निमंत्रित हुए थे। वे ही मुख्य अतिथि थे। जुलिया के आसन के पास ही ग्लकास का आसन रहेगा, ऐसा निश्चित हुआ था। जुलिया ने मनही मन ऐसा स्थिर कर रखा था कि पीने की शराब में ग्लकास को वशीकरण की ओषधि मिलादूँगी। इस समय आठ बजे हैं। ठीक ग्यारह बजे आमंत्रित लोग खाने को बैठेंगे। ये तीन घण्टे उसे तीन युग के समान बीतने लगे।

---

[२०]

भाई-बहन

आइयोन को लम्पट और धूर्त आरबेसेस के हाथ से बचाकर ले आने के बाद से एपिसाइडिस आइसिस के के मन्दिर में फिर नहीं गया था। पहले ही से मन्दिर के भीतर के दुष्कर्मों को देख-सुनकर आइसिस के रहस्य-

मय धर्म पर से उसका विश्वास उठ गया था। आरबेसेस के उस पाशविक व्यापार को देख लेने के बाद वह उन्हें अत्यन्त घृणा की दृष्टि से देखने लगा।

एपिसाइडिस की शारीरिक और मानसिक अवस्था ख़राब हो जाने से, वह आइयोन से मुलाक़ात करने न जा सका था। आज प्रातःकाल शरीर कुछ स्वस्थ होने के कारण अपनी बहन से भेंट करने जा रहा था।

रास्ते में आरबेसेस के नौकर और उसके कुकर्म में सहायक, अर्थ-पिशाच कैलनस से उसकी भेंट हुई। उस रात की घटना के सम्बन्ध में मानो वह कुछ नहीं जानता है, ऐसा भाव दिखाते हुए कैलनस ने पूछा—क्यों एपिसाइडिस ! कई दिन से तुम मन्दिर में नहीं रहते और न देवी के पूजा-पाठ में ही आकर शामिल होते हो ! बात क्या है ? क्या तुम पर परमात्मा की कृपा नहीं हुई ? क्या माता ने तुम्हें स्वप्न में आकर दर्शन नहीं दिया ?

एपिसाइडिस ने कहा—क्या तुम्हारी माँ किसी को प्रत्यक्ष दर्शन देती है ? अगर वह अपनी असली मूर्ति दिखाती, तो लोग उनके पास बलि देने क्यों कर आते ?

कैलनस ने कहा—क्यों न देगी, एपिसाइडिस ! माँ अपनी सन्तान पर बहुत कृपा-भाव रखती है। क्या तुम इसे स्वीकार नहीं करते ?

एपिसाइडिस ने कहा—वे अवश्य दयालु हैं, नहीं तो

तुम लोग इतना पाप करने पर भी क्योंकर बचे रहते! अन्ध-विश्वास रखनेवाली दुनिया की आँखों में धूल झोंक-कर मज़े से मौज उड़ा रहे हो!

कैलनस ने कहा—क्या आज कोई नयी बात है? युग-युगान्तर से जगज्जननी आइसिस इस प्रकार जगत् को असीम प्रभाव दिखलाती आ रही है; और सृष्टि के अंत तक इसी प्रकार दिखाती रहेंगी। ऐ नादान गर्म मिजाज़ वाले बच्चे! तुम सावधान होओ, फण उठाये हुए सर्प को और न छेड़ना। तुम्हारा भला न होगा।

एपिसाइडिस ने कहा—अपना भला-बुरा सोचने में मैं स्वयं समर्थ हूँ। मुझे तुम्हें सावधान न कराना पड़ेगा। किन्तु मेरा तो कहना यह है कि तुम्हीं सावधान हो जाओ। बाहरी पूजा बन्द हो जाने पर रणचंडी आइसिस का सूखा हुआ खप्पर तुम्हारे ही हृदय के ख़ून से भरेगा।

न जाने क्यों, एपिसाइडिस की बात सुनकर कैलनस की अन्तरात्मा डर से काँप उठी। वह वहाँ पर ज़्यादा देर खड़ा होकर एपिसाइडिस के साथ वादविवाद न कर सका। फुर्ती से वहाँ से चल पड़ा। एपिसाइडिस ने आइयोन के मकान की ओर प्रस्थान किया।

वह जिस समय आइयोन के मकान पर पहुँचा; उस समय आइयोन निडिया को लेकर उद्यान में फूल चुन रही थी।

दूर से एपिसाइडिस को आते देखकर, आइयोन आनन्द के मारे दौड़कर, उसके पास जाकर बोली—भैया! भैया! यह तुम्हारा कैसा व्यवहार है, बोलो तो? उस रात को चले गये, तबसे तुम्हारा दर्शन ही नहीं हुआ। मैं जीती हूँ, या मर गयी, इसकी तुमने खोज-खबर तक न ली!

एपिसाइडिस बोला—छिः-छिः! तुम क्यों मरोगी बहन! मरे तुम्हारा शत्रु। मैं यहाँ पर क्यों नहीं आता था, क्या तुम इसका कारण सुनोगी?

आइयोन ने कहा—अवश्य। और तुम्हारी इस निष्ठुरता के लिए तुम्हारे साथ आज खूब झगड़ा करूँगी।

एपिसाइडिस ने कहा—मैं यहाँ पर अधिक आता-जाता नहीं हूँ, इसका कारण तुम्हारे ऊपर मेरा स्नेह कम होना नहीं है। बहन! मेरी शारीरिक अस्वस्थता और मानसिक खिन्नता ही इसका प्रधान कारण है। इसका एक और भी कारण है। वह भी, तुम्हारे ऊपर मेरा जो अकृत्रिम स्नेह है, उसी का फल है। लड़कपन में पिता-माता के मर जाने पर हम लोग एक कली में दो फूल की तरह शोभते थे; आपस में एक दूसरे के प्रति प्रेम-भाव दिखाते हुए सुखपूर्वक समय बिताते थे। अब उन्माद हम दोनों को अपने नखाघात से विच्छिन्न कर रहा है। आज हम लोगों के उस स्नेह की डोरी टूट रही है! यही विधाता का विचित्र

विधान है। आइयोन! क्या तुमने सचमुच ग्लकास से विवाह करना स्थिर किया है? क्या तुम उसे वास्तव में प्यार करती हो?

आइयोन ने लज्जा से मुँह नीचाकर, पृथ्वी की ओर देखते हुए, कहा—हाँ, भैया।

एपिसाइडिस ने कहा—मुझे एक बात पूछनी है, बहन! क्या तुम उसका ठीक-ठीक जवाब दोगी?

आइयोन ने कहा—अवश्य।

एपिसाइडिस ने कहा—क्या तुम ग्लकास को इतना प्यार करती हो कि उसके लिए अपने आत्मीय लोगों, मित्रों, बन्धुबांधव, समाज, जाति, मान, अहंकार सब को छोड़ सकती हो?

आइयोन ने धीरे से कहा—और क्या नहीं त्याग सकती हूँ भैया!

एपिसाइडिस ने पूछा—प्राण?

आइयोन ने कहा—वह भी त्याग सकती हूँ।

एपिसाइडिस ने कहा—काफ़ी हो चुका। आइयोन! मैं तुम पर बहुत प्रसन्न हुआ। यदि तुम मनुष्य के प्रति, मनुष्य के क्षणस्थायी प्रेम के लिए, ऐसा त्याग स्वीकार कर सकती हो, तो यदि मैं भगवान के चिर-स्थायी प्रेम के लिए आत्म-बलिदान करूँ तो क्या अन्याय है?

आइयोन ने कहा—हरगिज़ नहीं।

भाई-बहन प्रेम-गद्गद् हृदय से, दोनों, दो रास्ते से, एक ही प्रेम-देवता की खोज में चले। संसार के कर्म-क्षेत्र में वे अलग भले ही हुए, किन्तु उनका वह क्षणिक विच्छेद केवल अनन्त मिलन के लिए हुआ!

---

[२१]

बदला लेने की तैयारी

आज के भोज में डायोमेड ने विलासी ग्लकास को हरा देने के उद्देश्य से यथासाध्य चेष्टा और तैयारी की थी। तरह-तरह की चटपटी चीज़ें और अनेक प्रकार की मूल्यवान शराबें उस कंजूस ने जुटाई थीं।

भोज में ग्लकास का आसन सबकी अपेक्षा अच्छे स्थान पर रखा गया था, जैसा भोजों में विशिष्ट अतिथि के लिए होता है। आइयोन का आसन उसकी दाहिनी ओर था; जुलिया का बायीं ओर। गृहस्वामी डायोमेड जुलिया के बग़ल में बैठे। क्लाडियास, सलास्ट और अन्यान्य मित्र मेज़ के चारों तरफ़ अपने-अपने निश्चित स्थान पर बैठ गये।

पौराणिक युग में प्रीति-भोज केवल पेट भरनेवालों

का सम्मिलन-मात्र नहीं होता था। उन भोजों में विलासी लोगों की मानसिक तृप्ति हो, इसके लिए यथासाध्य चेष्टा की जाती थी। भोजन करने के लिए बैठे हुए गृह-स्वामी द्वारा आमंत्रितों में से एक प्रतिष्ठित व्यक्ति को भोज का परिचालक नियुक्त किया जाता था। चार्व्वाक दर्शन-शास्त्र का पंडित सलास्ट सर्व-सम्मति से आज के भोज का परिचालक नियुक्त हुआ।

भोज के पहले ही उसने कहा—आज के भोज में मैं राजा हूँ। राजा का हुक्म कोई टाल नहीं सकेगा। मेरा यह हुक्म है कि एक बड़ा भारी गमला मेज़ के ठीक बीच में रखा जाय, उस गमले में अनेक प्रकार की मदिरा ढाल-कर उसका कोना-कोना भर दिया जाय। उसके ठीक बीच में एक गेंदे का फूल डाल दिया जाय और सब को एक एक स्फटिक का नल दे दिया जाय। शराब के गमले के चारों ओर नल लगाकर हम सब लोग एक साथ खींचना आरम्भ करें। खींचने के ज़ोर से जिसकी ओर वह गेंदे का फूल चला जायगा, उसी को हमारे दल में सब से ऊँचा स्थान दिया जायगा।

सलास्ट का हुक्म तत्काल मान लिया गया।

भोज प्रायः समाप्त होने को था। इतने में जुलिया ने ग्लकास के कान में धीरे से कहा—ग्लकास, तुमसे मुझे एक बहुत गुप्त बात कहनी है। अतिथियों के चले जाने पर तुम

मुझसे मुलाकात किये बिना न जाना। अगर तुम ऐसा करोगे तो मैं जानूँगी कि तुम शिष्टाचार बिलकुल नहीं जानते।

ग्लकास ने कहा—सुन्दरी, घबड़ाओ मत। मैं यहाँ से जाने के पहले तुमसे अवश्य भेंट करके जाऊँगा।

सब लोगों के चले जाने पर, जुलिया, ने ग्लकास को, एकान्त में, अपने कमरे में ले जाकर, बैठाया।

कुछ देर तक ज़मीन की ओर निगाह किये रहकर, ग्लकास की ओर मुँह फिराकर, जुलिया ने एक रूखी हँसी हँसकर कहा—ग्लकास! मैं देख रही हूँ, तुम आइयोन के प्रेम में एकबारगी पागल हो गये हो! भला होगे क्यों न! आइयोन सुन्दरी है ही!

ग्लकास बोला—श्रीमती जुलिया देवी भी आइयोन से सुन्दरता में कम नहीं है। हाँ सुन्दरी! तुम्हारा अनुमान ठीक है। मैं आइयोन को ख़ूब चाहता हूँ।

जुलिया ने कहा—मैंने सुना है, तुम आइयोन से शादी करनेवाले हो। क्या यह बात सच है?

ग्लकास ने उत्तर दिया—जुलिया! विवाह का दिन तक स्थिर हो गया है।

जुलिया ने कहा—तुम्हारी शादी में तुम्हारी नयी बहू को मैं कुछ उपहार देना चाहती हूँ। लेने में कोई आपत्ति तो नहीं है?

ग्लकास ने कहा—स्नेह-भेंट का जो निरादर करता है, वह बड़ा ही बदतमीज़ है।

जुलिया ने जाकर, दराज़ खोलकर, महँगे काठ का एक बक्स निकाला। उसमें बड़े-बड़े-मोतियों की एक माला थी। उसी को ग्लकास के हाथ में देकर उसने कहा—ईश्वर के आशीर्वाद से, आइयोन, सौभाग्यवती रहकर, तुम्हारे प्रति मेरे अकृत्रिम प्रेम के निदर्शन-स्वरूप, इस माला को पहने।

उस समय की प्रथा के अनुसार, इस प्रकार के उपहार के आदान-प्रदान के समय, दाता, गृहीता के हाथ में, भेंट देते समय, एक प्याला भरकर शराब, पीने के लिए, देता था। गृहीता उस प्याले को ख़ाली कर देता था, तो यह समझा जाता था कि उसने दाता की भेंट को ख़ुशी से स्वीकार कर लिया।

जुलिया ने एक स्फटिक के प्याले में, ख़ून की तरह बिलकुल लाल रंग की, मूल्यवान शराब भरी। इसके बाद, धीरे से ग्लकास की निगाह बचाकर, दराज़ के कोने से एक स्फटिक की शीशी निकालकर, उसमें जितना जल का-सा द्रव्य था, उसको उस प्याले में ढालकर, उसे लेकर, ग्लकास के हाथ में दिया। ग्लकास ने एक घूँट में उसे ख़ाली कर दिया।

जुलिया ग्लकास की ओर निगाह गड़ाकर देखने लगी

कि ग्लकास के मुँह, आँख अथवा दूसरे किसी अंगपर भावान्तर दिखाई पड़ता है या नहीं। यह क्या! कुछ भी नहीं! तो क्या विसूवियस की योगिनी की बात बिलकुल झूठ है? यह भी हो सकता है कि औषध का असर कुछ देर में हो। आज इसका फल नहीं दिखाई पड़ता है। सम्भव है, कल दिखाई पड़े।

मायाविनी आशा! आशा के मोह में पड़कर जुलिया आकाश-पाताल सोचने लगी। निडिया ने जो चाल चली थी, उसकी ओर उसका ज़रा भी ध्यान न गया।

---

[२२]

औषध का असर

ग्लकास जिस समय घर पहुँचा, उस समय निडिया ग्लकास के मकान के बाहरी दरवाज़े के पास बैठकर, आँचल भरकर फूल ले, माला गूँथ रही थी। आज उसके हृदय में एक द्वन्द्वयुद्ध मचा हुआ था। उसके मन में उत्सुकता, भय, संशय एक साथ उठकर उसे आलोकित कर रहे थे। चाहे जिस तरह से हो, ग्लकास को पीने की चीज़ में, जुलिया के कमरे में से चुरायी हुई वशीकरण की औषध मिलाकर दूँगी, एकान्त में बैठकर मन ही मन वह यही संकल्प कर रही थी।

बहुधा ऐसा होता है कि मनुष्य जो सुविधा ढूँढ़ता है, विधाता उसे वह सुविधा आप से आप दे देता है। संयोग से निडिया को भी ऐसा ही सुअवसर मिल गया।

बहुत ठूँस-ठूँसकर खा लेने के परिणाम-स्वरूप, डायोमेड के घर से लौटते समय, रास्ते ही में ग्लकास को ज़ोरों से प्यास लग गयी थी। निडिया को बाहर बैठे देखकर, ग्लकास ने ऊपर न जाकर, निडिया के बग़ल में ही, एक आसन पर जाकर बैठते हुए, कहा—ओह! आज बड़ी गर्मी है। भोजन भी कुछ अधिक चढ़ा लिया है। मैं यहीं पर हवा में कुछ देर तक बैठता हूँ। निडिया, तुम घर में जाकर, नौकर को बुलाकर, मेरे लिए बर्फ़ मिलाकर शरबत तैयार कर ले आने को कहो।

निडिया उत्सुकता के साथ व्याकुल-हृदय हो, जो सुविधा ढूँढ़ रही थी वही सुविधा घटना-क्रम से आपसे आप आकर उपस्थित होगयी।

निडिया ने कहा—नौकर को बुलाने की ज़रूरत ही क्या है? मैं ख़ुद जाकर आपके लिए एक प्याला शरबत तैयार कर लाती हूँ। मीठी शराब और शरबत के मिश्रण से तैयार किया हुआ शरबत आइयोन की तरह प्रिय होगा।

ग्लकास ने कहा—क्या सचमुच? आइयोन को जो प्रिय होगा, वह चाहे विष ही क्यों न हो, मेरे लिए अप्रिय

नहीं हो सकता। जाओ निडिया, जल्दी शरबत तैयार करके लाओ—देखूँ तो कैसा तुम्हारा शरबत है।

ग्लकास की बात सुनकर निडिया के ललाट पर एक भ्रकुटि-रेखा फूट उठी। वह दूसरे ही क्षण अपने भाव को छिपाकर, एक मीठी हंसकर, घर के भीतर चली गयी। कुछ देर के बाद एक प्याला शरबत हाथ में लिये आकर उसने ग्लकास के हाथ में दे दिया।

ग्लकास ने एक घूँट में आधा शरबत पी लिया, सहसा उसकी नज़र निडिया के मुँह की ओर गयी। निडिया के चेहरे पर उत्सुकता, भय और हर्ष के भाव क्षण-क्षण में उठते और विलीन होते थे। ग्लकास उसे देखकर विस्मित हुए बिना न रहा। उसने पूछा—क्यों, क्या तुम्हें कोई कष्ट मालूम हो रहा है? क्या तुम अपने अन्दर किसी प्रकार के दुःख का अनुभव कर रही हो, जो तुम्हारा मुँह ऐसा दिखाई पड़ रहा है?

ग्लकास ने बाक़ी शरबत पीकर ख़ाली प्याले को मेज़ पर रख दिया। सहसा एक अलौकिक प्रफुल्लता से ग्लकास का मन भर उठा। वह आसन से उठकर जिस ओर निडिया खड़ी थी, उसी ओर अग्रसर हुआ। सहसा ग्लकास ने, अपनी छाती के नीचे, एक प्रकार की सुई चुभोनें की सी यन्त्रणा का अनुभव किया। दूसरे ही क्षण उसका माथा कुम्हार के चाक की तरह घूमने लगा।

उसके नीचे से ज़मीन मानो खिसकने सी लगी। वह मानो हवा में पाँव रखते हुए चलने लगा। उसे ऐसा जान पड़ने लगा, मानो उसकी पीठ में बड़े-बड़े पंख निकल आये हैं। वह मानो पक्षी की तरह आकाश में उड़ने लगा। न कोई बात, न चीत, बिना कारण ही वह 'हो-हो' करके हँसने लगा! दोनों हाथों से ताली बजा-बजाकर वह नाचने लगा! सहसा उसका वह अनैसर्गिक भाव बदल गया। उसके मुँह और आँखों पर शोक की काली छाया घनीभूत होने लगी। उसके शरीर के रग-रग में .खून का दौरा .खूब तेज़ी से होने लगा। तेज़धारवाली पहाड़ी नदी का बाँध टूट जाने पर जिस प्रकार उसके दोनों तट पानी से डूब जाते हैं, वैसे ही ग्लकास के शरीर में उसी प्रकार भाव का स्रोत प्रवाहित होने लगा। ग्लकास अपने कान के ठीक बीच में ढेंकी चलने की-सी आवाज़ सुनने लगा। उसके सिर की नसें फूल उठीं। सहसा उसके नेत्रों के सामने से प्रकाश ओझल हो गया और उसके ऊपर एक कुहरे का आवरण पड़ गया। किन्तु आश्चर्य की बात तो यह है कि ऐसा अभावनीय भावान्तर संघटित हुआ, किन्तु ग्लकास .खुद कुछ नहीं समझ सका। वह क्रमशः पागल हो रहा है, इसका उसके मन में ज़रा भी ज्ञान नहीं रहा।

ग्लकास का यह भावान्तर देखकर निडिया भय के मारे काँप उठ!

वह घबड़ाई हुई बोली—ग्लकास! ग्लकास! चुप क्यों हो? बात क्या है? बोलिये, आप मुझसे प्रेम करते हैं या घृणा?

इस बात का कोई उत्तर न देकर ग्लकास अपने मनही मन कहने लगा—आह! क्या ही सुन्दर यह देश है! यहाँ के लोगों की नस-नस में .खून के बदले शराब का श्रोत बहता है! जिधर दृष्टि डालता हूँ, पेड़ों में खिले हुए फूल हैं; जिधर सुनता हूँ, वहीं केवल कोयल की कूक और पपीहरे का मधुर गान सुनाई पड़ता है! उसमें तुम्हारे लाल होठों की हँसी, नये उगते हुए सूर्य की लाली, किरणों में, दिखाई देती है। तुम्हारी आँखों से बच्चे का-सा भोलापन, तुम्हारे अंग-प्रत्यंग से युवती की स्त्री कमनीयता टपकती है। तुम कौन हो

निडिया ने कहा—ग्लकास!—ग्लकास! क्या आप मुझे पहचानते नहीं है? मैं ही निडिया हूँ।

ग्लकास ने उसकी बात पर कुछ भी ध्यान नहीं दिया। वह अपने मन में कहने लगा—यह क्या सुन्दरी! तुम मुझ से बात क्यों नहीं करती हो? जान पड़ता है, तुम मुझे प्यार नही करती हो!

सहसा ग्लकास के मुँह का भाव बदल गया। वह मानो दूर से किसी के पुकारने की आवाज़ सुन रहा है, ऐसा भाव दिखाकर अपने मनहीं मन कहने लगा—क्यों? मुझे

कौन पुकारता है ? क्या आइयोन है ? हाँ, आइयोन ही है। तुम रोती क्यों हो आइयोन ? दुष्ट मिश्र का भिक्षुक आरबेसेस तुम्हें बल-पूर्वक हरण करके लिये जाता है। डरो मत ! मैं अभी आता हूँ। अभी आकर दुराचारी को काफ़ी दण्ड देता हूँ। क्यों, मेरी तलवार कहाँ है ? मेरी तलवार !

खुली हुई तलवार हाथ में लेकर वह सड़क पर आगया। निडिया स्तम्भित और हत-बुद्धि सी खड़ी हो, अनुताप के आग में जलने लगी।

---

[२३]

एपिसाइडिस की हत्या

जुलिया ग्लकास को औषध खिला सका या नहीं, आरबेसेस इसी भावना से अस्थिर हो उठा। इस सम्बन्ध की पक्की ख़बर जानने के लिए वह ख़ुद ही टहलते-टहलते डायोमेड के मकान की तरफ़ चला। दैवयोग से एपिसाइडिस भी उसी समय उस रास्ते से आ रहा था। दोनों आदमियों का एक बार आमना-सामना होने पर कोई किसी के बग़ल से होकर न जासका।

चतुर आरबेसेस, अनुताप का भान कर, मीठे स्वर में बोला—बच्चा एपिसाइडिस ! तुम उस दिन की रातवाली घटना से मुझ पर सख्त नाराज़ हो, यह बात मैं अच्छी तरह से जानता हूँ । मनुष्य-मात्र इन्द्रियों का दास है। मुझे स्वयं उसके लिए बड़ा दुःख और पश्चाताप होता है ।

धूर्त आरबेसेस की बात सुनकर एपिसाइडिस का सारा शरीर क्रोध से जल उठा । उसने कठोर भाषा में कहा—लम्पट ! धोखेबाज़ ! तुम मृत्यु के हाथ से भी बच गये ! जान पड़ता है, नरक में भी तुम्हारे लिए स्थान नहीं है !

आरबेसेस—एपिसाइडिस, धीरे-धीरे बोलो । आम रास्ते पर खड़े होकर, इस प्रकार आपे से बाहर होकर, बातचीत करना क्या शिष्टाचार-संगत है ?

एपिसाइडिस—नीच ! बगुलाभगत ! बर्बर ! क्या तुम्हारे पास जाकर मुझे शिष्टाचार सीखना पड़ेगा ? मेरा दुर्भाग्य है कि...।

आरबेसेस—एपिसाइडिस ! तुम्हारा हाथ धरकर मैं प्रार्थना करता हूँ कि तुम चुप रहो। मिश्र देशवासी आरबेसेस ने आज तक किसी के सामने सिर नहीं नवाया था । आज वह अत्यन्त दीनभाव से तुमसे क्षमा चाहता है । मुझे क्षमा करो । मैं ने जो अपराध किया है, इस समय जिस तरह उसका प्रायश्चित्त हो, वह काम मैं करने को

तैयार हूँ। मैं तुम्हारी बहन को धर्म्म-पत्नी बनाने के लिए तैयार हूँ। एपिसाइडिस ! .खूब विचार करके देखो, मुझ में और उस लम्पट ग्रीक में कितना अन्तर है !

एपिसाइडिस—दुष्ट धोखेबाज़ ! विवाह तो दूर की बात है, मेरी बहन अपने बायें पैर की सबसे छोटी अँगुली से भी तुम्हारी देह नहीं स्पर्श करेगी !

आरबेसेस अपने क्रोध को और नहीं रोक सका। सिंह की तरह क्रोध से गर्जते हुए वह बोल उठा—सावधान मूर्ख ग्रीक ! किस तरह से शोख़ की ज़बान रोकी जा सकती है, इसे भिक्षुक आरबेसेस भली भाँति जानता है।

एपिसाइडिस—धूर्त की धूर्तता किस तरह से दूर की जा सकती है, लम्पट पर शासन किस प्रकार किया जा सकता है, ग्रीक एपिसाइडिस को भी यह बात मालूम है। महापापी आरबेसेस ! तुमसे बातचीत करना भी पाप है। मैं चला। तुम्हें जो करना हो, उठा न रखना।

एपिसाइडिस और कुछ न कहकर, उसके बग़ल से होकर, अपने गन्तव्य मार्ग को चलने लगा। उसने पीछे को एक बार भी न देखा। हत्यारे आरबेसेस ने एक बार अच्छी तरह से इधर-उधर ताककर देखा कि रास्ते पर दूसरा आदमी है या नहीं। जब उसने देखा कि जहाँ तक दृष्टि जाती है, वहाँ तक कोई आदमी नहीं दिखाई पड़ता, तो उसने .फुर्ती से, अपनी कमर से एक चाकू. निकालकर,

धीरे-धीरे जाकर, एपिसाइडिस के पीछे से, उसकी पीठ पर, दो बार चाकू से आघात किया। दोनों बार चाकू उसके हृदय में घुसा और उस संघातक आघात से वह चिल्लाकर, ज़मीन पर लोट गया और शीघ्र ही मूर्छित हो गया।

ठीक उसी समय, उधर से, उन्मादी ग्लकास, हाथ में नंगी तलवार लिये, उस स्थान पर पहुँचा। चतुर आरबेसेस ने, ग्लकास के मुँह का भाव देखकर, फ़ौरन ताड़ लिया कि दवा का असर आरम्भ हो गया है। ग्लकास बिलकुल पागल हो गया है। उसे देखते ही आरबेसेस के हृदय में .खून की तीव्र प्यास जग उठी। सिंह की तरह, एक छलांग में, ग्लकास पर कूदकर, उसने उसे एक ऐसे ज़ोर का धक्का दिया कि वह उसी धक्के से एपिसाइडिस की रक्त से सनी हुई मृत देह पर जागिरा। तब आरबेसेस ने चटपट जाकर, उसके हाथ से, उसकी तलवार छीनकर उसे एपिसाइडिस के .खून से डुबोकर, वहीं फेंक दिया; और फिर वह '.खून! .खून!' कहते हुए चिल्ला उठा।

उसकी चिल्लाहट से फ़ौरन लोग वहाँ पर जमा हो गये। सभी लोग उस लोभ-हर्षण घटना को देखकर स्तम्भित हो गये।

एक पहरेदार आकर, घटना-स्थल पर उपस्थित हो, बोला—यह क्या! खून!! किसने यह काम किया?

एक नागरिक ग्लकास को दिखाकर बोला—इसी ने !

पहरेदार ने कहा—इसका चेहरा देखने पर तो यह .खूनी नहीं जान पड़ता है। इसे .खून करते हुए किसने देखा है ? कौन गवाह है ? पहरेदार की ओर अग्रसर होकर आरबेसेस ने तपाक से कहा— मैं।

पहरेदार ने वक्ता की बेशक़ीमती पोशाक और उसके अभिमान भरे चेहरे का भाव देखकर, उसे कोई ऊँचे ओहदे का आदमी समझ, उससे बड़े अदब से पूछा—मेरा क़सूर माफ़ करें, आपका नाम क्या है ?

उसने धीर और गम्भीर स्वर में कहा—आरबेसेस।

गवाह का नाम सुनाकर उसे इधर-उधर करने की कोई ज़रूरत न रही। उसने ग्लकास के पास जाकर पूछा—अपराधी ! तुम्हारे ऊपर .खून करने का दोष लगाया जाता है, इस सम्बन्ध में तुम्हें कुछ कहना है ?

ग्लकास 'हो'-'हो' करके हँसते हुए बोला—आज मेरा ब्याह है। जान पड़ता है, तुम लड़कीवाले की ओर के हो ! वर की अगवानी करने के लिए आये हो !

एक दर्शक बोल उठा—.खून करके अब पागल होने का बहाना कर रहा है।

एक दूसरे दर्शक ने कहा—बाघ या सिंह के मुँह के पास जाने पर सारा पागलपन दूर हो जायगा !

आरबेसेस ने पहरेदार से कहा—आसामी को थाने ले जाओ। मैं अभी फ़ौजदार के पास जाकर उनसे मुलाक़ात करता हूँ।

धूर्त की मनोकामना पूरी हुई। एक ढेले से दो चिड़ियों का शिकार हुआ। एक गोली से उसने प्रबल शत्रु एपिसाइडिस को मारकर ग्लकास को भी धर दबाया!

---

[२४]

आरबेसेस की धूर्तता

रात ज़्यादा चली गई है; फिर भी पम्पियाई शहर के विलासी अब भी समुद्र-तट की सड़कों, स्नानागारों, उपवनों में, जहाँ जिसे अच्छा मालूम होता है, वहाँ टहल रहे हैं। एपिसाइडिस की हत्या के विषय को लेकर कुलीन समाज और हत्या के अपराधी ग्लकास की निजी मित्र-मण्डली में अनेक प्रकार की टीका-टिप्पणी और तर्क-वितर्क हो रहा था।

स्थूलकाय डायोमेड स्नानागार से हाँफते-हाँफते बाहर हो रहा था। एक दुबला-पतला आदमी भी ठीक उसी समय स्नानागार में रह गया था। डायोमेड के शरीर से धक्का लगने से वह बेचारा गिरता-गिरता बचा!

डायोमेड चौंककर बहुत रुखाई से बोल उठा—क्यों बे अन्धे ! क्या तुम बिलकुल ही नहीं देखते ? क्या देख नहीं रहे हो कि एक आदमी रास्ते से आरहा है ?

दुबला आदमी घबड़ाकर बोल उठा—कौन ? डायोमेड ! अहा ! तुम हो भाई ! माफ़ करो । मैं अनमना होकर चल रहा था, इसी से तुम्हें नहीं देख सका । मैं यही सोचता हुआ आ रहा था कि मनुष्य के भाग्य में न जाने कब क्या होता है ? आज ही दोपहर को ग्लकास के साथ, तुम्हारे घर पर, निमंत्रण खाया था; उस समय ग्लकास की कैसी दशा थी ! आज शाम होते-होते, वह, हत्या के अपराध में, पकड़ लिया गया !

डायोमेड बोला—जैसा कर्म, वैसाही फल ! समझे भाई, इन सब विदेशियों से हम लोगों का ज़्यादा मिलना-जुलना ठीक नहीं। हाँ, तो क्या ग्लकास का अपराध प्रमाणित हो गया ?

क्लडियास—जब ख़ुद मौक़ेपर पकड़ लिया गया है तो फिर प्रमाण की क्या आवश्यकता है ? फिर उसके विरुद्ध प्रधान साक्षी हैं। भिक्षुक आरबेसेस को, जिनकी एक बात का मूल्य करोड़ रुपया है, अब उठकर पथ्य न खाना पड़ेगा ।

डायोमेड—तो इस बार जानवर का तमाशा अच्छी तरह से देखने को मिलेगा ! ग्लकास को बाघ के

पिंजड़े में देना स्थिर हुआ है या सिंह के ?

क्लडियास—इसका ठीक-ठीक पता अभी तक मुझे नहीं चला है। अगर फ़ौजदार के साथ हम्माम में भेंट होगी तो उससे ठीक ख़बर मालूम होगी।

डायोमेड—मैं भी इस ख़बर को जानने के लिए बड़ा उत्सुक था। अगर तुम्हें कुछ मालूम हो, तो मुझसे भी कह जाना। जुलिया सुनकर कितना .खुश होगी। तुम घर लौटते समय मेरे घर से होते जाना। मैं तुम्हारे लिए एक अच्छी चीज़ निकाल रखूँगा। देखो, भूल न जाना।

क्लडियास—नहीं, कभी नहीं भूलूँगा।

डायोमेड के चले जाने पर क्लडियास मन ही मन कहने लगा—अगर कहीं वह जानवर के पेट में चला गया तो जुलिया को हाथ करने में अड़चन न होगी। न जाने ग्लकास कौन सा जादू जानता है कि स्त्रियाँ देखते ही उस पर लट्टू हो जाती हैं! अब बच्चू के बाघ के पेट में चले जानेपर मेरा रास्ता बहुत कुछ साफ़ हो जायगा। आज सन्ध्या समय से ही ग्लकास का ज़ामिन होने के लिए दरवाज़े दरवाज़े घूम रहा हूँ। लेकिन विदेशी आदमी का भला ज़ामिन कौन होगा ? सलास्ट बिलकुल गँवार है, इसी से चटपट ग्लकास का ज़ामिन बनकर उसे उसके घर पर ले जा रहा है। सहसा उसके चिन्ता-स्रोत में बाधा पहुँची।

किसी ने पीछे से आकर उसे सम्बोधन कर कहा—मित्र क्लडियास !

क्लडियास ने पीछे को फिरकर देखा—मिश्री भिक्षुक आरबेसेस है !

आरबेसेस बोला—मित्र क्लडियास ! सलास्ट का घर कौन है, मुझे बता सकते हो ? उससे मुझे अभी भेंट करना आवश्यक है। देखूँ, कोशिश करके ग्लकास को किसी तरह से बचा सकता हूँ, या नहीं।

क्लडियास बोला—आप जैसा उदार पुरुष संसार में वस्तुतः दुर्लभ है।

आरबेसेस—परोपकार मेरे धर्म की सर्वोत्तम नीति है।

क्लडियास—फिर एक बात भी तो है। ग्लकास को न्याय-संगत दण्ड से बचा देना भी एक बड़ा भारी अन्याय-कर्म होगा। बाघ के पिंजड़े में, भाग्य से, एक अच्छा आदमी भगवान ने भेज दिया है !

शहर के लोग इस आशा में बैठे हैं कि इस बार, जी खोलकर, जानवर का खेल देखेंगे ! उनकी इस आशा पर पानी फिर जाने पर, उन्हें कितना मानसिक कष्ट होगा, एक बार इसे भी तो सोचिये !

आरबेसेस बोला—तुम लोग सांसारिक जीव हो। तुम

लोगों को यह शोभा देता है। किन्तु जिसने भगवान के चरणों में अपना तन-मन-धन अर्पित कर दिया है, उसकी बातें ही और होती हैं।

इस प्रकार परस्पर बातचीत करते हुए क्लुडियास और आरबेसेस सलास्ट के समीप पहुँचे। क्लुडियास, आरबेसेस को, दूर से घर दिखाकर लौट आया।

सलास्ट के मकान की सीढ़ी के ऊपर, काले कम्बल में मुँह लपेटे सोये हुए, एक आदमी को देखकर, उसे पैरों से एक ठोकर देकर, आरबेसेस ने कहा—रास्ता छेककर कौन सोया हुआ है? उठ!

आरबेसेस के स्वर को सुनकर निडिया ने जवाब दिया—आपने मुझे पहचाना नहीं!—मैंने तो आपको पहचान लिया है। आप बहुत शक्तिशाली हैं। आपके लिए असम्भव को सम्भव करना भी कुछ कठिन नहीं। मैं आपके पैरों पड़ कर प्रार्थना करती हूँ कि आप ग्लकास को बचा लीजिये। अगर आप चाहेंगे, तो आसानी से उन्हें बचा सकते हैं। ग्लकास का कोई अपराध नहीं, अपराध मेरा है। वह जो चीज़ खाकर पागल हुए हैं, उसे आप जानते हैं। उसकी प्रतिषेधक ओषधि भी आपको मालूम है।

आरबेसेस ने कहा—चुप रहो, मैं सारी बात जानता हूँ। मैं उसे बचाने के लिए आया हूँ। अगर तुम चिल्ला-

ओगी, तो मैं कुछ नहीं कर सकूँगा। तुम यहाँ से चली जाओ।

किन्तु निडिया गयी नहीं। वह वहीं पर, सीढ़ी के कोने में, कुछ सरककर, फिर पहले ही की तरह कम्बल ओढ़ कर, सो रही।

आरबेसेस सलास्ट के दरवाज़े पर कराघात करने लगा। एक नौकर ने आकर उससे पूछा—आप कौन हैं? आपका क्या काम है?

आरबेसेस उससे बोला—मेरा नाम आरबेसेस है। विशेष प्रयोजनवश मैं अभी एथेनियन ग्लकास से मुलाक़ात करना चाहता हूँ। अपराधी से भेंट करने के लिए मैं फ़ौज दार के यहाँ से आदेश लाया हूँ।

नौकर ने जाकर यह बात अपने स्वामी सलास्ट से कही। सलास्ट का चित्त उस समय ठिकाने पर न था। उसका नियम था कि किसी दुःसंवाद के पाने वा किसी दुर्घटना के घटित होने पर, शराब और नाना प्रकार के स्वादिष्ट द्रव्य खाकर वह उस दुखप्रद स्मृति को ढककर रखने की चेष्टा किया करता था। इसीलिए आज सलास्ट के मकान पर मदिरा का स्रोत बह रहा था।

आरबेसेस का नाम सुनकर सलास्ट ने नौकर को हुक्म दिया—उससे आने को कहो।

आरबेसेस के कमरे में प्रवेश करते ही, सलास्ट, एक

प्याला शराब लेकर, बोला—आइये भिक्षुक आरबेसेस ! इतनी रात जाने पर ग़रीब पर आपने कैसे कृपा की ? पहले एक प्याला ख़ाली कीजिए ! फिर पीछे बातचीत होगी ।

आरबेसेस बोला—भाई सलास्ट ! मुझे माफ़ करो । देवी के मन्दिर के शोधे हुए आसव को छोड़कर दूसरा, किसी प्रकार का, द्रव्य मैं नहीं सेवन करता ।

सलास्ट बोला—मैं देखता हूँ, आप बिलकुल अरसिक जीव हैं । अगर शराब नहीं पियेंगे तो यहाँ पर आये ही क्यों ?

आरबेसेस—नहीं मित्र ! फ़ौजदार का आदेश लेकर मैं एक बार आपके मित्र ग्लकास से भेंट करने आया हूँ ।

सलास्ट—बेचारा अभी ज़रा शान्त हुआ है । क्या उसे छेड़े बिना काम नहीं चल सकता है ?

आरबेसेस—मेरे साथ उसका मुलाक़ात करना उसी के लिए कल्याणप्रद होगा ।

सलास्ट—मुझे यह अच्छा तरह से मालूम है, शनि महाराज ! मंगल तो आपके मौसेरे भाई हैं । फिर भी, जब इतनी दूर तक आप आये हैं, तो जाइये, मुलाक़ात कर आइये । बेचारा इसी पासवाले कमरे हैं । तब तक मैं एक गिलास फेलरनियन शराब और कुछ कबाब और खा लूँ ।

बग़लवाले कमरे में ग्लकास उस समय कुछ शान्त होकर बैठा था। नशा कम हो जाने से लोगों को जैसी खुमारी जान पड़ती है, ग्लकास को भी वैसी ही .खुमारी मालूम हो रही थी। उसके शरीर और मन के भीतर मानो भीषण तूफ़ान बहा है, इसका वह अच्छी तरह अनुभव कर रहा था।

कमरे में पैर रखते ही आरबेसेस, मुस्कराते हुए, बोला—ग्लकास! इतने दिन तक मैं तुम्हारा शत्रु रहा हूँ। किन्तु आज इतनी अँधेरी रात में, मैं तुम्हारे परम मित्र की भाँति, तुमसे मुलाक़ात करने के लिए आया हूँ।

ग्लकास ने हठात् उसे देखकर, विस्मित हो, धीरे-धीरे कहा—यह क्या! मैं स्वप्न तो नहीं देख रहा हूँ?

आरबेसेस बोला—नहीं ग्लकास! तुम स्वप्न नहीं देख रहे हो। तुम जगे हुए हो, मैं तुम्हें बचाने के लिए यहाँ पर आया हूँ। मेरी सलाह सुनो। इस बार तुम्हारी जान बच जायगी। सुनो ग्लकास! अच्छी तरह से सोचकर देख लो कि तुमने कितना भयानक अपराध किया है! इसका परिणाम क्या होगा, जानते हो? प्राण-दंड!

ग्लकास का दिमाग़ यद्यपि पहले से बहुत कुछ ठीक हो गया था, तो भी आरबेसेस की बात सुनते ही मानो उसके उन्माद के लक्षण फिर से दिखाई पड़ने लगे। वह भाव-

रहित दीन नेत्रों से अपने परम शत्रु के मुँह की ओर देखने लगा।

आरबेसेस ने कहा—तुम्हारा क़सूर यद्यपि बड़ा भारी है, फिर भी मैं चेष्टा करूँ, तो तुम्हें बचा सकता हूँ। एक शर्त पर मैं तुम्हारी जान बचाने की यथासाध्य कोशिश कर सकता हूँ। वह शर्त यह है कि तुमने .खुद एपिसाइडिस की हत्या की है, यह बात इस काग़ज़ पर लिखकर अपना दस्तख़त बनाकर मुझे दे दो। अपराध करके उसे अदालत में हाकिम के सामने स्वीकार कर लेने पर हाकिम को दया आती है। ग्लकास! अच्छी तरह से समझ लो। तुम्हारे सामने इस समय दो रास्ते हैं। एक तो लिखित अपराध स्वीकार कर लेना, दूसरा सिंह के मुँह का कौर बनना।

ग्लकास चिन्तित भाव से मीठे स्वर में बोला—मेरी समझ में तो कुछ नहीं आता है। हा दुर्भाग्य! क्या यही तुम्हारी क्रूरता का नमूना है! आज ही प्रातःकाल, कुछ ही घंटे पहले, मेरा भविष्य फूल की भाँति उज्ज्वल था। मुझे सब सुख था। मेरी जवानी, स्वास्थ्य, प्रेम सब कुछ था। राज-राजेश्वर के ऐश्वर्य से मैं भरापूरा था। और इस समय? इससमय मेरे शरीर में भयानक यन्त्रणा, मन में दारुण अवसाद है! क्यों? मैंने क्या किया है? मैं पागल हो गया था। क्या अब भी मेरा पागलपन बना हुआ है?

धीर-गम्भीर स्वर में आरबेसेस बोला—ग्लकास फिर

भी कहता हूँ अपनी स्वीकृति लिखकर हस्ताक्षर कर दो। तुम साफ़ बच जाओगे।

ज़ख्मी सिंह की तरह गर्जकर ग्लकास बोला—कभी नहीं! दुष्ट मुझे प्रलोभन देकर फुसलाने आया है? तुम्हारी कृपा से प्राप्त जीवन को मैं ठोकर मारता हूँ!

जब आरबेसेसने देखा कि ग्लकास का लुप्त ज्ञान बहुत कुछ लौट आया है, तो उसने सोचा कि मेरे फुसलाने और परामर्श देने का कोई फल न होगा। वह चटपट उठकर वहाँ से चल दिया। निडिया तब भी वहीं पर सीढ़ी के एक कोने में सोयी पड़ी थी। जब उसे मालूम हुआ कि आरबेसेस बाहर जा रहा है, तो चटपट उसके पैरों को जकड़कर बोली—भिक्षुक महाराज! आप ग्लकास को बचाइये।

ग्लकास बोला—बालिका! मेरे साथ, मेरे घर पर आ। ग्लकास के छुटकारे के सम्बन्ध में मुझे तुझ से बहुत सी बातें करनी हैं।

निडिया ने कुछ क्षण तक इधर-उधर किया। फिर कहा—जो आज्ञा, चलती हूँ।

आरबेसेस मन ही मन बोला—इस बालिका का मुँह बन्द करना पड़ेगा। जिस ओषधि को खाकर ग्लकास पागल हुआ है, वह मेरी दी हुई है, इससम्बन्ध में केवल यही बालिका एक-मात्र साक्षी है। इसे फुसलाकर अपने घर के एक निर्जन कमरे में, जब तक विचार होगा, तब तक

क़ैद रखूँगा। आवश्यकता पड़ने पर इसकी हत्या भी करूँगा !

———

[२५]

फिर बहेलिये के जाल में

आइयोन, अपने मृत भाई की देह का अन्तिम संस्कारकर, शोक-सन्तप्त हृदय से, घर को वापस आ रही थी। रास्ते में उसकी आरबेसेस—उसके पूर्व अभिभावक—से मुलाक़ात हुई। आरबेसेस पैदलही आ रहा था। उसके पीछे आठ कहार, ओहार से ढकी हुई ख़ाली सवारी लिये, आ रहे थे। आइयोन को आता देखकर उन लोगों ने चलना बन्द कर दिया।

आरबेसेस आइयोन के पास जाकर विनीत स्वर में बोला—सुन्दरी आइयोन! मुझे बाध्य होकर असमय, अशिष्टता-पूर्वक, आम सड़क पर, तुम से बात करनी पड़ती है। मेरी ग़लती माफ़ करना। तुम इस समय भाई के मरने के असहनीय दुख से कातर और कर्त्तव्याकर्त्तव्य-ज्ञान से शून्य हो रही हो। तुम्हारे चारों ओर शत्रु हैं। जिसे तुम प्यार करती हो, उसी ने तुम्हारे भाई की निर्दयता-

पूर्वक हत्या की है। पीछे लोग, कहीं, इस .ख़ून के मामले में तुम्हारा भी हाथ रहा है, यह न कहने लगें, इसके लिए दयालु विचारक ने यह आदेश दिया है कि तुम इस .ख़ून के मामले के तै हो जाने तक स्वाधीनभाव से अपने मकान पर न रह सकोगी। मैं तुम्हारा अभिभावक हूँ। तुम्हें मेरे मकान पर चलकर कुछ दिनों तक रहना पड़ेगा। तुम्हें ले चलने के लिए मैं साथ में सवारी ले आया हूँ।

गर्व्व से सिर ऊँचा करके, आइयोन ने, कड़ककर कहा—बर्ब्बर मिश्री राक्षस! मेरे सामने से दूर हट जा! तुम्हीं ने मेरे भाई की हत्या की है, यह बात मैं अच्छी तरह से जानती हूँ। धन्य हैं विचारक! बलिहारी जाती हूँ फ़ौजदार की बुद्धि पर! खानेवाले पर खाद्य-सामग्री की रक्षा का भार! चोर के हाथ में घर की रखवाली का भार! ऐसा सुन्दर प्रबन्ध जिसने किया है, उसे गिनकर मैं सात झाड़ू. मारूँगी!

आरबेसेस एक कान से आइयोन की गाली सुनने लगा और दूसरे कान से उसे बाहर जाने देने लगा। क्रोध से उसका सिर से पैर तक जलने लगा। वह किसी प्रकार आत्म-संयम करके बोला—सुनो आइयोन! अत्यन्त अधिक शोक के कारण तुम्हारा दिमाग़ ख़राब हो गया है। मैं तुम्हारा अभिभावक हूँ। आम सड़क पर मेरे लिए इस प्रकार कटुवाक्य का प्रयोग करना क्या तुम्हें उचित है?

मैं अपनी इच्छा से तुम्हें अपने मकान पर नहीं ले जा रहा हूँ। फ़ौजदार के हुक्म के मुताबिक, मुझे बाध्य होकर, यह काम करना पड़ रहा है। अगर तुम अपने मन से मेरे साथ न चलोगी, तो कहार बल-प्रयोग करने से भी पैर पीछे न रखेंगे। क्या तुम क़ानून को भी अमान्य करना चाहती हो?

सहसा आइयोन के मुँह के भाव में एक प्रकार का अनैसर्गिक परिवर्तन दिखाई पड़ा। उसके मुँह का गम्भीर शान्त और सुन्दर भाव क्षण भर में जाता रहा। वह पागल की तरह विकट हँसी हँसकर बोली—क्या ही सुन्दर क़ानून है! ओ हो!

आइयोन यह कहकर उच्च कण्ठ से हँस उठी।

आरबेसेस ने सोचा कि आइयोन पागल का स्वाँग कर रही है। उसे बल-पूर्वक शिविका में चढ़ाने के लिए शिविका उसके निकट ले गया। आइयोन एक विकट चीत्कारकर ज़मीन पर गिरकर बेहोश हो गयी!

आरबेसेस ने कहारों की सहायता से आइयोन को उसी मूर्च्छितावस्था में उठाकर शिविका में चढ़ा लिया। अब वह फुर्ती से अपने मकान को चल पड़ा।

[२६]

निडिया की चतुरता

आरबेसेस ने सोचा कि एपिसाइडिस की मैंने हत्या की है, इसका प्रत्यक्ष साक्षी कोई नहीं है। आइयोन केवल सन्देह पर निर्भरकर मुझे हत्याकारी प्रमाणित करने में किसी प्रकार भी समर्थ न होगी। दूसरी बात यह भी थी, पीछे से आइयोन कोई गड़बड़ न करे, इसके लिए आरबेसेस ने पहले ही से सतर्क हो, उसे अपने मकान में एक प्रकार से क़ैद कर लिया था। उसे मनमाना घूमने का रास्ता एक दम बन्द कर दिया था।

आरबेसेस के विरुद्ध एक और साधारण गवाह थी अन्धी निडिया। आरबेसेस के साथ षडयन्त्र करके, जुलिया, विसूवियस की योगिनी के यहाँ से, ग्लकास को खिलाने के लिए जो दवा लायी थी, इसे एक मात्र निडिया को छोड़कर और कोई नहीं जानता था। आरबेसेस ने निडिया को भी, अपने एक बन्द कमरे में, ताला बन्द करके छोड़ रखा था। सोसिया नामक एक होशियार पहरेदार रात-दिन उस घर के दरवाज़े पर बैठा रहता था।

निडिया भीतर से बहुत कुछ अनुनय-विनय करने लगी। फिर भी कोई आकर दरवाज़ा न खोल सका।

अन्त में वह घर के भीतर से .खूब ज़ोर से चिल्लाने लगी और बार-बार दरवाज़े को लात से मारने लगी।

सोसिया ने विरक्त हो दरवाज़ा खोलकर पूछा—क्यों फ़ज़ूल चिल्लाकर आसमान को सिर पर उठाये लेती है ? साफ़ बिछौने पर पड़ी क्यों नहीं रहती ? क्या तू समझती है कि चिल्लाने ही से बेलिवेदी से छुटकारा पा जायगी ?

निडिया ने पूछा—तुम्हारा मालिक कहाँ है ? उसने मुझे यहाँ पर लाकर, पिंजड़े की तरह, क्यों बन्द कर रखा है ? मैं ज़रा सी हवा के लिए मर रही हूँ। मुझे छोड़ दो।

सोसिया बोला — पगली औरत ! यदि तुम्हें छोड़ ही देना होता, तो नज़रबन्द क्यों कर रक्खा गया होता ? आरबेसेस का हुक्म बड़ा कड़ा है। एक बाल इधर-उधर नहीं हो सकता। तुम्हें इस दरवाज़े से बाहर एक क़दम भी रखने का हुक्म नहीं है। हाँ, भोजन, जल आदि वस्तुएँ जितनी चाहो, मैं ले आकर दे सकता हूँ।

निडिया ने कहा—भिक्षुक आरबेसेस जैसे आदमी का मुझे रोक रखने का उद्देश्य क्या है ?

सोसिया बोला—उसका उद्देश्य क्या है, इसे भला मैं क्योंकर जान सकता हूँ ! तो भी मेरा अनुमान है कि कल वे सुन्दरी आइयोन को इस मकान में ले आये हैं। जान पड़ता है, उसी की सेवा करने के लिए तुम्हें भी लाये हैं।

निडिया ने आश्चर्य से चकित होकर पूछा—क्या आइ-योन इसी मकान में है ? क्या उससे मेरी एक बार मुलाक़ात हो सकती है ?

सोसिया ने कहा—उसके महल में मक्खी तक के प्रवेश करने का हुक्म नहीं है। तुम और मैं तो दूर की बात है। ख़ैर, इन सब बातों को छोड़ो। ऐसे पागलपन का ख़्याल दिल में न लाओ। इसका कोई परिणाम न निकलेगा, बल्कि बातचीत करनी हो, तो मेरे साथ करो। मुँह बन्दकर चुपचाप बैठे-बैठे मेरा पेट भी फूल उठा है। तुम तो थेसाली की स्त्री हो। सुना है, थेसाली की स्त्रियाँ ज्योतिष जानती हैं। ज़रा गणना करके देखो तो, मेरा भाग्य इस समय कैसा है ? ऐसा ही चला जायगा, या कुछ अच्छे दिन लौटने की भी सम्भावना है ?

सोसिया की बात के भाव से निडिया ने समझ लिया कि हाथ दिखाना और जन्मपत्री की गणना कराना, बहुत से लोगों की तरह, इसमें भी एक प्रकार की दुर्बलता है। इसी कमज़ोरी के छेद से, उस पहरेदार के हृदय में प्रवेश करके, निडिया ने अपना उद्धार करने का मन ही मन इरादा किया।

वह बोली—गणना करना, हाथ देखना, भूत बुलाना आदि सब बातें मैं जानती हूँ। किन्तु अधिक रात गये बिना यह सम्भव नहीं और उनके आने पर उनकी सेवा

और पूजा करने की आवश्यकता होती है। सेवा से संतुष्ट कर लेने पर उनसे भूत, भविष्य, वर्तमान के सम्बन्ध में सब कुछ जाना जा सकता है।

सोसिया बोला—अच्छी बात है। उनकी सेवा के लिए किन-किन चीज़ों की आवश्यकता पड़ेगी? उन्हें बताओ, मैं ले आऊँ।

निडिया ने कहा—सबसे पहले आवश्यक होगा, मकान के भीतर आने के लिए, रात भर एक दरवाज़ा खोलकर, रास्ता साफ़ रखना। इसके सिवा भूतों के खाने के लिए कुछ फल वग़ैरह उस खुले दरवाज़े के एक बग़ल में सजाकर रखने होंगे। क्या तुम इतना कर सकोगे?

सोसिया कुछ चिन्तित होकर बोला—सदर-दरवाज़े को आजकल स्वयं भिक्षुक ही, अपने हाथ से, बन्द करते हैं। क्या बाग़ का दरवाज़ा खुला रखने से काम चल सकता है?

निडिया ने कहा—हाँ, चल सकता है।

सोसिया—भूतों को किस घर में बुलाया जायगा?

निडिया—इसी घर में।

सोसिया ने त्रस्त भाव से कहा—अरे बाप रे बाप! मैं तो ऐसी दशा में यहाँ पर ठहर न सकूँगा। भूत देखते ही मैं बेहोश हो जाऊँगा।

निडिया ने कहा—अगर तुम इतना डरते हो, तो एक

काम करो। खूब अच्छी तरह से आँखें मूँदकर बैठे रहना।

सोसिया—अच्छा, ऐसा ही करूंगा। आज ही रात को भूतों को बुलाया जाय। मैं अभी से जाकर दरवाज़ा खोल आता हूँ, और भूतों के खाने के लिए, दरवाजे के पास, पत्ते में, कुछ पके फल रख आता हूँ।

निडिया के कहने के मुताबिक़, बाग़ का दरवाज़ा खुला रखकर, सोसिया उसी समय निडिया के पास आया।

निडिया घर के बीचोबीच, ज़मीन पर आसन लगा कर, बैठ गई। अपने सामने सोसिया को बैठा लिया।

निडिया अपने सामने जल से भरा एक घड़ा रखकर, बुद-बुद करके, अपनी देशी भाषा में, कुछ मंत्र-सा पढ़ने लगी और उस घड़े के जल में फूल डुबोडुबोकर, सोसिया के शरीर पर, जल छिड़कने लगी।

विश्वास का ऐसा प्रभाव पड़ा कि कुछ देर के बाद ही, सोसिया को, उस घर में, मनुष्य के पैरों की आहट सी जान पड़ी। उसी समय बग़ीचे में सूखे पत्तों के खड़खड़ाने की आवाज़ सुनकर सोसिया यह समझने लगा मानो भूत ने निडिया की पूजा को स्वीकार कर लिया है। वह अभी आकर यहाँ उपस्थित होगा।

उसने डर के मारे अपने नेत्र बन्द कर लिये।

निडिया बोली—तुम इतने डरपोक हो, यह बात मैं पहले नहीं जानती थी। अगर जानती, तो भूत को न बुलाती। और मैंने जिस भूत को बुलाया था, उसने स्वयं आकर, एक भयंकर मूर्तिवाले भूत को भेज दिया है। उस भूत के चेहरे को देखते ही तुम बेहोश हो जाओगे!

सोसिया भय से काँपता हुआ बोला—तो क्या उपाय है?

निडिया, दिखावटी घबड़ाहट का भाव दिखाकर, बोली—बहुत मुश्किल है। इस भूत को लौट जाने के लिए कहने पर, सम्भव है, वह चिढ़ जाय और तुम्हारी गरदन दबाकर तुम्हारा ख़ून पीना आरम्भ कर दे!

निडिया की बात सुनकर सोसिया एकदम लड़के की तरह रो उठा!

निडिया चटपट उठकर उसके पास आकर बोली—चुप! चुप! मैं अभी एक उपाय करती हूँ। तुम चुपचाप बैठे रहो। तुम्हारे पाकेट में रूमाल है?

सोसिया ने भग्न स्वर में कहा—व-ह-है। रू-रू-माल का क्या-क्या-होगा?

निडिया ने कहा—तुम्हारी आँखें बन्द करूँगी और क्या होगा?

भीत-विह्वल स्वर में उसने कहा—हाँ, तो बाँध दो—ख़ूब कसकर बाँध दो; जिसमें ज़रा भी जगह न रहे।

निडिया ने सोसिया का रूमाल लेकर उसे दो-तीन बार भाँज दिया और उससे उसकी दोनों आँखों को अच्छी तरह से ढक दिया। फिर उसने सोसिया से कहा—देखो तो, इस समय कुछ देख तो नहीं रहे हो ?

सोसिया ने कहा—नहीं, कुछ नहीं।

निडिया ने कहा—अब चुपचाप बैठे रहो। हिलो-डुलो मत, और न बातचीत ही करो। भूत आना ही चाहता है !

सोसिया डर के मारे, जड़वत् हो, चुपचाप बैठ गया। निडिया धीरे-धीरे घर के कोने से, बहुत सावधानी से, उसकी लाठी ले, चुपके से पाँव रखती हुई, घर से बाहर हुई और बाहर से दरवाजे की साँकल दे, फुर्ती से, बाग़ में चली आयी।

उसने समझा था कि इतनी रात को बाग़ में कोई न होगा और दूसरों के बिना देखे ही भागकर चली जाऊँगी।

किन्तु बाग़ में प्रवेश करते ही डर के मारे उसका सारा शरीर सिहर उठा। उसने थोड़ी ही दूर पर दो आदमियों को धीरे-धीरे बातचीत करते सुना। उनमें से एक आदमी का कंठ-स्वर ठीक आरबेसेस का-सा था।

बाग़ की दूसरी ओर से घूमकर जाने पर एक और दरवाज़ा मिलेगा, निडिया यह जानती थी। उसी रास्ते से रात को आरबेसेस की काम-लालसा तृप्ति करनेवाली स्त्रियाँ लायी जाती थीं। निडिया घबड़ाकर उसी रास्ते से

चले जाने की गरज़ से, दरवाज़ा खुला है या नहीं, यह देखने को वहाँ गयी। उसने जाकर देखा कि उसमें बड़े-बड़े दो ताले लगे हुए हैं। अब दूसरा चारा न देखकर, अँधेरे में, एक झाड़ी की आड़ में, जाकर वह छिप रही।

उधर जब सोसिया ने समझा कि निडिया चालाकी से मुझे घर में बन्द करके भाग गयी, तो उसके क्रोध की सीमा न रही। वह चिल्लाकर किसी को पुकार भी न सकता था। बाद में उसी शब्द को सुनकर आरबेसेस ने जान लिया कि सोसिया को धोखा देकर निडिया भाग गयी।

---

[२७]

बन्दी कैलनस

उस दिन अँधेरी रात में, आरबेसेस के मकान से लगे हुए बड़े बगीचे के खुले हुए दरवाज़े से, वास्तव में किसी प्रेतात्मा ने आकर प्रवेश किया था या नहीं, कहा नहीं जा सकता। फिर भी एक नर-देह-धारी पिशाच ने उस रास्ते से होकर उस बग़ीचे में प्रवेश किया था, यह निश्चय है। वह और कोई नहीं, भिक्षुक आरबेसेस के सब प्रकार के पाप-कर्मों में सहायक—मिश्रीदेवी आइसिस का अन्यतम पुजारी—कैलनस था। वह आरबेसेस का अन्तरंग मित्र था।

वह उस दिन सुनसान रात को अपने मित्र से किसी गहरे मामले के सम्बन्ध में बातचीत करने के लिए आया था, किन्तु सदर दरवाज़ा खुला न देखकर खिड़की का दरवाज़ा खुला है या नहीं, देखने के लिए गया। दरवाज़ा खुला पाकर उसने उसमें प्रवेश किया। वह एकदम आरबेसेस के सोने के कमरे के पास जाकर दरवाज़ा खट-खटाने लगा। आरबेसेस स्वयं आ, दरवाज़ा खोलकर, बोला—कौन? कैलनस! इतनी रात को तुम कैसे चले?

कैलनस ने कहा—एक बहुत आवश्यक कार्य है।

आरबेसेस बोला—मेरा शरीर उस बीमारी के बाद से अभी तक पूरा स्वस्थ नहीं हुआ। चलो, बग़ीचे में हवा में टहलते-टहलते तुम्हारी बात सुनूँ।

कैलनस ने कहा—जैसी आपकी आज्ञा। वहीं चलिये।

दोनों मित्र बग़ीचे में अगल-बगल हो टहलने और बात-चीत करने लगे।

आरबेसेस बोला—कैसी सुन्दर चाँदनी रात है! आकाश में चन्द्रमा हँस रहे हैं, नक्षत्र मुस्करा रहे हैं! और वही हँसी की राशि, सहस्रों मुख से चूकर, खिले हुए हिना के गुच्छे के मुँह से हो सहस्रों धाराओं में बहती है।

कैलनस बोला—इस सौन्दर्य्य का उपभोग करने की सुविधा और शक्ति क्या सब में होती है? भिक्षुक आरबे-

सेस ! आप पर जगज्जननी आइसिस की अपार करुणा है। अगर उनकी कृपा न होती...... ।

आरबेसेस ने पूछा—अगर उनकी कृपा न होती, तो क्या होता कैलनस ?

कैलनस ने कहा—जो निर्दोषी है, वह ख़ून करने के अपराध में, हाजतमें, पड़ा-पड़ा मर रहा है और जो वास्तव में अपराधी है, वह अपने विशाल प्रासाद के सुन्दर बग़ीचे में बैठकर, रमणियों के साथ आनन्दोपभोग कर रहा है !

आरबेसेस के मुँह पर एक कुटिल हास्य-रेखा फूट उठी। उसने पूछा—तुम किसकी हत्या के सम्बन्ध में कह रहे हो, कैलनस ?

कैलनस ने मृदु स्वर में कहा—और किसकी ? एपिसाइडिस की।

आरबेसेस ने पूछा—एपिसाइडिस का हत्याकारी कौन है ?

कैलनस ने कहा—आप हैं, और कौन है ! आप मेरी बात यों ही न उड़ा दीजिये महाशय ! मैंने आड़ से सारी घटना अपनी आँखों देखी थी।

आरबेसेस ने कहा—मैंने समझ लिया, और इस समय इस बात को कहने के लिए तुम क्यों आये हो, यह बात भी मुझसे छिपी नहीं है।

कैलनस ने ख़ुशामद करते हुए कहा—आप भला क्यों न समझेंगे ! आप तो सर्व्वज्ञ ठहरे ।

आरबेसेस ने कहा—यह तो तुम समझते ही हो ! इस समय, दो दिन के लिए, ठहर जाओ । ग्लकास को प्राण-दण्ड की सज़ा हो जाने दो । इसके बाद मैं तुम्हें बड़ा आदमी बना दूँगा ।

कैलनस ने कहा—पहले से पेशगी दीजिये ।

आरबेसेस बोला—क्या दो दिन के लिए भी सब्र नहीं कर सकते ? पहले काम तो हो जाने दो ।

कैलनस ने कहा—काम हो जाने पर भला ग़रीब को कौन पूछता है ! भिक्षुक आरबेसेस ! क्या आप नहीं जानते कि ठठेरे-ठठेरे बदला नहीं होता ?

आरबेसेस कुछ देर तक ठहरकर, कुछ सोच-विचार करके, बोला—कैलनस, पेशगी कितना रुपया चाहते हो ?

कैलनस बोला—आरबेसेस की गर्दन का मूल्य बहुत ज़्यादा है ।

आरबेसेस ने कहा—मोल-तोल करने की आवश्यकता नहीं । चलो, मैं तुम्हें अपने गुप्त ख़जाने में ले चलता हूँ । वहाँ ढेर-की-ढेर मुहरें, हीरा, मोती पन्ने रक्खे हुए हैं । तुम जितना ले जाना चाहो, बाँधकर ले जाओ । क्यों कैलनस ! सन्तुष्ट हुए न ?

कैलनस ने कहा—मैं जानता हूँ, आप सदा दिल खोल-कर दान करते हैं। आप सदा से आश्रितों के पोषक हैं।

निडिया ने झाड़ी की आड़ से साफ़-साफ़ सुना कि दो आदमी इस प्रकार बातचीत करते हैं। उसने कण्ठ-स्वर से एक आदमी को पहचान लिया कि यह आरबेसेस है। दूसरा आदमी कौन है, यह अब तक भी वह नहीं समझ सकी थी।

"और कहाँ तक उतरेंगे आरबेसेस! देखता हूँ, इस सीढ़ी का अन्त ही नहीं होता। ओः कैसा अन्धकार है! कैसी दुर्गन्ध आ रही है!"

"और ज़्यादा दूर तक नहीं उतरना पड़ेगा कैलनस! इसी मोड़ पर घूमने पर मेरे खज़ाने में प्रवेश करने का रास्ता देख पाओगे।"

वे दोनों शीघ्र ही अँधेरी सीढ़ियों की श्रेणियों के अन्त में जाकर उपस्थित हुए। कैलनस ने देखा—सामने लोहे का एक छोटा सा किवाड़ है। उसमें बड़े-बड़े ताले लगे हुए हैं। उन तालों की विशेषता यह है कि उनमें चाबी लगाने का छेद बिलकुल नहीं है। कितने ही धातुओं के बनाये चक्र से वे ताले बनाये गये थे। ताले पर मिश्री भाषा में कुछ खुदा हुआ था। आरबेसेस, अपनी अँगुली से, एक बड़े हीरे की अँगूठी खोलकर, उस हीरे को ताले के पास ले गया। उसके पास हीरे के रखते ही वे

अक्षर स्पष्ट दिखाई पड़ने लगे। थोड़ी ही देर में उन चक्रों पर हाथ फेरने पर न जाने किस तरह से आरबेसेस ने तालों को खोल लिया।

दरवाज़ा खोलकर आरबेसेस ने उस ज़मीन के अन्दर के कमरे में प्रवेश किया। कैलनस उसके पीछे पीछे चला।

बज्र-गम्भीर स्वर में आरबेसेस ने कहा—देखो कैलनस! इस हत्याकाण्ड का रहस्य जिसमें किसी तरह भी प्रकट न हो जाय······।

कैलनस ने कहा—प्रकट होने की सम्भावना ही कहाँ है? जो प्रकाश कर सकता है, उसका तो आप मुँह ही बन्द कर रहे हैं।

एक विकट हास्य करके आरबेसेस ने कहा—निश्चय!

अब आरबेसेस ने यकायक अपने मज़बूत हाथों से, पीछे कैलनस की गर्दन पकड़कर, ऐसे ज़ोर का धक्का दिया कि कैलनस उस कमरे के ठीक बीच में जा गिरा!

आरबेसेस बोला—अब जन्म भर के लिए तुम्हारा मुँह बन्द हो गया!

यह कहकर आरबेसेस ने चटपट बाहर जा, दरवाज़ा बन्द कर, उसमें पहले की तरह ताला लगा दिया।

कैलनस घर के भीतर बिकट आर्तनाद करने लगा। पर बाहर कोई कुछ नहीं सुन सका।

जब आरबेसेस वहाँ से चला गया, तो निडिया आड़

से बाहर आ, बात क्या है, इसका पता लगाने और उसकी मुक्ति का कोई उपाय है या नहीं, यह सोचकर, अपनी प्रखर स्पर्श-शक्ति की सहायता से, उस गुप्त द्वार के पास जा पहुँची।

आरबेसेस और कैलनस में जो बातचीत हो रही थी, उसका जो कुछ अंश उसने सुना था, उससे उसने अच्छी तरह से समझ लिया था कि इस ख़ून के मिथ्या अपराध से ग्लकास को छुड़ाने के लिए कैलनस की गवाही मुख्य है।

वह धीरे-धीरे जाकर, कैलनस के जेलख़ाने की कोठरी के दरवाजे पर, कराघात करने लगी।

कैलनस ने भीतर से कहा—तुम कौन हो? मनुष्य हो या भूत? या यमराज के दूत? क्या अभागे कैलनस को लेने आये हो!

निडिया ने कहा—मैं निडिया हूँ। मुझसे कुछ कहने की आवश्यकता नहीं है। आड़ से मैंने सब कुछ सुना है।

कैलनस ने व्याकुल होकर कहा—तुम चाहे जो कोई हो, मुझे बचाओ। मैं अपना घर-द्वार बेंचकर तुम्हारे इस उपकार का ऋण चुकाऊँगा। मुझे बचाओ!

निडिया ने कहा—मैं तुम्हारा धन नहीं चाहती। मैं तुम्हारी ज़बान से एक बात चाहती हूँ। मैंने तुम लोगों की बातचीत से समझ लिया है कि तुम्हारी एक बात से

ग्लकास की जान बच सकती है। तुम वह बात हाकिम के पास चलकर कहो और निर्दोषी ग्लकास की रक्षा करो।

कैलनस ने कहा—लड़की! तुम निश्चिन्त रहो। मैं यहाँ से छुटकारा पाने पर, हाकिम के पास जाकर, सब कुछ साफ़-साफ़ कह दूँगा। निरपराध ग्लकास बच जायगा। धूर्त, मनुष्य की हत्या करनेवाला, विश्वासघाती, नारकी आरबेसेस बाघ के मुँह में जायगा! किन्तु हाय! मैं बाहर क्योंकर निकलूँ! दुष्ट की बात में पड़कर मैं कालकोठरी में पड़ गया हूँ।

निडिया ने कहा—जिस सर्वशक्तिमान ईश्वर की शक्ति मुझे यहाँ पर लायी है, वही शक्ति तुम्हें इस कारागार से छुड़ा देगी। तुम निडर रहो। मैं अभी जाकर तुम्हारे उद्धार का उपाय करती हूँ।

कैलनस बोला—बालिका! तुम्हें ज्यादा कुछ नहीं करना पड़ेगा। तुम अभी फ़ौजदार के पास जाकर ख़बर दो। उसे रास्ता दिखाकर ले आओ, जिसमें वह ताला तोड़कर घर में प्रवेश करे। ज़रा भी विलम्ब न करो। अगर मैं यहाँ पर, इसी दशा में, ज्यादा देर तक रहूँगा, तो अवश्य बेहोश हो जाऊँगा—हवा की कमी से निश्चय ही मर जाऊँगा! मेरी मृत्यु के साथ ही ग्लकास के जीवन की आशा भी जाती रहेगी।

निडिया ने कहा—मैं अभी जाकर फ़ौजदार को ख़बर देती हूँ।

निडिया फुर्ती से वहाँ से रवाना हो बग़ीचे के फाटक की तरफ़ बढ़ गयी।

---

[२८]

निष्फल प्रयत्न

एपिसाइडिस की हत्या के सम्बन्ध में आरबेसेस के विरुद्ध प्रधान साक्षी था, हत्या का प्रत्यक्ष देखनेवाला कैलनस। उसे जन्म-भर के लिए कालकोठरी में बन्द करके आरबेसेस बहुत कुछ निश्चिन्त हुआ। जिस समय पापी पाप के मार्ग में बेरोक-टोक बढ़ता हो, उस समय यदि कोई बाधा विपत्ति न आये, तो उसे अपने प्रबल भाग्य के ऊपर बड़ा विश्वास होता है। ठीक यही दशा आरबेसेस की थी।

कैलनस को जेल में बन्द करके आरबेसेस ने प्रसन्न-चित्त हो, अपने कमरे में प्रवेश किया। एक ताक़ पर क़तार की क़तार, नाना प्रकार की शराब और शरबतों से भरी हुई तरह-तरह की बोतलें सजी हुई थीं। आरबेसेस ने उस

में से एक बोतल लेकर, उसकी सुनहरी काग खोलकर, एक गिलास शरबत पिया।

बोतल को यथास्थान रखकर, आराम के साथ, रूमाल से मुँह पोंछते हुए, वह उस कमरे में गया, जिसमें उसने आइयोन को बन्द कर रक्खा था।

यद्यपि उस समय आधी रात बीत गयी थी, तब भी आइयोन को नींद नहीं आयी थी। वह बिछौने पर, गाल पर हाथ रखे, बैठी हुई, आकाश-पाताल सोच रही थी। अपने कमरे में आरबेसेस को बेवक्त आते देखकर, डर के मारे, उसकी अन्तरात्मा काँप उठी। इस समय वह बिलकुल मुर्दा जैसी हो रही थी। दुःसाहसी आरबेसेस भी उसके ऊपर किसी प्रकार का अत्याचार करने का साहस नहीं कर सकता था। स्त्री जब तक अपनी मानसिक शक्ति के ऊपर विश्वास रखती है, जब तक वह अपने आत्म-सम्मान की रक्षा करने के लिए स्थिर-संकल्प रहती है, तब तक किसकी ऐसी मजाल है जो उसके ऊपर किसी प्रकार का अत्याचार कर सके। चाहे वह पुरुष कितना ही दुर्दान्त, कितना ही पाशविक प्रकृति का, क्यों न हो।

आरबेसेस ने बहुत ही शिष्टता के साथ, धीरे-धीरे जाकर एक आसन पर बैठकर, बहुत ही मीठे स्वर में, आइयोन से कहा—आइयोन! रात बहुत बीत गयी है। अभी तक

तुम्हें नींद क्यों नहीं आई ? मैं जानता हूँ कि तुम व्यर्थ के सन्देह के कारण मेरे ऊपर नाराज़ हुई हो। तुम्हारे उस अन्यान्य क्रोध को शान्त करने के लिए यदि आवश्यकता पड़े, तो मैं अपने हृदय का सारा रक्त तुम्हारे पैरों पर गिरा सकता हूँ!

आइयोन ने बहुत ही शान्त और दीन भाव से कहा—भिक्षुक आरबेसेस! मैं तुम्हारा पैर पकड़ती हूँ, मेरे भाई को और मेरे वाक्‌दत्त स्वामी को, मुझे लौटा दो!

दुःख का भाव दिखाते हुए आरबेसेस बोला—आइयोन! तुम्हारा भाई जहाँ पर गया है, वहाँ से उसे लौटा ले आने की शक्ति मुझमें नहीं। तो भी तुम्हारे प्रेमी को बचाने का मैं शक्तिभर प्रयत्न करूँगा। हाँ आइयोन! तुम यह निश्चय रूप से जान लो कि तुम्हें सन्तुष्ट करने के लिए, यत्न से रक्षा किये हुए अपने प्रणय-वृक्ष के मूल में, कुठाराघात करने से भी मैं कुण्ठित नहीं हूँ। हे सुन्दरी! मैं तुम्हारे बिना अनुताप से मरा जाता हूँ! मुझे बचाओ।

आइयोन बोली—महात्मन्! ग्लकास को बचाओ। मैं तुम्हारे सारे बुरे कर्मों को भूलकर तुम्हें क्षमा कर दूँगी। परम शक्तिशाली आरबेसेस! लोगों का अनिष्ट करने की जितनी तुममें शक्ति है, भलाई करने की भी शक्ति तुममें उतनी ही है। अगर तुम सचमुच मुझे प्यार करते हो, यदि मानव-सुलभ दया का लेश-मात्र भी तुममें है, तो इस

अभागिनी के ऊपर प्रसन्न होओ। मेरे ग्लकास को बचाओ !

आरबेसेस बोला—आइयोन ! मैं अभी ग्लकास को बचा सकता हूँ। इतनी क्षमता मुझमें है। लेकिन इसके बदले मे तुम्हें भी मेरी एक बात रखनी पड़ेगी। क्या वह तुम्हें मंजूर है ?

आइयोन ने उत्सुकता-पूर्वक पूछा—कौन बात है, बोलो ?

धीरे-गम्भीर स्वर में आरबेसेस बोला—मुझसे तुम्हें ब्याह करना पड़ेगा।

फण उठाये हुए सर्पिणी की तरह, क्रोध से गर्जती हुई, आइयोन बोली—विवाह ! मनुष्य की हत्या करनेवाले ! धूर्त ! पाखंडी लम्पट ! तेरे मुँह में मैं लात मारती हूँ !

आरबेसेस हालत ख़राब देखकर वहाँ पर और अधिक देर तक न ठहरा। अपने कमरे में वापस आकर उसने एक नौकर को बुलाकर कहा—कलियास ! शीघ्र जाओ तो ; सोसिया से जाकर कहो कि अन्धी निडिया को वह किसी कारण से घर के बाहर होने वा किसी से बातचीत करने न दे। जाओ, शीघ्र जाओ।

नौकर ने उसी समय, जहाँ सोसिया पहरे पर नियुक्त था, वहीं जाकर देखा कि उसका आसन ख़ाली है। वह ऊँचे स्वर में सोसिया का नाम लेकर पुकारने लगा।

निडिया को जिस कमरे में बन्द करके रक्खा गया था, उसके भीतर से, मर्द के कंठ में, उत्तर आया—कौन? कलियास! आओ, बचाओ दादा! ईश्वर ने मेरी जान बचाई। आओ भाई!

कलियास बोला—भाई मैं देखता हूँ, रक्षक होकर तुम भक्षक बने हो! एकान्त पाकर, अन्धी मालिन को ले, दरवाज़ा बन्द करके, दोनों, मज़ा उड़ा रहे हो! अच्छा, जो मनमें आये, सो करो। लेकिन यह तो बताओ, बाहर की साँकल किसने बन्द की?

सोसिया बोला—जल्दी से आकर मेरे दरवाजे की साँकल तो खोलो। मैं अभी सब हाल कहता हूँ।

कलियास ने जाकर साँकल खोल दी। सोसिया को अकेले बाहर आते देखकर कलियास ने पूछा—क्यों भाई! फूलवाली को दिवाल में छेद करके बन्द कर दिया क्या? क्यों, उसे तो घर में देखता नहीं हूँ। उधर मालिक का कड़ा हुक्म है कि फूलवाली को एक क्षण के लिए भी आँखों से ओट न होने दो।

सोसिया ने रुआसा-सा होकर कहा—मुँहजली फूल-वाली ने तो मुझे ख़ूब धोखा दिया, मेरा सर्वनाश किया, कलियास!

कलियास ने समवेदना प्रकट करते हुए कहा—बहुतों ने मुझे भी धोखा दिया है। लेकिन मेरी क़िस्मत अच्छी

है कि सब विघ्न बाधाओं को पार करता जाता हूँ ।

सोसिया ने कहा—उसने मुझे ख़ूब बेवकूफ़ बनाया, मुझे एकदम कालकोठरी में बन्द करके भाग गयी !

कलियास ने पूछा—उसे भागे हुए कितनी देर हुई ?

सोसिया ने कहा—अधिक नहीं, एक घंटा हुआ होगा ।

कलियास बोला—तब तो ज़्यादा दूर नहीं गयी होगी । अंधी है, भागेगी ही कैसे ? भिक्षुक आरबेसेस के खप्पर में जब पड़ गयी है, तब यमराज भी उसे न बचायेंगे ।

सोसिया ने कहा—मैं उसे ढूंढ़कर, रात भर में, ही यहाँ ले आऊँगा । लेकिन कहीं आरबेसेस इधर न चले आयें ।

कलियास ने कहा—जहाँ तक मेरा अनुमान है, सबेरा होने के पहले वे इधर न आयेंगे । मैं जाकर अभी उन्हें बताता हूँ कि सब ठीक है ।

सोसिया ने कहा—हाँ दादा ! यही करो । मेरी जान बचाओ । मैं अभी ज़ाकर शहर के गली-कूचे में ढूँढ़कर, जहाँ भी पाऊँगा, उस अभागिन को खोजकर ले आता हूँ ।

सोसिया ने मन ही मन निडिया को ख़ूब गालियाँ देते हुए, उस कमरे से बाहर हो, बाग़ में प्रवेश किया ।

वह प्रत्येक झाड़ी के पास जा-जाकर ढूँढ़ने लगा कि कहीं पर निडिया छिपी हुई तो नहीं है।

ठीक उसी समय निडिया भी पिंजड़े में बन्द कैलनस के साथ बातचीतकर, सोसिया के खोले हुए बाग़ के रास्ते से भागने के उद्देश्य से, उसी तरफ़ को जा रही थी। दूर से सोसिया उसे देखकर उसके पास दौड़ता हुआ बाघ की तरह पहुँच गया। उसने उसकी गर्दन धर दबायी।

निडिया डर से चिल्ला उठी।

सोसिया बोला—अरी कल मुँही—अभागिन! क्या चालाकी खेलने के लिए तुझे और कोई नहीं मिला?

झूठ को सच के समान बना, पुरुषों की आँखों में धूल झोंक, अपने कार्य को सिद्ध करने की शक्ति जैसी स्त्रियों में होती है, वैसी किसी में नहीं होती। उनका यह जन्मगत संस्कार होता है। यदि ऐसा न होता, तो जीवन-संग्राम में, मर्दों के साथ प्रतियोगिता में, संसार में उनकी सत्ता अटूट क्योंकर रहती?

उसी रमणी-सुलभ कौशल का फ़ुर्ती से अवलम्बन कर निडिया ने कहा—तुम कैसे रूखे आदमी हो! दिल्लगी भी नहीं समझते! मैं अन्धी ठहरी—दिन में भी सीधा रास्ता नहीं चल सकती। और रात के अन्धकार में रास्ता पहचानकर मैं भाग जाऊँगी, इस बात पर क्या तुम्हें विश्वास होता है? मैं तुमसे ज़रा मज़ाक कर रही थी!

सोसिया निडिया की चातुरी पर भूल गया। वह बोला—अच्छा जो हुआ सो हुआ। मैं समझ गया, स्त्रियों की जाति बिना हँसी-मज़ाक किये नहीं मानती। अच्छा, अब चलो। आधी रात तो मसख़रे ही में बीत गयी। अब चलकर सोना चाहिये। कल तो जानवर का खेल है। सिंह के खाने के लिए आदमी ही नहीं मिलता था। भाग्य से वह भी मिल गया। सिंह का कुछ देर तक मुक़ाबला कर सके, ऐसा आदमी जब तक नहीं होता, तब तक जानवर के खेल में मज़ा नहीं आता। भाग्य से ग्लकास ने यह ख़ून किया!

निडिया चौंक उठी। उसने उत्सुकता के साथ सोसिया से पूछा—सोसिया, क्या मेरे साथ कुछ भलाई करोगे?

सोसिया ने कहा—कौन सी बात है, बताओ तो। क्या तुम्हें छोड़ दूँ? दिली ख़्वाहिश होने पर भी मैं ऐसा नहीं कर सकता। मैं मालिक का ख़रीदा हुआ ग़ुलाम हूँ।

निडिया ने कहा—इस घृणित गुलामी से छुटकारा पाने की तुम्हारी इच्छा नहीं होती, सोसिया!

सोसिया ने कहा—इच्छा क्यों नहीं होती? लेकिन इतना रुपया पाऊँ कहाँ से?

निडिया ने कहा—तुम्हारे छुटकारे के लिए कितने रुपये की आवश्यकता है?

सोसिया ने कहा—इस बात के कहने से लाभ ही

क्या ? इसके लिए बहुत रुपये की ज़रूरत है। एक हज़ार रुपये चाहिये। इन तीन वर्षों से इस दुष्ट विदेशी के पास नौकरी करके किसी तरह से तीन सौ रुपये जमा कर चुका हूँ। देखें, अगर ईश्वर की कृपा होगी, तो और पाँच-सात वर्ष में चेष्टा करके सात सौ रुपये और जमा कर लूँगा।

निडिया ने कहा—सोसिया, अगर तुम मेरी एक मामूली भलाई करो, तो तुम्हें इस ग़ुलामी से छुड़ाने के लिए जितने रुपये की आवश्यकता है, उतने रुपयों का मैं अभी इन्तज़ाम कर सकता हूँ। यह देखो, मेरे हाथों में एक जोड़ा जड़ाऊँ कंकण और गले में एक जड़ाऊ हार है। इन दोनों चीज़ों का मूल्य एक हज़ार रुपये से भी अधिक होगा। इन दोनों चीज़ों को तुम लो, और इसके बदले तुम मेरा एक काम कर दो। मैं यह नहीं कहती कि मुझे मुक्तकर तुम अपने सर पर बला लो। मैं तुम्हें एक चिट्ठी लिखकर दूँगी। तुम इसे लेजाकर ग्लकास के मित्र सलास्ट के हाथ में पहुँचा आओ।

सोसिया ने मनही मन कहा—हर्ज ही क्या है ? इसे घर में बन्द करके अच्छी तरह ताला लगाकर चल दूँगा। अगर केवल चिट्ठी भर पहुँचा देने से इतने रुपये मिल जाँय तो नुक़सान ही क्या है ? मगर कहीं आरबेसेस ने जान लिया ? परन्तु जानकर ही क्या करेगा ! मैं अभी उसके सर पर

हज़ार रुपये का तोड़ा पटक दूँगा और सलाम करके चलता बनूँगा।

उसने प्रकट में निडिया से कहा—यह काम तो बड़े ख़तरे का है। तो भी मैं तुम्हें प्यार करता हूँ, इसी से अपने को विपत्ति में डालकर तुम्हारा यह काम करना चाहता हूँ। हाँ, यह तो बतलाओ, तुम्हारा यह गहना लेने पर फिर पीछे से झगड़ा तो खड़ा न होगा ?

निडिया ने कहा—झगड़ा खड़ा क्यों होगा ? यह मेरी निजी चीज़ है। मैं जिसे चाहूँ, दे सकती हूँ। और मैं तुम्हें यह दे रही हूँ, इसे मैं किसी से बताऊँगी भी नहीं। फिर दूसरे लोग किस प्रकार जान सकेंगे ?

सोसिया ने मन में कहा—हाँ, यह ठीक है ! और आगे क्या होगा इसे लेकर तर्क-वितर्क करना मूर्ख का काम है। उसने निडिया को उसका हार और कंकण खोलने को कहा और घर से एक मोम की स्लेट और सुई के समान तेज़ स्टाइलास पेंसिल लाकर कहा—इस स्लेट पर अपना पत्र लिख दो। मैं अभी जाकर सलास्ट के पास पहुँचा आऊँगा।

निडिया ने एक भले धनी गृहस्थ के यहाँ जन्म लिया था। लड़कपन में उसके माता-पिता ने उसकी अंग-हीनता के अभाव को कुछ अंशों में दूर करने के अभिप्राय से, यथासाध्य चेष्टा करके, उसकी प्रखर स्पर्शशक्ति की

सहायता से, उसे अच्छी तरह पढ़ना-लिखना सिखाया था। निडिया ने स्लेट पर स्टाइलास से एक पत्र लिखकर, सादे कागजपर छापकर, उसके ऊपर गोला मुहर करके, कहा—देखो सोसिया! मैं अन्धी हूँ। मैं बिल्कुल तुम्हारी मुट्ठी में हूँ! अगर तुम मुझे धोखा दोगे, तो मैं तुम्हारा कुछ भी बिगाड़ नहीं सकती। यह सच है, लेकिन यह जान रखो सोसिया! मेरे एक ऐसे व्यक्ति हैं, जिनकी आँखों में तुम धूल झोंक नहीं सकते। अगर तुम मुझे धोखा दोगे, तो तुम जिन्दगी भर नरक में पड़े-पड़े सड़ा करोगे।

सोसिया ने नाक टेढ़ी करके कहा—छिः निडिया! मेरे चरित्र में छोटे-मोटे कुछ दोष नहीं हैं, यह तो मैं नहीं कह सकता। फिर भी विश्वास-घातकता! मैं ऐसे रास्ते से नहीं चलता। मैं अभी तुम्हारी चिट्ठी ले जाता हूँ। तुम निश्चिन्त मन से जाकर सोओ। मैं बाहर से तुम्हारे दरवाजे पर ताला बन्द किये देता हूँ।

सोसिया निडिया का पत्र लेकर बाहर चला गया। निडिया भी दरवाज़े का अरगला बन्दकर अपने बिछौने पर सो गयी। किन्तु उत्कण्ठा से उसे नींद नहीं आयी। उसने सारी रात जागकर काट दी!

[२९]

चिन्तित सलास्ट

प्रियमित्र ग्लकास को अदालत के विचार से अपराधी स्थिर किया गया है। कल उसे सिंह के पेट में डाल दिया जायगा। इस ख़बर को सुनकर सलास्ट शोक से विह्वल हो उठा। सलास्ट का यह नियम था कि वह जब कभी विपत्ति की छाया को दूर से देख पाता, उस समय वह नशे की मात्रा को इतना ज़्यादा कर देता थे कि चिल्लाने पर भी वह आँखें नहीं खोल सकता था। जब कभी वह कोई अप्रिय संवाद सुनता, उसी समय नाना प्रकार के भोज्य पदार्थों की राशि के तले उसे ढक देने की चेष्टा करता। आज वह सवेरे ही से बे-रोक-टोक माल चढ़ाता जाता है।

आधीरात बीत चली है, सलास्ट अपने एक समवयस्क दास को लेकर एकान्त में शराब पी रहा है। वह ख़ूब खाता जाता है, और बीच-बीच में, नशे के झोंक में, रो भी उठता है!

ज़ोर से रोते हुए, दोनों हाथों से आँसू पोंछकर, सलास्ट बोला—अहा! बेचारे ग्लकास! हाकिम का यह कैसा कठोर आदेश है! सिह की चाल उससे भी भयानक

है !……देखें, कुछ और पके हुए मांस दो। अच्छी तरह पका तो है, लेकिन शोरवा अच्छा नहीं है।……ओः—और नहीं सह जाता ! ग्लकास ! तुम कहाँ हो ?

दास ने एक शराब से भरा पात्र देकर कहा—इसे पहले ख़ाली तो कीजिये।

सलास्ट दास के हाथ से प्याला लेकर, उसे एक घूंट में ख़ाली करके, बोला—अहा ! कितना ठण्ढा है—कितना लज़ीज़ है !……ग्लकास बेचारा इस समय हाजत की बन्द कोठरी में सोया हुआ मकान की कड़ियाँ गिनता होगा ! देखो, इस बार मेरे सब नौकर-चाकरों को मनाकर देना कि उनमें से कोई भी जानवरों का खेल न देखने न जाय।

दास ने कहा—जी हाँ, कोई नहीं जायगा। एक प्याला और पीकर देखिये, शोक का आवेग कितना कम हो जाता है। इस प्याले को पीकर देखिये न, कितना स्वादिष्ट है !

सलास्ट बोला—ग्लकास की याद आते ही मुझे और कुछ अच्छा नहीं लगता। अच्छा, एक प्याला दो तो। देखूँ, कैसा है।

सोसिया ने, निडिया का पत्र लेकर, सलास्ट के मकान पर जा, नौकर के हाथ, उसके पास भेज दिया।

सलास्ट ने पूछा—इतनी रात को किसने पत्र भेजा है ? मुझे पत्र पढ़ने की इस समय फ़ुर्सत नहीं है।

नौकर ने कहा—पत्र किसने भेजा है, यह तो मैं नहीं बतला सकता। तौ भी हस्ताक्षर स्त्री का जान पड़ता है।

सलास्ट बोला—कैसी विपत्ति है! रात के वक्त भी मेरी जान नहीं बचती। जीभर अपने मित्र के लिए शोक करूँ, इसके लिए मौक़ा नहीं मिलता। स्त्री! क्या इस समय स्त्री को लेकर मौज करने का समय है! मेरे प्राणों से प्यारे मित्र ग्लकास को कल सिंह के मुख में—

एक प्रबल हिचकी से उसकी बात आधे रास्ते में ही अटक गयी।

दास ने कहा—यह चटनी तो ज़रा चखिये, जीभ से ज़रा सी चाटने से ही हिचकी बन्द हो जायगी।

दूसरे ही क्षण सलास्ट खो-खो करके क़ै करने लगा। वह नशा में बेहोश होकर आराम-कुर्सी पर पड़ा रहा। नौकरों ने उसे उठा लेजाकर बिछौने पर सुला दिया। निडिया की चिट्ठी बिना पढ़े ही मेज़ के ऊपर पड़ी रही!

---

[३०]

आरबेसेस की दुराशा

उषा के आगमन के साथ ही नगरी उल्लास से जग उठी। सदा से आनन्द-मग्न पम्पियाई का आज सर्वश्रेष्ठ पर्व है। आज जानवर के खेल का दिन है। रात से ही एक तरह की निस्तब्धता छा गयी है। दूर तक फैले हुए कम्पेनियर

के मैदान में कुहरे का परदा सा पड़ा हुआ है। खूब सबेरे उठकर जो मछुवे, मछली पकड़ने की डोंगी लेकर, समुद्र में बहुत दूरतक गये थे, वे समुद्र में एक अस्वाभाविक स्तब्धता का भाव देखकर, किसी प्राकृतिक विप्लव का आभास पा, चटपट किनारे को लौट आये। सड़क लोगों से भरी और विलासियों के हास-परिहास से मुखरित हो रही है। उसी जनता के बीच से, सड़क से होते हुए, एक वृद्धा स्त्री नगर में, एकान्त स्थित आरबेसेस के राज-महल के समान भवन की ओर फुर्ती से जा रही है। वह क़द में लम्बी, किन्तु कुबड़ी है। उसके चेहरे पर केवल हड्डी मात्र रह गई है। उसकी आँखें धँस गयी हैं। उसके शरीर के चाम सिकुड़े हुए और पीले हैं। रास्ते में उसने किसी की ओर दृष्टि न डाली और न किसी से बातचीत की। उसके डाइन के-से भयंकर चेहरे को देखकर सभी लोगों ने भयसे उसके लिए रास्ता छोड़ दिया। वह बराबर आरबेसेस के भवन के सदर फाटक पर जाकर पहुँची। वहाँ उसने उससे भेंट करने की इच्छा प्रकट की। आरबेसेस का प्रधान द्वारपाल निर्भीक चित्तवाला हब्शी तक उस आगन्तुक का भयंकर चेहरा देखकर भय से काँप उठा।

उसने जब भीतर जाकर आरबेसेस को खबर दी, ठीक उसी समय, आरबेसेस एक भयानक सपने को देखकर उठा था।

वह आँखें मींजते-मींजते द्वारपाल से बोला—कौन मुलाक़ात करने के लिए आया है ? उसे यहीं पर लाओ।

द्वारपाल शीघ्र जाकर उसी स्त्री को ले आया। रमणी ने आकर ज़मीन पर आरबेसेस को साष्टांग प्रणाम किया।

आरबेसेस कुछ देर तक विस्मित भाव से रमणी की ओर देखकर बोला—तुम कौन हो ?मनुष्य हो, या स्मशान की प्रेतिनी !

आगन्तुक ने अपना बेदाँतवाला भयंकर मुँह बाकर, एक विकट हँसी हँसकर, कहा—शक्तिमान हारमिस ! मुझे आप पहचानते नहीं ! दासी को इतनी जल्द भूल गये ! मैं विसूवियस की घाटी में रहनेवाली योगिनी हूँ।

गम्भीर स्वर में आरबेसेस ने पूछा—योगिनी ! मुझ से तुम्हें कौन सा काम है ?

योगिनी ने कहा—मैं आपको सावधान करने के लिए आई हूँ।

आरबेसेस ने कहा—किस विषय में ?

योगिनी ने कहा—गुरुदेव ! मेरी बात पर विश्वास कीजिये। इस हरे-भरे, लता-वृक्षों से शोभित, विसूवियस के अग्निगर्भजठर के भीतर गुप्त भाव से एक अत्यन्त भीषण विप्लवाग्नि प्रज्वलित हो रही है। पिछले दो तीन दिनोंसे पर्व्वतमाला बराबर काँप उठती है। घाटी में बादल के गरजने का सा भीषण गर्जन सुनाई पड़ता है।

चोटी का सिरा कटकर उसमें से लगातार गन्धक का धुँआ निकल रहा है। इन सबका तात्पर्य्य क्या है, आपको मालूम ही है। पृथ्वी पाप से पूर्ण हो गयी है। अगर आप भला चाहते हों, तो यहाँ से शीघ्र ही भाग चलिये। अब यहाँ पर निस्तार नहीं। गुरुदेव! मैं अच्छी तरह से जानती हूँ, पम्पियाई नगर का नाश अवश्यम्भावी है।

आरबेसेस बोला—मैंने भी बहुत कुछ इसी प्रकार का अनुमान किया था और बहुत जल्द इस घृणित स्थान को छोड़ने का इरादा कर लिया था। तुम्हारी बात से वह इरादा और भी पक्का हो गया। लो योगिनी, उस मेज़ के ऊपर जो बड़ा भारी सोने का पात्र देखती हो, वह तुम्हें पुरस्कार रूप में देता हूँ।

योगिनी ने जाकर मेज़ के ऊपर से सोने के बड़े पात्र को ले एक बार अच्छी तरह से घुमा फिराकर देखा। बाद में अपने फटे हुए आंचल में उसे लपेटकर वह बोली—तो मैं अब जाती हूँ। फिर भी मरने के बाद एक ही स्थान पर हम लोग मिलेंगे, इसमें कोई सन्देह नहीं।

योगिनी विकट हँसी हँसती हुई बांहर चली गयी।

आरबेसेस ने उसकी ओर ताककर रूखे स्वर में कहा—दूर होओ डायिन!

उसके चले जाने पर आरबेसेस ने अपने कृपा-पात्र सेवक कलियास को बुलाकर कहा—कलियास! पम्पियाई में

अब मुझे अच्छा नहीं लगता। आज से तीसरे दिन मैं अपने देश मिश्र को चलूँगा। तुम लोग तैयार हो जाओ, और मेरा असबाब वग़ैरह बाँधकर ठीक रक्खो।

कलियास ने कहा—इतनी जल्दी, अच्छा! आप का आदेश शिरोधार्य है। आप के अधीन रहनेवाली सुन्दरी आइयोन के बारे में क्या प्रबन्ध किया जाय?

कुछ मुस्कराकर आरबेसेस ने कहा—आइयोन मेरे साथ चलेगी। जाओ, अभी से माल-असबाब सँभालना आरम्भ करदो।

नौकर के चले जाने पर वह उदास चित्त होकर कमरे में टहलने और अपने मन ही मन कहने लगा—उस भयंकर विपत्ति आने के बाद से मैंने फिर कभी अपने भविष्य के सम्बन्ध में गणना करके नहीं देखा। मैं जानता हूँ कि मुझ पर जो ग्रह था, वह कट गया। मेरा भावी भाग्य आशा के स्निग्ध उज्वल प्रकाश से प्रकाशमान है। क्या घटनाएँ इसका आभास नहीं देती हैं? संशय! दूर होओ। मेरे जीवन के सर्वप्रधान लक्ष्य दो हैं—पहला एक बड़े भारी साम्राज्य का राज-मुकुट पहनना और दूसरा सुन्दरी आइयोन को प्राप्त करना!

---

[३१]

निडिया का पत्र

दूसरे दिन सलास्ट नशे में चूर रहने के कारण बहुत दिन चढ़ने तक सोता रहा। बीच में दो-तीन बार उसकी नींद टूटी थी, किन्तु वह केवल क्षण भर के लिए, जरा सा इधर-उधर करवटें लेकर फिर सो रहा। दोपहर से कुछ पहले उसका नशा कुछ कम हुआ, साथ ही उसकी नींद भी टूटी। उसका कृपापात्र एक तरुण क्रीतदास चार-पाई के बग़ल में बैठकर नींद टूटने के पहले ही से उसका पैर दबा रहा था।

सलास्ट ने उससे पूछा—जानवर का खेल क्या आरम्भ हो गया है?

दास ने उत्तर दिया—हाँ, उसे आरम्भ हुए बहुत देर हुई। क्या आपने भेरी की आवाज नहीं सुनी है?

सलास्ट ने कहा—नहीं, मैं गाढ़ी नींद में था। मेरे घर के नौकर-चाकरों में से कोई खेल देखने तो नहीं गया?

दास ने उत्तर दिया—नहीं! आपने मना कर दिया था न?

सलास्ट ने कहा—बहुत ठीक। जानवर का खेल, जानवर जाकर देखें। अहा! बेचारा ग्लकास! वह मेघ

पर एक चिट्ठी पड़ी हुई दिखाई पड़ती है। वह किसकी है ?

दास ने कहा—खूब याद आयी। इस चिट्ठी को लेकर कल रात में एक आदमी आया था। आप उस समय ज्यादा नशे में थे, इसीसे आपने उसे खोला न था। क्या खोलकर पढ़ूँ ? सुनियेगा ?

सलास्ट बोला—अच्छा! पढ़ो, सुनूँ तो क्या लिखा है ?

दास ने लिफ़ाफे का मुँह खोलकर देखा कि स्त्री के हाथ की लिखी हुई टूटी-फूटी लिखावट है—

परम माननीय सलास्ट की सेवा में—

महोदय,

मैं आपके परमप्रिय मित्र ग्लकास की आश्रिता निडिया हूँ। दुष्ट आरबेसेस ने मुझे धोखे से लाकर अपने सख्त पहरे में, एक कमरे में बन्द करके रक्खा है। आप पत्र पढ़ते ही फ़ौजदार को साथ ले आकर मेरा उद्धार कीजिये। नीच आरबेसेस ने एक और आदमी को भी इस मकान के दूसरे कमरे में बन्द करके रक्खा है। एपिसाइडिस का असली हत्या करनेवाला ग्लकास नहीं, दुराचारी आरबेसेस ही है। इस मामले का आँखों देखा गवाह यही आदमी है। समय रहते इस आदमी का उद्धार करने पर ग्लकास पर हत्या का जो मिथ्या कलंक लगाया गया है, वह दूर हो जायगा। आप लोगों को लेकर शीघ्र

ही आ, हम लोगों की रक्षा कीजिये। इस पत्र को पाने पर एक मूहूर्त का भी बिलम्ब न करें।

आपकी—

निडिया।

निडिया का पत्र सुनते ही सलास्ट चौंक उठा। उसने शीघ्र ही शैया छोड़ दी और नौकर को मुँह धोने और शरीर सँवारने के लिए आवश्यक सामग्री ले आने का हुक्म देकर दास से कहा—मैं अभी हाकिम के पास जाकर सारा हाल कह सुनाता हूँ। जान पड़ता है, अब भी ग्लकास को जानवर के मुँह में नहीं डाला गया है!

दास ने कहा—हाकिम पैनसा इस समय जानवर के खेल के मैदान में होंगे। वहाँ आरबेसेस भी अपने नौकरों के साथ खेल देखने के लिए गया है। अगर आप अभी पैनसा के पास जाकर आवेदन करेंगे तो चालाक आरबेसेस अपने सिर पर से दोष हटाने की काफ़ी कोशिश करेगा। इससे अच्छा तो यह है कि हम लोग अपने लोगों को लेकर आरबेसेस के मकान में जा, इन दोनों क़ैदियों को छुड़ा लायें। इसके बाद उन्हें साथ लेकर एकबारगी गवाह और प्रमाण सब कुछ लेकर हाकिम के पास पहुँच जाँय।

सलास्ट ने दास की बात का अनुमोदन किया। दोनों और लोगों को साथ लेकर आरबेसेस के मकान को चल पड़े।

[३२]

जानवर का खेल

खुले आसमान के नीचे एक अंडाकार चौड़ा आंगन है। वह चारो ओर से ऊँचे-ऊँचे मोटे लोहे के तार से घिरा हुआ है। दूर से ऐसा जान पड़ता है, मानो एक बड़े भारी थाल पर एक बड़ा तार का जालीदार ढक्कन रखा हुआ हो। इसी लोहे के पिंजड़े में जानवर का खेल दिखाया जायगा। साधारण दर्शकों के लिए, उस अण्डाकार पिंजड़े को घेर कर, गैलरी के आकार में सजी हुई कुर्सियाँ रखी गई हैं। इन गैलरियों के बीच-बीच में बड़े मंच है। उन पर महँगे साटन कमख़वाव के सुन्दर आसन हैं। ये मंच स्थानीय और दूर से आये हुए उन राजकुमारों और कुलीन परिवारवालों के लिए बने हुए हैं, जो एक घड़ी के लिए आँखें और मनकी तृप्ति के लिए पानी की तरह रुपये बहाने से बाज नहीं आते।

जानवर के खेल का अन्तिम दृश्य आरम्भ होनेवाला है। रंगभूमि के ऊपर बराबर मोटी तह में साफ़ बालू बिछा दी गयी है। राज़-दंड से दंडित बेचारे कुछ ज़्यादा देर तक जानवर के साथ जूझ सकें और दर्शकों का आमोद कुछ ज़्यादा देर तक क़ायम रहे, इसी लिए रंगभूमि इस प्रकार से बनाई गयी है। दर्शकों के लिए जो स्थान निश्चित

था, वह इस प्रकार भर गया था कि सुई के प्रवेश करने के लिए भी जगह न थी।

एक ऊँचे मंच पर प्रधान-प्रधान राजपुरुषों का आसन बिछा हुआ है। उस आसन के बीच में बैठे हैं—पैनसा।

पैनसा ने रंगभूमि के अध्यक्ष को पुकारकर कहा—इस बार सिंह को छोड़ दो और एथेनियन ग्लकास को पिंजड़े में बन्द कर दो।

रुपये में बारह आने पम्पियाई के लोगों ने इसके पहले सिंह नहीं देखा था। सभी उत्कंठित हो रंगभूमि की ओर देखने लगे।

सिंह आफ्रिका के जंगल से अभी हाल ही में पकड़ कर लाया गया था। खेल आरम्भ होने के बीस दिन पहले ही से उसे कुछ भी भोजन नहीं दिया गया था, जिससे खेल के दिन वह पूरी मात्रा में भूखा और क्रुद्ध हो जाय। आज न जाने क्यों, सबेरे ही से सिंह अत्यन्त चंचलता का भाव दिखा रहा था, बीच-बीच में बड़े जोरों से गर्ज उठता था। सिंह को रंगभूमि में छोड़ते ही अपने को मुक्त हुआ समझकर उसने आनन्द से दो-चार बार छलांग भरकर देखा कि उसे छोड़ा नहीं गया है, बल्कि एक छोटे से पिंजड़े से एक बड़े भारी पिंजड़े में लाकर छोड़ दिया गया है। तब वह बादल की तरह गर्जते हुए अयाल को फुलाकर, रंगभूमि के ठीक बीच में पंजा गड़ाकर बैठ गया और

बीच-बीच में मुँह बाकर अपने चारों ओर के बैठे हुए लोगों को आँखें फाड़-फाड़कर देखने लगा। मनुष्य की गन्ध पाते ही उसकी जठराग्नि और भी तेज़ हो उठी! उसकी जीभ से टप-टप जल की बूँदे गिरने लगीं!

ग्लकास को लाकर रंगभूमि में छोड़ दिया गया। उसकी पेशीदार मज़बूत देह इस समय बिल्कुल खुली थी। वह केवल एक लँगोट पहने था। उसके हाथ में सुई के समान तेज़ एक छोटी सी लोहे की छड़ थी। क्षुधित सिंह के आक्रमण से आत्म-रक्षा करने का यही ग्लकास के पास एक मात्र अस्त्र था। ग्लकास उस छोटी सी छड़ को हाथ में लेकर निर्भीक हृदय से रंगस्थल में उतर पड़ा। मेरथन और थर्मापोली के रणक्षेत्र में जिन मुट्ठी भर वीरों का हृदय असंख्य शत्रुओं को ललकारने में तिलमात्र भी विचलित नहीं हुआ था, आज उन्हीं वीरों का वंशधर ग्लकास सम्मुख संग्राम में बिना हथियार लिये सिंह को क्या नहीं हरा सकेगा! उसने अपनी चमकती हुई दोनों आँखें उस हिंस्र दुर्दान्त कुपित सिंह की आखों पर गड़ाईं। उसके देह की प्रबल शक्ति ने वन के पशु तक पर क्षणभर में अपना आतंक जमा दिया। वह सिंह कुछ देर तक अनमना सा होकर सीखचे कर पंजा गड़ाये बैठा रहा। सामने शिकार पाकर भी उसने किसी प्रकार आक्रमण नहीं किया। दर्शक-मण्डली अपने आमोद में विघ्न पड़ता

देखकर उत्तेजित भाव से चिल्लाने और शोर करने लगी।

ऊपर मंच पर, बड़ी शान के साथ, बैठे हुए हाकिम पैनसा ने रंगभूमि के अध्यक्ष से बड़े ही गम्भीर स्वर में आदेश दिया—सिंह को ख़ूब खोंचे मारकर क्रुद्ध कर दो।

ठीक उसी समय रंगभूमि की दूसरी ओर के प्रवेश-द्वार परबहुत लोगों के कण्ठ से वादविवाद करने की आवाज़ सुन पड़ी। सलास्ट ने भिक्षुक आरबेसेस के मकान से .क़ैद-खाने में बन्द निडिया और कैलनस को छुड़ाकर दल-बल-सहित रंगभूमि में प्रवेश किया और दरवाज़े से ही ऊँचे स्वर में कहा—हाकिम पैनसा! ग्लकास निरपराध है। उसे छोड़ दीजिये। आरबेसेस ही एपिसाइडिस की हत्या करनेवाला है। उसे पकड़कर सिंह के मुँह में डाल दिया जाय!

हाकिम पैनसा ने ऊँचे मंच के आसन से उठकर कहा—सलास्ट! तुम क्या कह रहे हो! क्या तुम पागल तो नहीं हो गये हो?

सलास्ट ने कहा—नहीं पैनसा! मैं पागल नहीं हुआ हूँ। सच-सच कह रहा हूँ। एपिसाइडिस की हत्या दुष्ट आरबेसेस ने ही की है। उसका आँखों-देखा गवाह भी है। मैं गवाह को साथ में लाया हूँ।

पैनसा ने पूछा—कौन गवाह है?

सलास्ट ने कहा—आइसिस देवी के मन्दिर का प्रसिद्ध

पुजारी कैलनस ! उसने अपनी आँखों से आरबेसेस को .खून करते देखा था।

पम्पियाई के रहनेवाले ग्लकास को प्यार करते थे और आरबेसेस को घृणा और भय की दृष्टि से देखते थे। ग्लकास के प्राण-दण्ड से वे बहुत प्रसन्न थे, सो बात नहीं। फिर भी अपने उस बर्ब्बर आमोद की अग्नि में नरमांस की आहुति देने के लिए वे एकबारगी विक्षिप्त और चंचल हो उठे थे। वे एक स्वर से चिल्ला उठे—आरबेसेस को सिंह के मुँह में डाल दिया जाय।

उनकी बातें सुनकर आरबेसेस का निर्भीक हृदय भय से काँप उठा।

हाकिम पैनसा ने आरबेसेस से पूछा—आरबेसेस ! तुम्हारे विरुद्ध जो .खून का अपराध लगाया जा रहा है, इस सम्बन्ध में तुम्हें कुछ कहना है ?

चालाक आरबेसेस गम्भीर भाव से उठ खड़ा हुआ। सलास्ट और कैलनस की ओर एक अवज्ञा-भरी कुटिल दृष्टि डालकर स्पष्ट भाव से उसने कहा—हाकिम पैनसा ! भिक्षुक आरबेसेस के विरुद्ध यह हत्या का अभियोग बिल्कुल उपहासास्पद है। और मामले को खड़ा करने वाले हैं सलास्ट, जो ग्लकास के एक अन्तरंग मित्र हैं। मेरे विरुद्ध एक मात्र साक्षी है, मेरे ही मठ का एक पुरोहित, जिसकी अर्थ-गृद्धता को पम्पियाई नगर के सभी भद्र पुरुष

जानते हैं । उसकी बात कहाँ तक विश्वास करने योग्य है, इसे आपही विचार करके देखिये ।

हाकिम पैनसा ने सलास्ट की ओर ताककर पूछा—तुम लोग पुरोहित कैलनक को कहाँ से लाये हो ?

सलास्ट ने कहा—भिक्षुक आरबेसेस ने, अपने मकान के एक गुप्त कमरे में, ताला लगाकर, उसे बन्द करके रख छोड़ा था । मैं लोगों को लेजाकर, ताला तोड़, उसे बाहर निकाल लाया हूँ ।

पैनसा ने रुष्ट होकर कहा—क्या सभ्य रोमन-सम्राट-शासित राज्य में एक स्वाधीन मनुष्य को क़ैद करके रक्खा गया था ? इतनी बड़ी स्पर्द्धा ! कैलनस ! क्या तुमने अपनी आँखों आरबेसेस को पुरोहित एपिसाइडिस की हत्या करते देखा था ?

कैलनस ने उत्तर दिया—धर्मावतार ! मैं सारे देवताओं की साक्षी देकर मुक्त कण्ठ से कहता हूँ कि मैंने अपनी आँखों से आरबेसेस को हत्या करते देखा था ।

हाकिम पैनसा ने कहा—इस हत्या के सम्बन्ध में तुम्हारी ही गवाही काफ़ी है । मैंने ग्लकास को हत्या के अपराध से मुक्त किया । रंगाध्यक्ष ! एथेनियन ग्लकास को पिंजड़े से बाहर कर दो ।

इस हुक्म को सुनतेहीं उपस्थित मण्डली ने एक कण्ठ से आनन्द-ध्वनि की । ग्लकास को बाहर लाया गया ।

हाकिम पैनसा ने आज्ञा दी—भिक्षुक आरबेसेस को पकड़कर सिंह के मुँह में डाल दो।

जनता एक स्वर से चिल्ला उठी—आरबेसेस को सिंह के मुँह में डाल दो।

आरबेसेस उठ खड़ा हुआ और निराश और शोकित भाव से उस विक्षिप्त चंचल जनता की ओर एक बार देखने लगा। जनता के मुँहपर एक तीव्र रुधिर की प्यास दिखाई पड़ती थी।

आरबेसेस ने अपनी चौड़ी छाती फुलाकर, अकड़ते हुए, लम्बी बाँहों को ऊपर उठाकर, बादल के समान गम्भीर स्वर में, कहा—मूर्खो ! आँख खोलकर देखो, किस प्रकार जगन्माता आइसिस अपने भक्त की रक्षा करेगी ! उसने दूर पर धुँधली विसूवियस की चोटी की ओर देखकर वज्र के समान गम्भीर आवाज़ में कहा—उठो प्रलय देवता ! जागो। अपने मुँह से आग की वर्षा करके अभी, इस विलासिता में लिप्त, शूकरों के दल को, ध्वंस कर डालो।

जनता ने विस्मित भाव से मुग्ध नेत्रों से देखा कि विसूवियस के शृङ्गपर एक बड़े भारी देवदारु वृक्ष का आकार दिखाई पड़ता है। उस वृक्ष का आकार काले धुँएँ से बना हुआ जान पड़ता है। उसकी पत्तियाँ और डालियाँ जलते हुए अँगारे से बनी जान पड़ती हैं। सहसा एकही साथ सैकड़ों वज्र के निनाद से कान मानो बहरे हो

गये। भूगर्भ में से मेघ के गर्जने का-सा शब्द सुनाई पड़ने लगा। बड़े ज़ोरों की आँधी चलने लगी। विसूवियस की चोटी से लगातार गाढ़ा काला धुआँ निकलने लगा। साथ ही गली हुई धातु निकलने लगी। समुद्र का जल इतना ऊँचा उठने लगा कि किनारा डूबने लगा। जल में, स्थल में, आकाश में, चारों तरफ ध्वंस-प्रिय दानव अट्टहास्य करते हुए सृष्टि का संहार करने लगे।

जनता अपने प्रिय जानवर का खेल भूल गयी। वह अपनी जान बचाने के लिए अस्थिर हो उठी। जो जिधर से रास्ता पाता, उसी रास्ते से होकर अपने-अपने घरको चल देता।

वे भला कहाँ जायँगे—कहाँ भागेंगे ? सड़कों पर गली हुई धातु और आग का स्रोत बहने लगा। हवा से ढेर की ढेर गर्म राख उड़ने लगी। अट्टालिकाओं के काठ के बने छत धू-धू करके जलने लगे। उस जलती हुई अग्नि-कुण्ड में मनुष्य, गाय, भेड़ा, घोड़े, भैंसे आदि जीव जलकर भस्म होने लगे। और उनका आकुलचीत्कार विसूवियस के बिकट अग्निमय श्वास के साथ मिलने लगा !

उस प्रलयकाल के बीच, दोनों हाथों से लोगों की भीड़ को ठेलती हुई, ग्लकास के कण्ठ-स्वर को लक्ष्यकर, निडिया आकर उसके पास पहुँची, और उसके चरणों में लोटकर चिल्ला-चिल्लाकर रोती हुई बोली—स्वामिन् ! आपको

तो मैंने बचा लिया, मेरे जीवन की अभिलाषा पूरी हो गयी ! अब इस समय मुझे मरने दो ! इस समय मरने में भी मुझे बड़ा सुख मिलेगा !

ग्लकास ने निडिया का सिर चूमते हुए कहा—निडिया ! तुम्हींने मुझे बचाया है ! भगवान् ! तुम्हारी महिमा अपार है, तुम्हारी करुणा का अन्त नहीं ! निडिया ! निडिया चलो, आइयोन को ढूँढ़ें। क्या तुम बता सकती हो कि वह इस समय कहाँ पर, किस दशा में, है ?

निडिया ने कहा—हाँ ग्लकास, मैं उसी के सम्बन्ध में कहने के लिए ही तो दौड़ी हुई आपके पास आयी हूँ। दुष्ट आरबेसेस ने उसे अपने घर पर लेजाकर क़ैद करके रखा है। मुझे भी उस दुष्ट ने बन्द करके रक्खा था। मैं बहुत चालाकी से वहाँ से भाग निकली हूँ।

ग्लकास बोला—ये सब बातें पीछे सुनूँगा निडिया ! इस समय चलो, आइयोन को दुष्ट के हाथ से छुड़ा लायें। देख नहीं रही हो, चारों तरफ़ प्रलयाग्नि धधक रही है। हम लोग यहाँ पर और अधिक देर तक न ठहरेंगे। अभी तुमको और आइयोन को लेकर देश को चलेंगे। मेरा स्टीमर बन्दर के घाट पर लगा हुआ है।

ग्लकास और निडिया दोनों ऊर्ध्व-श्वास से दौड़ते हुए आरबेसेस के प्रासाद के दरवाजे पर पहुँचे। दरवाजा खुला था। आरबेसेस के नौकर-चाकर ऐसी सुविधा पाकर उसके

ख़जाने से रत्न आदि लूटकर जिस तरफ़ रास्ता पाते थे, उसी रास्ते से होकर भाग रहे थे। ग्लकास और निडिया ने उस घर में प्रवेश किया, इसकी तरफ़ किसी की दृष्टि नहीं गयी ; अथवा वे अपनी ही जान के पीछे इतने व्यस्त थे कि उन्होंने देखते हुए भी न देखा। ग्लकास और निडिया जिस समय आरबेसेस के महल में प्रवेशकर, कोठे पारकर, आइयोन के कमरे की ओर जा रहे थे, उस समय दो-तीन बार ज़ोरों से भूकम्प हुआ। बरामदे के पत्थर के मोटे खम्भे गिरने लगे, छत की कड़ियाँ चटकने लगीं। हवा में गर्म राख और गिरकर चूर्ण होती हुई इमारतों की धूलि-राशि मिलकर, ग्लकास के नाक-कान में प्रवेशकर, उसका श्वास बन्द कर रही थी। ग्लकास 'आइयोन आइयोन!' कहकर चिल्लाते हुए उस प्रासाद के एक कमरे से दूसरे कमरे को दौड़ने लगा; पर कहीं भी आइयोन को न देख सका। वह, हताश होकर और कहीं ढूँढेगा, यह सोच ही रहा था, इतने में अस्फुट कातर स्त्री के गले की चिल्लाहट सुनकर, उसी स्वर को लक्ष्यकर, उसी तरफ बढ़ा। जाकर उसने देखा कि एक कमरे के संगमरमर के बने हुए मेज़ पर आइयोन मूर्छित होकर पड़ी हुई है। ग्लकास ने झटपट जाकर उसे गोदी में उठा लिया और उर्द्ध्वश्वास से वहाँ से चल कर महल को पार किया। अभी उसने रास्ते में पैर ही रक्खा था कि सड़क के दूसरे छोर पर आरबेसेस की चम-

कीली पोशाक का कुछ अंश दिखाई पड़ा। देखते ही भय से वह काँप उठा। उस तरफ़ को न जाकर उसने बग़ल की एक सड़ी गली में प्रवेश किया।

ग्लकास और निडिया ने छिपकर भागने की चेष्टा अवश्य की, किन्तु आरबेसेस की गीध के समान दृष्टि से वे न बच सके। जिस प्रकार सिंह के मुँह का कौर छीन कर उसके भाग जाने पर सिंह क्रोधांध हो भागनेवाले का पीछा करता है: उसी प्रकार आरबेसेस भी ग्लकास को पकड़ने के लिए, हाथ में तलवार लेकर, उसके पीछे दौड़ा।

ग्लकास संज्ञाहीन आइयोन की देह दोनों हाथों से जकड़कर अपनी छाती में लगाये हुए भागा जा रहा था। आरबेसेस किसी प्रकार का बोझ लिये हुए न था। इसके सिवा प्रतिहिंसा ने उसे अत्यन्त उत्तेजित कर दिया था। आरबेसेस ने शीघ्र ही उसके पास पहुँचकर उसे पकड़ने का इरादा किया। ग्लकास दूसरा उपाय न देखकर व्याधा से मारे हुए मृग की तरह अधमरा-सा हो फिरकर खड़ा हो गया। आरबेसेस खुली हुई तलवार हाथ में लेकर क्रोध से दांत किटकिटाते हुए, उसके सामने खड़ा हो, कर्कश स्वर में बोला—चोर ! मेरी अनुपस्थिति तथा अनजान में मेरे घर में घुसकर मेरी आइयोन को चुराकर लिये जाता है ! अभी उसे लौटा दे। अगर ऐसा न करेगा तो यह नंगी तलवार तेरे कलेजे का ख़ून पियेगी !

ग्लकास चटपट आइयोन की संज्ञाहीन देह को, रास्ते के बग़ल में स्थित, एक मकान के खुले चबूतरे पर सुलाकर, ललकारते हुए बोला—आओ दुष्ट! देखूँ तुम्हारे शरीर में कितना बल है!

आरबेसेस तलवार उठाकर ग्लकास को मारने ही जा रहा था कि ठीक उसी समय बड़े ज़ोरों से बहता हुआ हवा का झोंका ढेर-की-ढेर गर्म राख उड़ाता हुआ आकर आरबेसेस के मुँह और कान पर पड़ गया। उस समय के ग्रीक युवक लड़कपन ही से नियम-पूर्वक जिमनेज़ियम में जाकर व्यायाम और मल्ल-युद्ध की शिक्षा पाते थे। ग्लकास भी इस विद्या में बड़ा ही पटु था। उसने आरबेसेस की क्षणिक असुविधा से लाभ उठाकर फ़ुर्ती से उसकी कलाई पर एक ऐसे ज़ोर का झटका दिया कि तलवार उसके हाथ से छूटकर दस-बारह हाथ की दूरी पर जागिरी। आरबेसेस दौड़कर अपनी तलवार ज्योंही उठाने को गया, त्योंही दिशाओं को आलोकित करता हुआ एक तीव्र आलोक जल उठा। साथ ही पृथ्वी भी डगमगा उठी। आरबेसेस के पास, रास्ते के बग़ल में, एक बहुत ऊँचा संगमरमर का बना स्मृति-स्तम्भ था। हवा से हिलाये हुए केले के पेड़ की तरह काँपते-काँपते, बहुत ज़ोरों की आवाज़ के साथ, एकबारगी उसके गिरते ही आरबेसेस जीते ही ज़मीन में गड़ गया!

ज्ञानी आरबेसेस ने कुछ समय पहले ग्रहों का योग

देखकर, अपने निजी भविष्य के सम्बन्ध में, जिस आपत्ति के आनेका आभास पाया था, वह अक्षर-अक्षर फलित हुआ। आरबेसेस की रहस्य-लीला यहीं समाप्त होगयी।

ग्लकास इस प्रकार काल के मुँह से बचने पर, हाथ जोड़ आकाश की ओर देखकर, भगवान के प्रति अपने हृदय की कृतज्ञता प्रकट करने लगा। इसके बाद दौड़-कर आइयोन को गोद में उठा करके भीड़ को ठेलते और उस प्रलयाग्नि से होते हुए, जिस घाट पर उसका स्टीमर बँधा था, उसी ओर को तेज़ी से बढ़ने लगा।

निडिया बराबर उसे रास्ता दिखाती हुई ले चली। आँधी, तूफ़ान, धूल आदि किसी बात ने भी उसकी गति में बाधा न दी। जनता से भरी शोर-गुलवाली सड़क से न होकर, वह गली से होकर, शीघ्र ही समुद्र के किनारे पर पहुँचा। ग्लकास, आइयोन और निडिया को लेकर उसी समय स्टीमर पर जाकर चढ़ गया। माँझी भी तैयार बैठे थे और उत्सुकता के साथ अपने स्वामी के आगमन की प्रतीक्षा करते थे। स्टीमर पर चढ़कर, उस विपत्ति-जनक भूमि को साष्टांग प्रणामकर, भगवान का नाम ले, उन्होंने स्टीमर खोल दिया।

[३३]

निडिया का अन्तिम परिणाम

दूसरे दिन ऊषा-सुन्दरी जब पूर्व दिशा के सोने के किवाड़ को खोल, धीरे-धीरे आ, दिग्मंडल को आलोकित कर दिक्-चक्रवाल पर आ खड़ी हुई; उस समय भूमध्य-सागर के निर्मल नील वक्ष पर, एक अनन्त शान्ति की छाया आकर पड़ गयी। अग्नि-गर्भवाले विसूवियस ने कुछ ही पहर में जिस विराट् ध्वंस की अवतारणा की थी, इस समय दूर से वह सब रंगभूमि पर अभिनीत अभिनय के समान दिखाई पड़ता था। विसूवियस की सबसे ऊँची चोटी, जिससे ढेर-का-ढेर धुँआ और लगातार गली हुई धातु वग़ैरह निकल रही थी, इस समय बुझी हुई आग और काली धूल से भरी हुई है। विसूवियस की तराई, जो पहले दाख के खेतों से हरी-भरी, शान्ति का निकेतन थी, इस समय ढेर-की-ढेर धूल में ढकी पड़ी थी। विलासिता की रंगभूमि पम्पियाई की नयनाभिराम सड़कें, जो पहले जनता के कोलाहल से मुखरित रहती थीं, इस समय बिल्कुल शान्त और निस्तब्ध हैं। चतुर शिल्पियों की बनायी हुई, भास्कर-कला के उच्च आदर्श का निदर्शन-स्वरूप, नगरी की विशाल संगमरमर की इमारतें

इस समय टूटे पत्थर और कंकड़ के स्तूप में परिणत हो गयी हैं !

भूमध्यसागर के प्रशान्त वक्ष में सफ़ेद पाल को उड़ाते हुए ग्लकास का सुन्दर स्टीमर राजहंस की तरह तैरता हुआ जा रहा था। समुद्र की बूँदों से सिक्त स्निग्ध वायु स्टीमर के पाल से लगकर उसे फुला देती है। रात भर अथक घोर परिश्रम के बाद, विपत्तिराशि को पीछे छोड़ आकर, मांझी निश्चिन्त मन से जिसकी जहाँ पर इच्छा है, वहीं पर पड़े सो रहे हैं। स्टीमर पर पहुँचने के कुछ ही देर के बाद।आइयोन होश में आगयी थी, किन्तु दुर्घटना के बाद दुर्घटना ने आकर उसकी सुकुमार देह और मन को एकबारगी क्लान्त बना दिया था। वह अवसन्न भाव से स्टीमर के एक सजे-सजाये कमरे में दुग्धफेन के समान शय्या पर गाढ़ी नींद में सोयी हुई थी। निडिया आइयोन के कमरे में एक कोच के ऊपर सोयी-सीपड़ी थी। ग्लकास स्टीमर के सामनेवाले डेक के ऊपर आइयोन के निकट पड़ा गहरी नींद में सो रहा था। स्टीमर अपने आप, धीरे-धीरे, पाल के सहारे, चल रहा था।

स्टीमर के माँझी और सवार जिस समय इस प्रकार बेख़बर सो रहे थे, उस समय केवल एक सवार की आँखों में नींद न थी। उसने सारी रात जागकर बिता दी थी। वह

और कोई नहीं, अन्धी निडिया है। स्निग्ध मधुर वायु के स्पर्श से जब उसने समझा कि उषा के आगमन में अधिक विलम्ब नहीं है, उस समय वह शय्या छोड़कर उठ बैठी। बहुत सावधानी से पाँव रखती हुई वह स्टीमर के उस भाग में गयी, जहाँ ग्लकास सो रहा था। धीरे-धीरे ग्लकास की शय्या के बग़ल में जा, जब उसने अपने श्रवणेन्द्रिय के सहारे, उसके श्वास-प्रश्वास के शब्द से ठीक तरह से समझ लिया कि वह गहरी नींद में सो रहा है, तब धीरे-धीरे उसके मुँह के पास अपना वह मुँह ले ले गई। ग्लकास के सुगन्धित श्वास-प्रश्वास के मत्त स्पर्श से निडिया का सारा शरीर उल्लास से सिहर उठा। वह चोर की तरह, अपराधिनी की नाईं, त्रस्त और शंकित भाव से, ग्लकास के निद्रा से अलसाये ललाट, अधरोष्ठ और कपोलों पर अजस्र चुम्बन अंकित करने लगी। अरी अभागिनी! तूने यह क्या किया? क्या तुझे मालूम नहीं कि प्रेम अद्वैत है? ग्लकास तो आइयोन का हो चुका है! उसके प्रणय की भिखारिणी बनना तेरे लिए, लँगड़े के पहाड़ लांघने के समान, पापी के स्वर्ग-कामना के समान, बहरे के संगीत रस के उपभोग के समान—बिल्कुल असम्भव और उपहास्य है।

जान पड़ता है, निडिया ने भी यह समझ लिया था। उसने यह भी समझा था कि उसकी जैसी अभागिनी

का जिन्दा रहने से मर जाना ही भला है।

बालिका के मुँह पर एक स्थिर-प्रतिज्ञा का चिन्ह है। न जाने क्या सोचती हुई वह धीरे-धीरे वहाँ से स्टीमर के अग्रभाग में पहुँची और वहाँ खड़ी होकर दोनों हाथ उठा कर मन ही मन बोली—"हे भगवन्! समस्त जीवन-भर प्रयत्न करने पर भी तुम्हारे स्नेह-प्रदत्त अपने इस तुच्छ जीवन का मूल्य क्या है, मैं अब तक नहीं समझ सकी। मैंने सुना है, जो आत्म-हत्या करते हैं, वे महापापी हैं। वे अनन्तकाल तक नरक में वास करते हैं। मेरे इस जीते जी नरक भोगने से, मरने के बाद, अनन्तकाल तक नरक में रहना क्या बहुत अच्छा नहीं है? ग्लकास! प्राण-वल्लभ!"

दूसरे ही क्षण एक बड़ी भारी चीज़ के गिरने का शब्द सुन पड़ा।

सबेरे नींद से उठकर ग्लकास और आइयोन ने निडिया को न देखकर स्टीमर का कोना-कोना छान डाला। उसका कहीं पता न चला। मल्लाहों से पूछा। वे लोग भी कुछ न बतला सके।

ग्लकास और आइयोन ने आँसू भरे नेत्रों से देखा कि उनके स्टीमर के चारों तरफ़, समुद्र के वक्ष में, जहाँ तक दृष्टि जाती है, ढेर-के-ढेर नाना प्रकार के फूल बहे जा रहे हैं!

निडिया फूलों को बहुत चाहती थी। इसीसे किसी अज्ञात हाथ ने अभागिनी की समाधि के ऊपर पुष्प-राशि बिखेर दी थी!

---

[३४]

ध्वंस के बाद

सृष्टि के आदि से जो विराट कालदेव अपना मुँह बाकर समभाव से विश्व-तट पर खड़े हैं, जिस विश्वोदर में क्षण-क्षण पर अनन्त कोटि जीव प्रवेश करते हैं, जिसका ब्रह्माण्ड प्रकाण्ड गठर में वेद-विद्या-प्रसविनी ज्ञान-विज्ञान की आदि भूता आर्य-सभ्यता, मिश्री सभ्यता, ग्रीक सभ्यता, रोमन सभ्यता ने एक-एक करके प्रवेश किया है, उसी शाश्वत पुरुष द्वारा प्रवर्तित लौकिक गणना में, पम्पियाई की इस दुर्घटना को घटित हुए आज सत्रह सौ वर्ष से भी अधिक समय हुआ। इतने समय में उस ध्वंसावशिष्ट के ऊपर तह-पर-तह मिट्टी इस प्रकार जम गयी थी कि ईसा की अठारवीं शताब्दी के पहले तक इतिहास के पन्नों के अतिरिक्त इस प्राचीन नगरी की सत्ता के सम्बन्ध में और कोई प्रमाण मौजूद न था।

पुरातत्व और स्थानीय जन-श्रुति के आधार पर सन्

१७५० ई० में पुरातत्वविदों की प्रबल चेष्टा और प्रचुर धन-व्यय से यह स्थान खोदा जाना आरम्भ हुआ। ऊपर की मिट्टी वग़ैरह को हटा देने पर इस समय नगरी का सारा अंश बाहर हो गया है। आश्चर्य की बात तो यह है इतने दिन तक ज़मीन पर गड़ी रहने पर भी इसकी अट्टालिकाओं की भीतों पर अंकित चित्रों का वर्ण और उनकी सजीवता जैसी की तैसी बनी हुई है। ऐसा जान पड़ता है, मानो वे कल ही के बने हैं। इस नगरी के मकानों की संगमरमर की बनी सफ़ेद मेज़ें उस समय जैसी थीं, वैसी ही अब भी हैं। दरबार की इमारत के खम्भों पर कारचोबी का काम करते-करते जहाँ छोड़ दिया गया है, वह इस समय भी उसी अवस्था में पड़ा है। विलासियों के उपवन के कमरों में सजाये हुए धूपाधार उस समय जैसे थे, वैसे आज भी हैं। नगर के मकानों के ख़ज़ाने की लोहे की सन्दूकें, स्नानागार के हौज़, नाच-घरों के टिकट बेंचने की जँगलेदार छोटी-छोटी कोठरियाँ, भोजन कर चुकने पर छोड़ दिये हुए भोजनागार एवं सर्वत्र बिखरी हुई अस्थियाँ और नर-शरीर उस समय जैसे थे, वैसे ही ठीक उसी अवस्था में अब भी हैं।

कृपणधनी डायोमेड के मकान में, एक घर के भीतर एक दरवाज़े के पास, एक ही स्थान पर, बीस नर-कंकाल पाये गये हैं। घरके बीच-बीच में जड़ाऊ गहने, रुपये-पैसे

झाड़-फानूस, दिवालगीर, बोतल में जमी हुई शराब, इस प्रकार की कितनी ही चीज़ें बिखरी पड़ी हैं। मृत शरीर के हाड़ों पर बालू और राख जमकर ठीक नर-कंकाल के आकार का हो गया है, मानों साँचे में ढालकर उन्हें गाड़ दिया गया है। एक घर के बीच में, एक सुन्दरी के स्थूल जंघे और वक्ष-स्थल पर, ऐसा ही बालू का ढांचा पाया गया है। पुरातत्वविदों का अनुमान है कि यह डायोमेड की कन्या जुलिया की देह का ढाँचा है।

इस उद्यान के एक कोने में एक कंकाल पाया गया है। इस कंकाल के हाथ की हड्डी-मात्र बची हुई अँगुली में चावियों एक गुच्छा है। उसके पास ही स्वर्णमुद्रा से भरा हुआ एक तोड़ा पड़ा पाया गया है। विद्वानों का अनुमान है कि यह कंकाल उस मकान के कृपण स्वामी डायोमेड का है।

सलास्ट और हाकिम पैनसा के मकान और मिश्र की देवी आइसिस का मन्दिर भी खोजकर बाहर किया गया है। इस मकान के एक छोटे कमरे में एक बड़ा भारी नर-कंकाल पाया गया है। उसके हाथ में एक बड़ी लोहे की तेज़ धारवाली कुल्हाड़ी है। उसके पास ही ढेर-की-ढेर मुहरें, सोने के बने तेजस पत्र और जड़ाऊ गहने पड़े हुए हैं। अनुमान होता है कि यह कंकाल अर्थलोलुप नर-पिशाच कैलनस का है।

आरबेसेस के मकान के पास ही एक संकीर्ण गली में एक नर-कंकाल पाया गया है। यह कंकाल दो टुकड़ों में है, जिससे अनुमान किया जाता है कि उस पर संगमरमर के एक खम्भे के गिर जाने से उसकी देह इस प्रकार दो हिस्सों में हो गई है। नरकंकाल की खोपड़ी इतनी बड़ी और सुन्दर गठन की है कि उसे देखकर संसार के सर्वश्रेष्ठ मस्तिष्क-वेत्ताओं ने एकमत हो, यह सिद्धान्त ठहराया है कि यह कंकाल जिसका है, वह एक असाधारण बलशाली और बुद्धिमान पुरुष होगा। जैसा अच्छे कर्म में होता है, वैसे ही बुरे कर्म में भी। उस युग में उसकी बराबरी का और कोई नहीं था। अनेक शताब्दियों के बाद, आज भी मिश्र देशवासी शिल्पियों के बनाये हुए आइसिस मंदिर के पौराणिक गृह दर्शकों की लोलुप दृष्टि को आकृष्ट करते हैं; जहाँ पर आरबेसेस ने एक दिन कितनी ही कल्पनायें की थीं, पाप किये थे, पुण्य किया था; सोचा-विचारा था और न जाने कितने स्वप्न देखे थे!

आजसे दो हज़ार वर्ष पहले दो घड़ी तक प्रकृति के कोप से जो भयानक ध्वंसकांड हुआ था, उसके अन्त में क्या रहा? यही कि पुण्य की जय और पाप का क्षय होना संसार का नियम है, स्वार्थ-त्याग ही जगत् की स्थिति है और प्रेम ही मनुष्य जाति का सर्वोत्तम कल्याण करनेवाला है।